



श्रमणी गणनायक प.पू. आ.श्री
अभयशेखरसूरीश्वरजी महाराजा के
५० वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में
सभी जैन श्वेताम्बर सराक भाई बहेनो
को समर्पित

বিষয় : দো প্রতিক্রমণ সূত্র

বিষয় : দো প্রতিক্রমণ সূত্র

প্রেরণা : প্রশান্ত মূর্তি, সুবিশাল গচ্ছাধিপতি
প. পূ. আ. শ্রী রাজেন্দ্রসূরীশ্বরজী ম.সা.

এবং

শ্রমণী গণনাযক, তার্কিক শিরোমণি
প. পূ. আ. শ্রী অভয়শেখরসূরীশ্বরজী ম.সা.

প্রেরণা : প্রশান্ত মূর্তি, সুবিশাল গচ্ছাধিপতি
প. পূ. আ. শ্রী রাজেন্দ্রসূরীশ্বরজী ম.সা.

এবং

শ্রমণী গণনাযক, তার্কিক শিরোমণি
প. পূ. আ. শ্রী অভয়শেখরসূরীশ্বরজী ম.সা.

প্রাপ্তিস্থান : মধুসূদন জী (বাথানবাড়ী), Mob. : 8637862585
মধুসূদন জী (বাথানবাড়ী)
হিতেশ ভাই বোরা (চাস), Mob. : 7979761900
হিতেশ ভাই বোরা (চাস)
প্রজেশ ভাই (কামারগোড়া), Mob. : 7602957763
প্রজেশ ভাই (কামারগোড়া)

ভাষান্তরিক সহযোগী :
মধুসূদন মাজী

ভাষান্তরিক সহযোগী :
মধুসূদন মাজী

প্রকাশক : শ্রী চাস-বোকারো জৈন শ্বেতাম্বর মূর্তিপূজক সংঘ
প্রকাশক : শ্রী চাস-বোকারো জৈন শ্বেতাম্বর মূর্তিপূজক সংঘ

মুদ্রণে : ডাটা পয়েন্ট

১, রামানন্দ লেন
কলকাতা-৭০০০০৬

মুদ্রণে : ডাটা পয়েন্ট

১, রামানন্দ লেন
কলকাতা-৭০০০০৬

ऋण स्वीकार

इस पुस्तक में हिन्दि सूत्र शासन प्रभावक
प.पू.आ. श्री मेघदर्शनसूरिजी म. सा. के
ज्ञानदीपक पुस्तक में से लिए गए हैं।
हम उनके ऋणी रहेंगे।

सूचना (सूचना)

- (1) जहा पर भी हसंत का प्रयोग किया है उन अक्षरो को ध्यान से पढ़े।
- (2) बंगाली सूत्रों में जहा पर 'ब' है उस अक्षर का उच्चारण हिन्दि के 'ब' जैसा करना है। और 'व' का उच्चारण हिंदि के 'व' जैसा करना है।
- (1) যেখানে হসন্তের প্রয়োগ করা হয়েছে সেই স্থানগুলো মনোযোগ সহকারে পড়তে হবে।
- (2) বাংলা সূত্রের যেখানে 'ব' এর প্রয়োগ হয়েছে সেখানে হিন্দির 'ब'-এর উচ্চারণ হবে। এবং 'ব'-এর উচ্চারণ হিন্দির 'व'-এর মতো হবে।

INDEX

सूत्रविभाग	पृष्ठा	सूत्रविभाग	पृष्ठा
श्री नवकार महामंत्र	10	जयवीरराय सूत्र	58
पंचिंदिय सूत्र	10	अरिहंत चेइयाणं सूत्र	60
इच्छामि खमासमणो सूत्र	12	कल्लाण कंदं सूत्र	66
इच्छकार सूत्र	12	संसार दावानल सूत्र	68
अब्भुट्ठिओ सूत्र	14	पुक्खवरवर-दीवङ्गे सूत्र	70
इरियावहियं सूत्र	22	सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र	72
तरस्सउत्तरी सूत्र	22	वेयावच्चगराणं सूत्र	72
अन्नत्थ सूत्र	24	भगवान्हं सूत्र	74
लोगस्स सूत्र	26	प्रतिक्रमण स्थापना सूत्र	74
करेमि भंते सूत्र	28	इच्छामि ठामि सूत्र	76
सामाइय वय जुत्तो सूत्र	30	नाणम्मि सूत्र	78
जगचिंतामणि सूत्र	46	सुगुरु वांदणा सूत्र	82
सकल कुशलवल्ली सूत्र	48	सात लाख सूत्र	84
जंकिंचि सूत्र	48	१८ पापस्थानक सूत्र	86
नमुत्थुणं सूत्र	50	वंदिच्चु सूत्र	88
जावंति चेईआई सूत्र	54	आयरिय उवज्झाए सूत्र	102
जावंत केवि साहू सूत्र	54	नमोस्तु वर्धमानाय सूत्र	104
नमोर्हत् सूत्र	54	विशाल लोचन दलं सूत्र	104
उवसग्गहरं सूत्र	56	श्रुत देवता स्तुति	106

INDEX

সূত্র বিভাগ :	পৃষ্ঠা
শ্রী নবকার মহামন্ত্র	11
পঞ্চিণ্ডিয় সূত্র	11
ইচ্ছামি খমাসমণো সূত্র	13
ইচ্ছকার সূত্র	13
অব্ভুট্টিও সূত্র	15
ইরিয়াবহিয়ম্ সূত্র	23
তস্সউত্তরী সূত্র	23
অন্নথ সূত্র	25
লোগস্স সূত্র	27
করেমি ভন্তে সূত্র	29
সামাইয় বয় জুত্তো সূত্র	31
জগচিস্তামণি সূত্র	47
সকল কুশলবল্লী সূত্র	49
জংকিঞ্চি সূত্র	49
নমুখুণম্ সূত্র	51
জাবনতি চেঙ্গআঙ্গিম্ সূত্র	55
জাবন্ত কেবি সাহু সূত্র	55
নমোহঁত্ সূত্র	55
উবসগ্গহরম্ সূত্র	57

সূত্র বিভাগ :	পৃষ্ঠা
জয়বীরায় সূত্র	59
অরিহন্ত চেইয়াণম্ সূত্র	61
কল্লাণ কন্দম্ সূত্র	67
সন্সার দাবানল সূত্র	69
পুক্খরবর-দীবড্ঢে সূত্র	71
সিদ্ধাণম্ বুদ্ধাণম্ সূত্র	73
বেয়াবচ্চগরাণম্ সূত্র	73
ভগবানহম্ সূত্র	75
প্রতিক্রমণ স্থাপনা সূত্র	75
ইচ্ছামি ঠামি সূত্র	77
নাগন্নি সূত্র	79
সুগুরু বান্দণা সূত্র	83
সাত লাখ সূত্র	85
১৮ পাপস্থানক সূত্র	87
বন্দিত্তু সূত্র	89
আয়রিয় উবজ্জাএ সূত্র	103
নমোস্তু বর্ধমানায় সূত্র	105
বিশাল লোচন দলম্ সূত্র	105
শ্রুত দেবতা স্তুতি	107

सूत्र विभाग

भवन देवता स्तुति	108
क्षेत्र देवता स्तुति	108
अड्ढाड्ज्जसु सूत्र	110
वर कनक स्तुति	110
लघु शांति सूत्र	112
चउक्कसाय सूत्र	118
भरहेसर सूत्र	120
मन्नह जिणाणं सूत्र	124
सकल तीर्थ सूत्र	126

पूजा विभाग

(1) स्तुति	18
(2) प्रदक्षिणा के दोहे	18
(3) अष्टप्रकारीपूजा के दोहे	20
(4) आरती मंगलदीपक	36
(5) नवांग पूजा के दोहे	38
(6) चैत्यवंदन विधि	64

विधि विभाग

(1) गुरुवंदन विधि	16
(2) सामायिक लेने की विधि	32
(3) सामायिक पारने की विधि	34

विधि विभाग

(4) देवसिय प्रतिक्रमण विधि	130
(5) राइय प्रतिक्रमण विधि	140
(6) श्री सीमंधर स्वामी के दोहे चैत्यवंदन-स्तवन-थुई	148
(7) श्री सिद्धाचलजी के दोहे चैत्यवंदन-स्तवन-थुई	152

भक्ति विभाग

(1) स्तुति	8
(2) स्तवन	160
(3) चैत्यवंदन	180
(4) थुई	186
(5) सज्झाय	190

अन्योपयोगी विभाग

(1) हे शारदे मां	44
(2) 24 भगवान के नाम लांछन-वर्ण	40
(3) ज्ञान के पांच दोहे	42

पच्चक्खाण विभाग

	156
--	-----

সূত্র বিভাগ :	পৃষ্ঠা	বিধি বিভাগ :	পৃষ্ঠা
ভবন দেবতা স্তুতি	109	(4) দেবসিয় প্রতিক্রমণ বিধি	131
ক্ষেত্র দেবতা স্তুতি	109	(5) রাইয় প্রতিক্রমণ বিধি	141
অড্‌চাইজ্‌জেসু সূত্র	111	(6) শ্রী সীমন্ধরস্বামীর দোহে চৈত্যবন্দন-স্তবন-থুঙ্গি	149
বর কনক স্তুতি	111	(7) শ্রী সিদ্ধাচলজীর দোহে চৈত্যবন্দন-স্তবন-থুঙ্গি	153
লঘু শান্তি সূত্র	113	ভক্তি বিভাগ :	
চউক্সায় সূত্র	119	(1) স্তুতি	9
ভরহেসর সূত্র	121	(2) স্তবন	161
মন্নহ জিণাণম্ সূত্র	125	(3) চৈত্যবন্দন	181
সকল তীর্থ সূত্র	127	(4) থুঙ্গি	187
পূজা বিভাগ :		(5) সজ্জায়	191
(1) স্তুতি	19	অন্যোপযোগী বিভাগ :	
(2) প্রদক্ষিণার দোহে	19	(1) হে শারদে মা	45
(3) অষ্টপ্রকারী পূজার দোহে	21	(2) ২৪ ভগবানের নাম লান্‌ছন-বর্ণ	41
(4) আরতী-মঙ্গলদীপক	37	(3) জ্ঞানের পাঁচ দোহে	43
(5) নবান্স পূজার দোহে	39	পাচক্‌খাণ বিভাগ :	157
(6) চৈত্যবন্দন বিধি	65		
বিধি বিভাগ :			
(1) গুরুবন্দন বিধি	17		
(2) সামায়িক নেবার বিধি	33		
(3) সামায়িক পূর্ণ করার বিধি	35		

प्रभु स्तुति

हे नाथ ! दो वो वीरता, तेरे धर्म को मे आशरु
हे नाथ ! दो वो शूरता, तेरे धर्म का पालन करु
हे नाथ ! दो वो धीरता, तेरे धर्म में रहे स्थिरता
हे नाथ ! शासन प्रेम मेरे, हृदय में धडके सदा । (१)

जिन धर्म की बलिहारी है, अचिंत्य महिमाशाली है
उपकारी ये जिन धर्म है, जिन धर्म ही हितकारी है
जिन धर्म ही सर्वस्व मेरा, मैं हु बस जिन धर्म का
हे नाथ ! शासन प्रेम मेरे, हृदय में धडके सदा । (२)

प्रभु आप ही मंगलकरा, प्रभु आप ही हो सुखकरा
प्रभु आप से संपत्ति सारी, आप ही हो हितकरा
प्रभु आपका मैं शरण लेता, जैसे बालक मात का
भक्ति करु हरपल तेरी, बस ये ही मुज मनोकामना । (३)

प्रभु आप ही जगदीश्वरा, प्रभु आप ही जगदेवता
प्रभु आप ही परमेश्वरा हो, आप ही हो दुःखहरा
प्रभु आप ही माता हो मेरी, आप ही मेरे पिता
भक्ति करु हरपल तेरी, बस ये ही मुज मनोकामना । (४)

প্রভু স্তুতি

হে নাথ! দো বো বীরতা, তেরে ধর্ম কো মে আশরু
হে নাথ! দো বো শূরতা, তেরে ধর্ম কা পালন করু
হে নাথ! দো বো ঘীরতা, তেরে ধর্ম মে রহে স্থিরতা
হে নাথ! শাসন প্রেম মেরে, হৃদয়মে ধউকে সদা..... (1)

জিন ধর্ম কী বলিহারী হৈ, অচিন্ত্য মহিমাশালী হৈ
উপকারী যে জিন ধর্ম হৈ, জিন ধর্ম হী হিতকারী হৈ
জিন ধর্ম হী সর্বস্ব মেরা, মে হু বস জিনধর্ম কা
হে নাথ! শাসন প্রেম মেরে, হৃদয়মে ধউকে সদা..... (2)

প্রভু আপ হী মংগলকরা, প্রভু আপ হী হো সুখকরা
প্রভু আপ সে সম্পত্তি সারী, আপ হী হো হিতকরা
প্রভু আপকা মে শরণ লেতা, জৈসে বালক মাত কা
ভক্তি করু হরপল তেরী, বস যে হী মুজ মনোকামনা..... (3)

প্রভু আপ হী জগদীশ্বর, প্রভু আপ হী জগদেবতা
প্রভু আপ হী পরমেশ্বর হো, আপ হী হো দুঃখহরা
প্রভু আপ হী মাতা হো মেরী, আপ হী মেরে পিতা
ভক্তি করু হরপল তেরী, বস যে হী মুজ মনোকামনা (4)

❀ नवकार मंत्र ❀

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्व-साहूणं
एसो पंच-नमुक्कारो
सव्व-पावप्-पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवई मंगलं ॥ १ ॥

❀ पंचिंदिय सूत्र ❀

पंचिंदिय - संवरणो,
तह नवविह - बंभचेर - गुत्ति - धरो ;
चउविह - कसाय - मुक्को,
इअ अट्टारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥
पंच - महव्वय - जुत्तो,
पंच विहायार - पालण - समत्थो ;
पंच - समिओ ति-गुत्तो,
छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥

নবকার যন্ত্র

নমো অরিহস্তাণম্,
নমো সিদ্ধাণম্,
নমো আয়রিয়াণম্,
নমো উবজ্জায়াণম্,
নমো লোএ সব্ব-সাহুণম্,
এসো পঞ্চ-নমুক্কারো,
সব্ব-পাবপ্-পণাসণো,
মংগলাণম্ চ সবেবসিম্,
পটমম্ হবঈ মংগলম্ ॥ ১ ॥

পঞ্চিন্দ্রিয় সূত্র

পঞ্চিন্দ্রিয় - সম্বরণো,
তহ নববিহ - ব্রহ্মচের - গুত্তি - ধরো,
চউবিহ - কসায় - মুক্কো
ইঅ অট্ঠারস গুণেহিম্ সন্জুত্তো ॥ ১ ॥
পঞ্চ - মহব্বয় - জুত্তো,
পঞ্চ বিহায়ার - পালণ - সমথো,
পঞ্চ - সমিও তি-গুত্তো,
ছত্তীস গুণো গুরু মজ্জা ॥ ২ ॥

❀ खमासमण सूत्र ❀

इच्छामि खमासमणो !
वंदिउं जावणिज्-जाए
निसीहि-आए, मत्थएण वंदामि ।। १ ।।

❀ इच्छकार सूत्र ❀

इच्छकार, सुहराई ? (सुह देवसि ?)
सुख तप ? शरीर निराबाध ?
सुख संजम - जात्रा निर्वहो छो जी ?
स्वामी शाता छे जी ?
भात-पाणीनो लाभ देजो जी ।। १ ।।

✧ খয়াসয়াণ সূত্র ✧

ইচ্ছামি খয়াসয়াণো !
বন্দিউম্ জাবণিজ্-জাএ,
নিসীহি-আএ, মথএণ বন্দামি ॥ ১ ॥

✧ ইচ্ছকার সূত্র ✧

ইচ্ছকার সুহরাঈ ? (সুহ দেবসি ?)
সুখ তপ ? শরীর নিরাবাধ ?
সুখ-সন্জম জাত্রা নির্বহো ছো জী ?
স্বামী শাতা ছে জী ?
ভাত - পাণীনো লাভ দেজো জী ॥ ১ ॥

❁ अढुडुओ सूतुर ❁

इछुओओरेण संधिसह डगवन् !
अडु-डुटु-ठुओ डु, अडु-डुनुतर
रुइअं (देवसुअं) सुवडेउं ?
इछुं, सुवडेडु रुइअं (देवसुअं) ॥ १ ॥

ऑं कुंडु अडतुतुअं-डरडतुतुअं;
डतुते-डरणे-वुणए-वेडुववतुते
आलुवे-संलुवे, उतुतुव-सणे सुडुडु-सणे
अंतर-डुसुए उवरु-डुसुए ॥ २ ॥

ऑं कुंडु डऑऑ वुणड डरुहुणं
सुहुडं वु डुडरं वु
तुडुडे ऑणह, अहं न ऑणुडुडु,
तरुस डुछुडु डु दुवुकुडं ॥ ३ ॥

❀ অৰ্দ্ধট্টিও মূত্র ❀

ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্!
অব্-ভুট্-টিও মি, অব্ভিন্তর
রাইঅম্ (দেবসিঅম্) খামেউম্?
ইচ্ছম্, খামেমি রাইঅম্ (দেবসিঅম্) ॥ ১ ॥

জং কিঞ্চি অপত্তিঅম্ - পরপত্তিঅম্
ভন্তে - পাণে - বিণএ - বেয়াবচে
আলাবে-সন্লাবে, উচ্চা-সণে সমা-সণে
অন্তর - ভাসাএ উবরি-ভাসাএ ॥ ২ ॥

জং কিঞ্চি মজ্বা বিণয় পরিহীণম্
সুহমম্ বা বায়রম্ বা
তুব্ভে জাণহ, অহম্ ন জাণামি
তস্স মিচ্ছামি দুক্কডম্ ॥ ৩ ॥

❀ गुरुवंदन की विधि ❀

(यदि गुरु भगवंत प्रत्यक्ष न हो तो उनके फोटो को वंदन करें।)

→ सर्वप्रथम 'दो खमासमण' देवें।

→ इसके बाद खड़े रहकर दोनों हाथ जोड़कर 'इच्छकार' सूत्र कहें। यदि गुरु महाराज पदवी धारी (आचार्य, उपाध्याय अथवा पंन्यास) है तो पुनः एक खमासमण देवें।

→ तत्पश्चात् 'अब्भुदुठिओ मि' सूत्र बोले जिसमें। 'जंकिंचि अपत्तिअं से मिच्छा मि दुक्कडं' तक का सूत्र दाहिने हाथ की हथेली चरवला पर स्थापित कर मुहपत्ति मुँह के पास रखकर बोले।

→ तत्पश्चात् खड़े होकर 'एक खमासमण' देवें।

→ अंतमें 'सुख शातामा साहेबजी' पुछना चाहिए।

গুরুবন্দন বিধি

(যদি গুরুজী কাছে না থাকে তাহলে ছবি দেখে বন্দন করবে।)

→ প্রথমে ‘দুটি খমাসমণ’ দিতে হবে।

→ তারপর দাঁড়িয়ে হাতজোড় করে ‘ইচ্ছকার’ সূত্র বলতে হবে। যদি গুরু মহারাজ পদবীধারী (আচার্য, উপাধ্যায় অথবা পন্ড্যাস) হন তাহলে আরেকবার খমাসমণ দিতে হবে।

→ তারপরে ‘অব্ভুট্ঠিও মি’ সূত্র বলতে হবে। ‘জং কিঞ্চিৎ থেকে মিচ্ছা মি দুক্কড়ম্’ পর্যন্ত সূত্র ডান হাত চরবলার উপর রেখে বাঁ হাতে মুহপত্তি মুখের পাশে রেখে বলতে হবে।

→ এখন দাঁড়িয়ে একটি ‘খমাসমণ’ দিতে হবে।

→ অন্তে ‘সুখ শাতামা সাহেবজী’ এমন জিজ্ঞাসা করতে হয়।

❀ प्रभु स्तुति ❀

- हे प्रभु! आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बने
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बने ॥१॥
- प्रेम से हम गुरुजनो की, नित्य ही सेवा करे,
सत्य बोले झुठ त्यागे मेल आपस में करे।
निन्दा किसी की हम किसीसे भुलकर भी ना करे
धैर्य बुद्धि मन लगाकर, वीर गुण गाया करे ॥१॥

❀ प्रदक्षिणा के दोहे ❀

काल अनादि अनंत थी, भव-भ्रमण नो नहीं पार
ते भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा दऊ त्रण वार... ॥ १ ॥

भमतीमा भमता थका, भव भावठ दूर पलाय
दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय... ॥ २ ॥

दर्शन-ज्ञान-चारित्र अ, रत्नत्रयी निरधार
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भवदुःख भंजनहार... ॥ ३ ॥

❀ প্রভু স্তুতি ❀

- হে প্রভু ! আনন্দদাতা জ্ঞান হমকো দীজিএ
শীঘ্র সারে দুর্গুণো কো, দূর হমসে কীজিএ ।
লীজিএ হমকো শরণ মে, হম সদাচারী বনে
ব্রহ্মচারী ধর্মরক্ষক, বীর ব্রতধারী বনে ॥১॥
- প্রেম সে হম গুরুজনো কী, নিত্য হী সেবা করে,
সত্য বোলে ঝুঠ ত্যাগে মেল আপস মে করে ।
নিন্দা কিসী কী হম কিসীসে ভুলকর ভী না করে
ধৈর্য্য বুদ্ধি মন লগাকর, বীর গুণ গায়া করে ॥১॥

❀ প্রদক্ষিণার দোহে ❀

কাল অনাদি অনন্ত থী, ভব-ভ্রমণ নো নহী পার
তে ভ্রমণ নিবারবা, প্রদক্ষিণা দউ ত্রণবার ॥১॥

ভমতীমা ভমতা থকা, ভব ভাবঠ দূর পলায়
দর্শন জ্ঞান চারিত্র রূপ, প্রদক্ষিণা ত্রণ দেবায় ॥২॥

দর্শন জ্ঞান চারিত্র এ রত্নত্রয়ী নিরধার
ত্রণ প্রদক্ষিণা তে কারণে, ভবদুঃখ ভন্জনহার ॥৩॥

❀ अष्टप्रकारी पूजा के दोहे ❀

- जल पूजा : जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश,
जल पूजा फल मुज हजो, मांगो अेम प्रभु पास ।
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परमेश्वराय,
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय,
श्रीमते जिनेन्द्राय जलं (चंदनं, पुष्पं आदि)
यजामहे स्वाहा (२७ बार डंका बजावे ।)
- चंदन पूजा : शीतल गुण जेमा रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग,
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग ।
- पुष्प पूजा : सुरभि अखण्ड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप,
सुम जंतु भव्य ज परे, करीअे समकित छाप ।
- धूप पूजा : ध्यान घटा प्रगटाविअे, वाम नयन जिन धूप,
मिच्छत दुर्गन्ध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरूप ।
- दीपक पूजा : द्रव्य दीपक सुविवेकथी, करता दुःख होय फोक,
भाव प्रदीप प्रकट हुए, भासित लोकालोक ।
- अक्षत पूजा : शुद्ध अखण्ड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाल,
पूरी प्रभु सम्मुख रहो, टाली सकल जंजाल ।
- नैवेद्य पूजा : अणहारी पद में कर्या, विग्गह गइय अनंत,
दूर करी ते दीजिए, अणाहारी शिव संत ।
- फल पूजा : इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग,
पुरुषोत्तम पूजी करी, मांगे शिवफल त्याग ।

❀ অষ্ট প্রকারী পূজার দোহে ❀

- জল পূজা :** জলপূজা জুগতে করো, মেল অনাদি বিনাশ,
জলপূজা ফল মুজ হজো, মাংগো এম প্রভু পাস ।
ওঁ হ্রীঁ শ্রীঁ পরমপুরুষায়, পরমেশ্বরায়,
জন্ম-জরা-মৃত্যু নিবারণায়,
শ্রীমতে জিনেন্দ্রায় জলম্ (চন্দনম্, পুষ্পম্ আদি)
য়জামহে স্বাহা (২৭ বার ডংকা বাজাবে ।)
- চন্দন পূজা :** শীতল গুণ জে মা রহয়ো, শীতল প্রভু মুখ রংগ
আত্ম শীতল করবা ভণী পূজো অরিহা অংগ ।
- পুষ্প পূজা :** সুরভী অখণ্ড কুসুম গ্রহী, পূজো গত সন্তাপ
সুম জন্তু ভব্য জ পরে, করীএ সমকিত ছাপ ।
- ধূপ পূজা :** ধ্যান ঘটা প্রগটা বিএ, বাম নয়ন জিন ধূপ,
মিচ্ছন্ত দুর্গন্ধ দুরে টলে, প্রগটে আত্ম-স্বরূপ ।
- দীপক পূজা :** দ্রব্য দীপক সুবিবেকথী, করতা দুঃখ হোয় ফোক,
ভাব প্রদীপ প্রগট হএ ভাসিত লোকালোক ।
- অক্ষত পূজা :** শুদ্ধ অখণ্ড অক্ষত গ্রহী, নন্দাবর্ত বিশাল,
পূরী প্রভু সম্মুখ রহো, টালী সকল জন্জাল ।
- নৈবেদ্য পূজা :** অণহারী পদ মে কর্যা, বিগ্নহ গইয় অনন্ত
দূর করি তে দীজিএ অনাহারী শিব সন্ত ।
- ফল পূজা :** ইন্দ্রাদিক পূজা ভণী, ফল লাবে ধরী রাগ,
পুরুষোত্তম পূজী করী, মাংগে শিব ফল ত্যাগ ।

❀ इरियावहियं सूत्र ❀

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
इरिया-वहियं पडिक्-कमामि ?
इच्छं, इच्छामि पडिक्-कमिउं ।। १ ।।
इरिया-वहियाए, विराहणाए ।। २ ।।
गमणा-गमणे ।। ३ ।।
पाणक्-कमणे, बीयक्-कमणे, हरियक्-कमणे
ओसा-उत्तिंग-पणग दगमट्-टी
मक्-कडा संताणा, संकमणे ।। ४ ।।
जे मे जीवा विराहिया ।। ५ ।।
एगिंदिया, बेइंदिया,
तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ।। ६ ।।
अभि-हया, वत्तिया, लेसिया,
संघाइया, संघट्-टिया,
परिया-विया, किला-मिया, उद्-द-विया,
ठाणाओ ठाणं संकामिया
जीवियाओ ववरो-विया
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।। ७ ।।

❀ तस्स उत्तरी सूत्र ❀

तस्स-उत्तरी करणेणं, पायच्-छित्त-करणेणं,
विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं
पावाणं कम्माणं निग्घा-यणट्-ठाए,
ठामि काउस्सग्गं ।। १ ।।

❀ ইরিয়াবহিয়ম্ সূত্র ❀

ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্
ইরিয়া-বহিয়ম্ পডিক্-কমামি ?
ইচ্ছম্, ইচ্ছামি পডিক্-কমিউম্ ॥ ১ ॥
ইরিয়া-বহিয়াএ বিরাহণাএ ॥ ২ ॥
গমণা-গমণে ॥ ৩ ॥
পাণক্-কমণে, বিয়ক্-কমণে হরিয়ক্-কমণে
ওসা-উত্তিংগ পণগ দগমট্-টী।
মক্-কডা সন্তাণা সংকমণে ॥ ৪ ॥
জে মে জীবা বিরাহিয়া ॥ ৫ ॥
এগিন্দিয়া, বেইন্দিয়া,
তেইন্দিয়া চউরিন্দিয়া, পঞ্চিন্দিয়া ॥ ৬ ॥
অভি-হয়া, বত্তিয়া, লেসিয়া
সংঘাইয়া, সংঘট্-টিয়া,
পরিয়া-বিয়া, কিল্লা-মিয়া, উদ্-দ-বিয়া
ঠাণাও ঠাণম্ সংকামিয়া
জীবিয়াও ববরো-বিয়া
তস্স মিচ্ছা মি দুক্কডম্ ॥ ৭ ॥

❀ তস্স উত্তরী সূত্র ❀

তস্স উত্তরী-করণেণম্
পায়চ্-ছিত্ত-করণেণম্
বিসোহী-করণেণম্, বিসল্লী-করণেণম্
পাবাণম্ কস্মাণম্ নিগ্ঘা-য়ণট্-ঠাএ
ঠামি কাউস্সগ্গম্ ॥ ১ ॥

अन्नत्थ सूत्र

अन्नत्थ

ऊस-सिएणं, नीस-सिएणं,
खा-सिएणं, छी-एणं, जंभाई-एणं,
उड्-डु-एणं, वाय-निसग्-गेणं
भमलीए, पित्त-मुच्छाए ॥ १ ॥

सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं
सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं
सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं ॥ २ ॥

एवमाइ-एहिं आगारेहिं
अभग्गो अविराहिओ
हुज्ज मे काउरसग्गो ॥ ३ ॥

जाव-अरिहंताणं भगवंताणं
नमुक्कारेणं न पारेमि
ताव-कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं,
अप्पाणं वोसिरामि ॥ ४ ॥

অন্নথ সূত্র

অন্নথ

উস-সিএণম্, নীস-সিএণম্,
খা-সিএণম্, ছী-এণম্, জন্তাই-এণম্,
উড্ডু-এণম্, বায়নিসগ্-গেণম্,
ভমলীএ, পিত্ত-মুচ্ছাএ ॥ ১ ॥
সুহ-মেহিম্ অঙ্গ সন্চা-লেহিম্
সুহ-মেহিম্ খেল-সন্চা-লেহিম্
সুহ-মেহিম্ দিট্ঠি-সন্চা-লেহিম্ ॥ ২ ॥
এবমাই-এহিম্ আগারেহিম্
অভগ্নো অবিরাহিও
হজ্জ মে কাউস্সগ্নো ॥ ৩ ॥
জাব অরিহন্তাণম্ ভগবন্তাণম্
নমুক্কারেণম্ ন পারেমি
তাব কায়ম্ ঠাণেণম্, মোণেণম্, ঝাণেণম্
অপ্পাণম্ বোসিরামি ॥ ৪ ॥

❀ लोगस्स सूत्र ❀

लोगस्स उज्जोअ-गरे, धम्म-तित्थ-यरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणन्दणं च सुमइं च; पउमप्-पहं सुपासं, जिणं च चंदप्-पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्-फदंतं, सीअल सिज्-जंस वासुपुज्जं च; विमल-मणन्-तं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च;	वंदामि रिट्-ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला, पहीण-जर- मरणा; चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिअ-वंदिय-महिआ, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि-वर-मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्-चेसु अहियं पयासयरा; सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥
--	---

❀ ❀ ❀ লোগস্স সূত্র ❀ ❀ ❀

লোগস্স উজ্জোঅ-গরে	বন্দামি রিট্-ঠনেমিম্
ধন্ম-তিথ-য়রে জিণে	পাসম্ তহ বদ্ধমাণম্ চ ॥ ৪ ॥
অরিহন্তে কিত্তইস্সম্	এবম্ মএ অভি-থুআ
চউবীসম্পি কেবলী ॥ ১ ॥	বিহুয়-রয়-মলা,
উসভ-মজিঅম্ চ বন্দে	পহীণ-জর-মরণা
সম্ভব-মভিণন্-দণম্ চ সুমইম্ চ	চউবীসম্-পি জিণবরা
পউমপ্-পহম্ সু-পাসম্	তিথয়রা মে পসীয়ন্তু ॥ ৫ ॥
জিণম্ চ চন্দপ্-পহম্ বন্দে ॥ ২ ॥	কিত্তিয় বন্দিয় মহিআ
সুবিহিম্ চ পুপ্-ফদন্তম্	জে এ লোগস্স উত্তমা সিদ্ধা
সীঅল-সিদ্ধজন্স বাসু-পুজ্জম্ চ	আরুগ্গা বোহি লাভম্
বিমল-মণন্তম্ চ জিণম্	সমাহি-বর-মুত্তমম্ দিন্তু ॥ ৬ ॥
ধন্মম্ সন্তিম্ চ বন্দামি ॥ ৩ ॥	চন্দেসু নিম্মলয়রা
কুন্তুম্ অরম্ চ মল্লিম্	আইচ্-চেসু অহিয়ম্ পয়াসয়রা
বন্দে মুণি-সুব্বয়ম্ নমি জিণম্ চ	সাগর-বর-গম্ভীরা
	সিদ্ধা সিদ্ধিম্ মম দিসন্তু ॥ ৭ ॥

❁ करेमि भंते ! सूत्र ❁

करेमि भंते ! सामाइयं,
सावज्जं जोगं पच्-चक्-खामि;
जाव नियमं पज्जुवा-सामि,
दुविहं तिविहेणं,
मणेणं वायाए काएणं,
न करेमि न कारवेमि
तरस्स भंते ! पडिक्कमामि
निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ।। १ ।।

❀ કરેમિ ઢત્તે! સૂત્ર ❀

કરેમિ ઢત્તે ! સામૈયમ્
સાવજ્જમ્ જોગમ્ પચ્-ચક્-થામિ
જાવ નિયમમ્ પજ્જુવા-સામિ
દુવિહમ્ તિવિહેનમ્
મનેળમ્ વાયાએ કાએળમ્
ન કરેમિ ન કારવેમિ
તસ્સ ઢત્તે પડિક્કમામિ
નિન્દામિ ગરિહામિ અપ્પાળમ્ વોસિરામિ ॥ ૧ ॥

❁ सामाइय वय जुत्तो सूत्र ❁

सामाइय-वय-जुत्तो,
जाव मणे होइ नियम संजुत्तो,
छिन्नइ असुहं कम्मं,
सामाइय जत्तिया वारा ॥ १ ॥

सामाइ-अम्मि उ कए,
समणो इव सावओ हवइ जम्हा,
एएण कारणेणं,
बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ २ ॥

सामायिक विधिए लीधु,
विधिए पार्यु विधि करता जे कोइ
अविधि हुओ होय, ते सवि हु
मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ३ ॥

दस मनना, दस वचनना, बार कायाना,
ए बत्तीस दोष माहे जे कोई दोष लाग्यो होय,
ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी
मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ४ ॥

❀ সামাইয় বয় জুত্তো সূত্র ❀

সামাইয়-বয় জুত্তো
জাব মণে হোই নিয়ম সন্জুত্তো
ছিন্নই অসুহম্ কন্মম্
সামাইয় জত্তিয়া বারা ॥ ১ ॥

সামাই-অন্মি উ কএ
সমণো ইব সাবও হবই জম্হা
এএণ কারণেণম্
বহ্‌সো সামাইয়ম্ কুজ্জা ॥ ২ ॥

সামায়িক বিধিএ লীধু
বিধিএ পার্যু, বিধি করতা যে কোই
অবিধি হুও হোয়, তে সবি হু
মন বচন কায়াএ করী মিচ্ছামি দুক্কডম্ ॥ ৩ ॥

দস মননা, দস বচননা বার কায়ানা
এ বত্রীস দোষ মাহে যে কোই
দোষ লাগ্যো হোয় তে সবি হু
মন বচন কায়াএ করী মিচ্ছামি দুক্কডম্ ॥ ৪ ॥

❁ सामायिक लेने की विधि ❁

→ विधि : सबसे पहले स्थापनाचार्यजी के सामने दाहिना हाथ रखकर **नवकार** और **पंचिंदिय** सूत्र बोले ।

→ तत्पश्चात् स्वमासमण देकर **इरियावहियं, तस्स उत्तरी और अन्नत्थ** सूत्र बोलकर एक **लोगस्स** चंदेसु निम्मलयरा तक (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें ।

→ इसके बाद 'नमो अरिहंताणं' का उच्चारण करके कायोत्सर्ग पूर्ण करें, और प्रकट **लोगस्स** सूत्र कहें ।

→ तत्पश्चात् एक स्वमासमण देकर **इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुँहपत्ति पड़िलेहु?** 'इच्छं' बोलकर मुहपत्ति का पड़िलेहन करे ।

→ एक स्वमासमण देकर । **इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहु?** इच्छं

→ स्वमासमण देकर । **इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाऊ?** इच्छं..... (खड़े-खड़े दोनों हाथ जोड़कर एक नवकार गिनकर) **इच्छकारी भगवन्! पसायकरी सामायिक दण्डक उच्चरावोजी** कहें ।

→ मस्तक पर दोनों हाथ जोड़कर **करेमि भंते** सूत्र का उच्चारण करेंगे । स्वमासमण देकर

→ **इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे संदिसाहु?** इच्छं, दुसरी बार स्वमासमण देकर ।

→ **इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे ठाऊ?** इच्छं, स्वमासमणा देकर ।

→ **इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहु?** इच्छं, स्वमासमणा देकर ।

→ **इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करु?** इच्छं... सज्झाय मुद्रामे बैठकर दोनों हाथ जोड़कर ३ नवकार गिनें, और अब ४८ मिनट तक स्वाध्याय-जाप आदि करें ।

❀ সামায়ািক নেবার বিধি ❀

→ বিধি : প্রথমে স্থাপনাচার্যজীর সামনে ডানহাত রেখে নবকার ও পঞ্চিদিয় সূত্র বলতে হবে।

→ তারপর খমাসমণ দিয়ে ইরিয়াবহিয়ম্, তস্স উত্তরী, অন্নথ পর্যন্ত বলতে হবে। এক লোগস্স চন্দেসু নিম্নলয়রা পর্যন্ত (না জানা থাকে তাহলে চার নবকার এর) কাউস্সগ্ন করতে হবে।

→ তারপর ‘নমো অরিহস্তাগম্’ বলে লোগস্স সূত্র বলতে হবে।

→ খমাসমণ দিয়ে ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! সামায়ািক মুঁহপত্তী পডিলেহু? ইচ্ছম্ বলে মুহপত্তি পডিলেহন করে।

→ এক খমাসমণ দিয়ে ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! সামায়ািক সন্দিসাহু? ইচ্ছম্.....

→ খমাসমণ দিয়ে ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! সামায়ািক ঠাউ? ইচ্ছম্ (দাঁড়িয়ে হাতজোড় করে এক নবকার) ইচ্ছকারী ভগবন্ পসায়করী সামায়ািক দন্ডক উচ্চরারোজী।

→ এই বলে মাথার উপর দু’হাত জোড় করে করেমি ভন্তে সূত্র বলতে হবে। খমাসমণ দিয়ে—

→ ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! বেসণে সন্দিসাহু? ‘ইচ্ছম্’ বলে খমাসমণ দিয়ে।

→ ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! বেসণে ঠাউ? ইচ্ছম্ খমাসমণ দিয়ে।

→ ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! সজ্জায় সন্দিসাহু? ইচ্ছম্ খমাসমণ দিয়ে।

→ ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! সজ্জায় করু? ইচ্ছম্ বলে সজ্জায় মুদ্রাতে বসে তিন নবকার বলতে হবে। এরপর ৪৮ মিনিট স্বাধ্যায়-জাপআদি করতে হবে।

❁ सामायिक पारने की विधि ❁

→ सबसे पहले खमासमण देकर **इरियावहियं, तस्सउत्तरी, अन्नत्थ**, सूत्र बोलकर एक लोगस्स चंदेसु निमलयरा तक (न जानते हो तो चार नवकार का) काउस्सग्ग करे 'नमो अरिहन्ताणम् बोलकर पूर्ण लोगस्स का पाठ करे।

→ तत्पश्चात् खमासमण देकर, '**इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! मुँहपत्ति पड़िलेहु?** 'इच्छं', मुँहपत्ति का पड़िलेहन करें।

→ इसके पश्चात् खमासमण देकर '**इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारू?**' 'यथाशक्ति' कहकर एक खमासमण देकर '**इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारियु**' 'तहत्ति'।

→ चरवले पर दाहिना हाथ रखकर, बाए हाथ में मुहपत्ति मुख के पास रखकर, **नवकार** तथा **सामाइय वय जुत्तो** सूत्र बोलें।

→ इसके बाद स्थापनाचार्यजी के सामने दाहिना हाथ उल्टा करके एक **नवकार** का पाठ करे। **अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कडं** बोले।

❀ সামায়িক পূর্ণ করার বিধি ❀

→ খমাসমণ দিয়ে ইরিয়াবহিয়ম্, তস্সউত্তরী, অন্তথ সূত্র বলে। এক লোগস্স চন্দেসু নিম্নলয়রা পর্যন্ত (না জানা থাকলে চার নবকার) কাউস্সগ্ন করতে হবে। “নমো অরিহস্তাণম্” বলে পুণরায় লোগস্স সূত্র বলতে হবে।

→ খমাসমণ দিয়ে ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্! মুহপত্তী পডিলেহু? ইচ্ছম্ বলে মুহপত্তীর পডিলেহন করতে হবে।

→ খমাসমণ দিয়ে ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্! সামায়িক পারু? “য়থাশক্তি” বলে খমাসমণ দিয়ে ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্! সামায়িক পারিয়ু? তহত্তি বলে।

→ তারপর ডানহাত চরবলার উপর রেখে বাঁ হাতে মুহপত্তী মুখের পাশে রেখে এক নবকার এবং সামাইয় বয় জুত্তো সূত্র বলতে হবে।

→ এরপর স্থাপনাচার্যজীর সামনে ডানহাত উল্টো করে এক নবকার বলতে হবে। তারপর অবিধি আশাতনা মিচ্ছামি দুক্কডম্ বলে।

आरती

- जय जय आरती आदि जिणंदा,
नाभिराया मरुदेवी को नंदा
→ पहेली आरती पूजा कीजे,
नरभव पामी ने लाहो लीजे... जय जय ।। १ ।।
→ दूसरी आरती दीनदयाला,
धुलेवा मंडपमा जग अजुवाला... जय जय ।। २ ।।
→ तीसरी आरती त्रिभुवन देवा,
सुर नर इन्द्र करे तोरी सेवा... जय जय ।। ३ ।।
→ चौथी आरती चउगति चूरे,
मनवांछित फल शिवसुख पूरे... जय जय ।। ४ ।।
→ पंचमी आरती पुण्य उपाया,
मूलचंदे ऋषभ गुण गाया... जय जय ।। ५ ।।

मंगल दीपक

- दीवो रे दीवो प्रभु मंगलिक दीवो,
आरती ऊतारण बहु चिरंजीवो... दीवो रे... ।। १ ।।
→ सोहामणु घेर पर्व दीवाली,
अंबर खेले अमराबाली... दीवो रे... ।। २ ।।
→ दीपाल भणे एणे कुल अजुवाली,
भावे भगते विघन निवारी... दीवो रे... ।। ३ ।।
→ दीपाल भणे एणे ए कलिकाले,
आरती उतारी राजा कुमारपाले... दीवो रे... ।। ४ ।।
→ अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक,
मंगलिक चतुर्विध संघने होजो... दीवो रे... ।। ५ ।।

❀ আরতী ❀

- জয় জয় আরতী আদি জিণন্দা
নাভিরায় মরুদেবী কো নন্দা ॥
- পহেলী আরতী পূজা কীজে
নরভব পামীনে লাহো লীজে ... জয়-জয় ॥ ১ ॥
- দূসরী আরতী দীনদয়ালা
ধুলেবা মন্ডপমা জগ অজুবালা ... জয়-জয় ॥ ২ ॥
- তীসরী আরতী ত্রিভুবনদেবা
সুর-নর-ইন্দ্র করে তোরী সেবা ... জয়-জয় ॥ ৩ ॥
- চোথী আরতী চউগতি চুরে
মনবাঙ্কিত ফল শিবসুখ পুরে ... জয়-জয় ॥ ৪ ॥
- পঞ্চমী আরতী পুণ্য উপায়া
মূলচন্দে ঋষভ গুণগায়া ... জয়-জয় ॥ ৫ ॥

❀ মংগল দীপক ❀

- দীবো রে দীবো প্রভু মংগলিক দীবো
আরতী উতারণ বৃহ চিরঞ্জীবো ... দীবো রে ॥ ১ ॥
- সোহামণু ঘের পর্বদীবালা
অম্বর খেলে অমরাবালা ... দীবো রে ॥ ২ ॥
- দীপাল ভণে এণে কুল অজুবালা
ভাবে ভগতে বিঘন নিবারী ... দীবো রে ॥ ৩ ॥
- দীপাল ভণে এণে এ কলিকালে
আরতী উতারী রাজা কুমারপালে ... দীবো রে ॥ ৪ ॥
- অম ঘের মংগলিক তুম ঘের মংগলিক
মংগলিক চতুর্বিধ সংঘ নে হোজো । ... দীবো রে ॥ ৫ ॥

❀ नव अंग पूजा के दोहे ❀

- (१) अंगूठे : जल भरी सम्पुट पत्रमा, युगलिक नर पूजंत,
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भव जल अंत ।
- (२) घुटने : जानु बले काउरसग्ग रह्या, विचर्या देश-विदेश,
खड़ा-खड़ा केवल लह्यु, पूजो जानु नरेश ।
- (३) कलाई : लोकान्तिक वचने करी, वरस्या वरसी-दान,
करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ।
- (४) कंधे : मान गयु दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत,
भुजा-बले भव-जल तर्या, पूजो खंध महंत ।
- (५) शिखा : सिद्धशिला गुण उजली, लोकांते भगवंत,
वसिया तेणे कारण भवि ! शिर शिखा पूजंत ।
- (६) तिलक : तीर्थकर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत,
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ।
- (७) कंठ : सोल प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तूल,
मधुर ध्वनि सुरनर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल ।
- (८) हृदय : हृदय कमल उपशम बले, बाल्या राग ने रोष,
हिम दहे वन-खण्डने, हृदय तिलक संतोष ।
- (९) नाभि : रत्नत्रयी गुण उजली, सकल सुगुण विश्राम,
नाभि कमलनी पूजना, करता अविचल धाम ।
उपदेशक नवतत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद ।
पूजो बहुविध रागशु, कहे शुभवीर मुणींद ।

❀ নব অঙ্গ পূজা এর দোহা ❀

- (১) চরণ : জল ভরী সম্পুট পত্রমা, যুগলিক নর পূজন্ত ।
ঋষভ চরণ অঙ্গুষ্ঠ-ডে, দায়ক ভবজল অন্ত ॥
- (২) হাঁটু : জানু ব্লে কাউস্সগ্ন রহ্যা, বিচর্যা দেশ-বিদেশ ।
খড়া-খড়া কেবল লহ-যু, পূজো জানু নরেশ ॥
- (৩) বাহু : লোকান্তিক বচনে করি, বরস্যা বরসী-দান ।
কর-কাণ্ডে প্রভু পূজনা, পূজো ভবি ব্রহ্মান ॥
- (৪) স্কন্ধ : মান গয়ু দোয় অন্শথী, দেখী বীর্য অনন্ত ।
ভুজা-ব্লে ভব-জল তর্যা, পূজো খন্ধ মহন্ত ॥
- (৫) মস্তক : সিদ্ধশিলা গুণ উজলী, লোকান্তে ভগবন্ত ।
বসিয়া তেণে কারণ ভবি, শির শিখা পূজন্ত ॥
- (৬) কপাল : তির্থঙ্কর পদ পুণ্যথী, ত্রিভুবন জন সেবন্ত ।
ত্রিভুবন তিলক সমা প্রভু, ভাল তিলক জয়বন্ত ॥
- (৭) কণ্ঠ : সোল প্রহর প্রভু দেশনা, কণ্ঠে বিবর-বর্তুল ।
মধুরধ্বনি সুর-নর সুণে, তিণে গলে তিলক অমুল ।
- (৮) হৃদয় : হৃদয় কমল উপশম ব্লে, বাল্যা রাগ নে রোষ ।
হিম দহে বন খণ্ডনে, হৃদয় তিলক সন্তোষ ॥
- (৯) নাভি : রত্নত্রয়ী গুণ উজলী, সকল সুগুণ বিশ্রাম ।
নাভি কমলনী পূজনা, করতা অবিচল ধাম ॥
উপদেশক নবতত্ত্বনা, তিণে নবঅঙ্গ জিগন্দ ।
পূজো ব্রহ্মবিধ রাগশু, কহে শুভবীর মুণীন্দ ।

❀ २४ भगवान के नाम-लांछन-वर्ण ❀

नं.	नाम	लांछन	वर्ण
१	श्री ऋषभदेव (आदिनाथ)	वृषभ (बैल)	कंचन
२	श्री अजितनाथ	हाथी	कंचन
३	श्री संभवनाथ	घोड़ा	कंचन
४	श्री अभिनंदन स्वामी	वानर	कंचन
५	श्री सुमतिनाथ	क्रौञ्चपक्षी	कंचन
६	श्री पद्मप्रभ स्वामी	राता कमल	लाल
७	श्री सुपाश्वर्धनाथ	स्वस्तिक (साथिया)	कंचन
८	श्री चंद्रप्रभ स्वामी	चंद्रमा	उज्ज्वल
९	श्री सुविधिनाथ (पुष्पदंत)	मगरमछ	उज्ज्वल
१०	श्री शीतलनाथ	श्रीवत्स	कंचन
११	श्री श्रेयांसनाथ	गेंडा	कंचन
१२	श्री वासुपूज्य स्वामी	पाडा	लाल
१३	श्री विमलनाथ	वराह	कंचन
१४	श्री अनंतनाथ	सिंचाणो	कंचन
१५	श्री धर्मनाथ	वज्र	कंचन
१६	श्री शान्तिनाथ	हिरन	कंचन
१७	श्री कुंथुनाथ	बकरा	कंचन
१८	श्री अरनाथ	नंदावर्त	कंचन
१९	श्री मल्लिनाथ	कुंभ	नील
२०	श्री मुनिसुवत स्वामी	कछुआ	श्याम
२१	श्री नमिनाथ	नील कमल	कंचन
२२	श्री नेमिनाथ (अरिष्टनेमि)	शंख	श्याम
२३	श्री पार्श्वनाथ	सर्प	नील
२४	श्री महावीर स्वामी (वर्द्धमान)	सिंह	कंचन

❀ ২৪ ভগবানের নাম-লাঙ্ঘন-বর্ণ ❀

ক্রম	নাম	লাঙ্ঘন (চিহ্ন)	বর্ণ (রং)
১	শ্রী ঋষভদেব (আদিনাথ)	বৃষভ (বৈল)	কান্চন
২	শ্রী অজিতনাথ	হাথী	কান্চন
৩	শ্রী সম্ভবনাথ	ঘোড়া	কান্চন
৪	শ্রী অভিনন্দন স্বামী	বানর	কান্চন
৫	শ্রী সুমতিনাথ	ক্রৌঞ্চ পাখী	কান্চন
৬	শ্রী পদ্মপ্রভ স্বামী	কমল	রক্ত
৭	শ্রী সুপার্বনাথ	স্বস্তিক	কান্চন
৮	শ্রী চন্দ্রপ্রভ স্বামী	চন্দ্র	শ্বেত
৯	শ্রী সুবিধিনাথ (পুষ্পদন্ত)	কুমীর	শ্বেত
১০	শ্রী শীতলনাথ	শ্রী বত্স	কান্চন
১১	শ্রী শ্রেয়ান্সনাথ	গভার	কান্চন
১২	শ্রী বাসুপূজ্যস্বামী	মহিষ	রক্ত
১৩	শ্রী বিমলনাথ	বরাহ	কান্চন
১৪	শ্রী অনন্তনাথ	বাজ পাখী	কান্চন
১৫	শ্রী ধর্মনাথ	বজ্র	কান্চন
১৬	শ্রী শান্তিনাথ	হরিণ	কান্চন
১৭	শ্রী কুন্তুনাথ	ছাগল	কান্চন
১৮	শ্রী অরনাথ	নন্দাবর্ত	কান্চন
১৯	শ্রী মল্লিনাথ	কলশ	নীল
২০	শ্রী মুনিসূর্য স্বামী	কচ্ছপ	শ্যাম
২১	শ্রী নমিনাথ	নীলকমল	কান্চন
২২	শ্রী নেমিনাথ (অরিষ্টনেমি)	শঙ্খ	শ্যাম
২৩	শ্রী পার্শ্বনাথ	সর্প	নীল
২৪	শ্রী মহাবীর স্বামী (বর্ধমান)	সিংহ	কান্চন

❀ ज्ञान के पांच दोहे ❀

समकित श्रद्धा-वंतने, उपन्यो ज्ञानप्रकाश;
प्रणमु पद कज तेहना, भाव धरी उल्लास...॥१॥

पवयण श्रुत सिद्धांत ते, आगम समय वरवाण;
पूजो बहुविध रागथी, चरण कमल चित्त आण...॥२॥

उपन्यो अवधिज्ञाननो, गुण जेहने अविकार;
वंदना तेहने माहरी, श्वासमाहे सो वार...॥३॥

ए गुण जेहने उपन्यो, सर्व विरति गुण-ठाण,
प्रणमु हितथी तेहना, चरण कमल चित्त आण...॥४॥

केवल दंसण नाणनो, चिदानंद घन तेज;
ज्ञान-पंचमी दिन पूजीअे, विजय-लक्ष्मी शुभहेज...॥५॥

জ্ঞানের পাঁচটি দুহা

সমকিত শ্রদ্ধা-বস্তুনে, উপন্যো জ্ঞান প্রকাশ

প্রণমু পদ কজ তেহনা, ভাবধরী উল্লাস। ১১

পবয়ণ শ্রুত সিদ্ধান্ত তে, আগম সময় বখাণ

পূজো ব্রহ্মবিধ রাগথী, চরণ কমল চিত্ত আগ। ১২

উপন্যো অবধি জ্ঞাননো, গুণ জেহনে অবিকার

বন্দনা তেহনে মাহরী, শ্বাসমাহে সো বার। ১৩

এ গুণ জেহনে উপন্যো, সর্ববিরতি গুণ ঠাণ

প্রণমু হিতথী তেহনা, চরণ কমল চিত্ত আগ। ১৪

কেবল দন্সণ নাগনো, চিদানন্দ ঘন তেজ

জ্ঞান-পঞ্চমী দিন পূজীএ, বিজয়-লক্ষ্মী শুভ হেজ। .. ১৫

❀ सरस्वती वन्दना ❀

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमे तार दे माँ ।
तु स्वर की देवी, ये संगीत तुझसे
हर शब्द तेरा, हर गीत तुझसे ।
हम है अकेले, हम है अधुरे
तेरी शरण मे हमे प्यार दे माँ...॥१॥
मुनिओने समझी, गुणीओने जाणी
सन्तो की भाषा, आगमो की वाणी ।
हम भी तो समझे, हम भी तो जाने
विद्याका हमको अधिकार दे माँ ॥२॥
तु श्वेतवर्णी, कमल पे बिराजे
हाथो मे वीणा, मुकट सर पे छाजे
मन से हमारे मीटा दे अंधेरे ।
हमको उजालो का परिवार दे माँ ॥३॥

❀ স্রস্বতী বন্দনা ❀

হে শারদে মা, হে শারদে মা
অজ্ঞানতা সে হমে তার দে মা।
তু স্বর কী দেবী, যে সংগীত তুঝসে
হর শব্দ তেরা, হর গীত তুঝসে।
হম হৈ অকেলে, হম হৈ অধুরে
তেরী শরণ মে হমে প্যার দে মা...।।১।।
মুনিওনে সমঝী, গুণীওনে জাগী
সন্তো কী ভাষা, আগমো কী বাণী।
হম ভী তো সমঝে, হম ভী তো জানে
বিদ্যাকা হমকো অধিকার দে মা।।২।।
তু শ্বেতবর্ণী কমল পে বিরাজে
হাথো মে বীণা, মুকট সর পে ছাজে।
মন সে হমারে মীটা দে অঁধেরে
হমকো উজালো কা পরিবার দে মা।।৩।।

❀ जगचिंतामणि सूत्र ❀

जग - चिंतामणि ! जग - नाह ! जग - गुरु !
जग - रक्खण ! जग - बंधव ! जग - सत्थवाह
जग - भाव - विअक्खण !
अट्ठावय - संठविअ - रुव !
कम्मट्ठ - विणासण !
चउवीसंपि जिणवर ! जयंतु
अप्पडिहय - सासण ! । १ ।
कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं
पढम - संघयणि
उक्कोसय सत्तरिसय
जिणवराण विहरंत लब्भई ।
नवकोडिहिं केवल्लिण
कोडि - सहस्स नव साहु गम्मइ ;
संपई जिणवर वीस ,
मुणि बिहुं कोडिहिं वरणाण ;
समणह कोडि - सहस्स - दुअ
थुणिज्जइ निच्च विहाणि । २ ।
जयउ सामिय , जयउ सामिय
रिसह सत्तुंजि ,
उज्जिंति पहु नेमिजिण ,
जयउ वीर ! सच्चउरि - मंडण !

❀ ଜଗ ଚିନ୍ତାମଣି ସୂତ୍ର ❀

ଜଗ-ଚିନ୍ତାମଣି ! ଜଗ-ନାହ ! ଜଗ-ଘରୁ
ଜଗ-ରକ୍ଷଣ ! ଜଗ-ବନ୍ଧବ ! ଜଗ ସଥବାହ
ଜଗ-ଭାବ-ବିଅକ୍ଷଣ !
ଅଟାବୟ-ସଞ୍ଚିବିଅ-ରବ !
କନ୍ଧୁ-ବିନାଶ
ଚଉବୀସମ୍ପି ଜିଣବର ! ଜୟନ୍ତୁ
ଅମ୍ଳାଦିହୟ - ସାମଣ ! ॥ ୧ ॥

କନ୍ଧୁଭୂମିହିମ୍ କନ୍ଧୁଭୂମିହିମ୍
ପଟମ-ସଂଘରାଣି
ଉକ୍ଳୋସୟ-ସନ୍ତରାସୟ-
ଜିଣବରାଣ ବିହରନ୍ତରାବୁଡ଼ି ।
ନବକୋଡ଼ିହିମ୍ କେବଳିଣ
କୋଡ଼ି ସହସ୍ର-ନବ ସାହ ଗନ୍ଧୁଇ;
ସମ୍ପଇ ଜିଣବର ବୀସ,
ମୁଣି ବିହମ୍ କୋଡ଼ିହିମ୍ ବରନାଣ
ସମାଣ କୋଡ଼ି-ସହସ୍ର-ଦୁଅ
ଥୁଣିଜ୍ଜଇ ନିଛ ବିହାଣି ॥ ୨ ॥
ଜୟଉ ସାମିୟ ଜୟଉ ସାମିୟ
ରାସହ ସନ୍ତୁନ୍ଧି
ଉଜ୍ଜିନ୍ତି ପହ୍ଲ ନେମିଜିଣ
ଜୟଉ ବୀର ! ସକ୍ଷଉରି ମନ୍ତ୍ରଣ !

भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय !
महुरि पास ! दुह - दुरिअ - खंडण !
अवर विदेहिं तित्थयरा,
चिहुं दिसि, विदिसि जिं केवि
तीआणागय - संपइअ, वंदु जिण सव्वेवि ।।३।।
सत्ताणवइ - सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडिओ
बत्तिस-सय बासियाइं, तिअ लोए चेइये वंदे ।।४।।
पनरस कोडि सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना
छत्तीस सहस असिइं, सासय बिंबाइं पणमामि ।।५।।

❀ सकल कुशल वल्ली सूत्र ❀

सकल-कुशल-वल्ली, पुष्करा-वर्त-मेघो
दूरित-तिमिर-भानुः, कल्प-वृक्षोपमानः ।
भव-जल-निधि-पोतः, सर्व-सम्पत्ति-हेतुः ।
स भवतु सततम् वः, श्रेयसे श्रीशान्तिनाथः
श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथः ।। १ ।।

❀ जं किंचि सूत्र ❀

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिण बिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि ।। १ ।।

ভৰু অচ্ছহিম্ মুণি সুব্বয় !
মহুরি পাস দুহ-দুরিঅ-খন্ডণ ! অবর বিদেহিম্ তিথয়রা ।
চিহ্ম দিসি বিদিসি জিং কেবি
তি আণাগয় সম্পইঅ, বন্দু জিণ সৰ্বেবি ।। ৩ ।।
সত্তাণবই সহস্সা-লক্খা ছপ্পন্ন অট্ট কোডিও
বত্তিস-সয় বাসিয়াইম্ তিঅ লোএ চেইয়ে বন্দে ।
পনরস কোডি সয়াইম্ কোডি বায়াল লক্খ অডবন্না
ছত্তীস সহস অসিইম্ সাসয় বিন্হাইম্ পণমামি ।

❀ সৰল কুশল বল্লী সূত্র ❀

সকল-কুশল-বল্লী, পুঙ্করা-বর্ত-মেঘো
দূরিত-তিমির-ভানু, কল্প-বৃক্ষোপমানঃ ।
ভব-জল-নিধি-পোতঃ, সৰ্ব-সম্পত্তি-হেতুঃ ।
স ভবতু সততম্ বঃ, শ্রেয়সে শ্রীশান্তিনাথঃ
শ্রেয়সে শ্রীপার্বনাথঃ ।। ১ ।।

❀ জং কিঞ্চি সূত্র ❀

জং কিঞ্চি নাম তিত্থম্, সগ্গে পায়ালি মাণুসে লোএ,
জাই জিণ বিবাই তাই সৰ্ব্বাই বন্দামি ।। ১ ।।

❀ नमुत्थुणं सूत्र ❀

नमुत्थुणं

अरि-हंताणं, भग-वंताणं ।। १ ।।

आइगराणं, तित्थयराणं,

सयं-सम्-बुद्धाणं ।। २ ।।

पुरिसुत्त-माणं, पुरिस-सीहाणं,

पुरिस-वर-पुंडरियाणं,

पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं ।। ३ ।।

लोगुत्त-माणं, लोग-नाहाणं,

लोग-हियाणं, लोग-पईवाणं,

लोग-पज्जोअ-गराणं ।। ४ ।।

अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं,

मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं,

बोहि-दयाणं ।। ५ ।।

धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं,

धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं,

धम्म-वर-चाउ-रंत-चक्क-वट्टीणं ।। ६ ।।

अप्पडि-हय-वर-नाण-दंसण-धराणं,

वियट्ट-छउमाणं ।। ७ ।।

❀ ନମୁଥୁଗମ୍ ସୂତ୍ର ❀

ନମୁଥୁଗମ୍

ଅରି-ହନ୍ତାଗମ୍ ଭଗ-ବନ୍ତାଗମ୍ ॥ ୧ ॥

ଆହିଗରାଗମ୍, ତିଥ୍ୟରାଗମ୍,

ସୟମ୍-ସମ୍-ବୁଦ୍ଧାଗମ୍ ॥ ୨ ॥

ପୁରୀସୁତ୍ର-ମାଗମ୍, ପୁରୀସ-ସୀହାଗମ୍

ପୁରୀସ-ବର-ପୁନ୍ଦରି-ରାଗମ୍

ପୁରୀସ-ବର-ଗନ୍ଧ-ହସ୍ତିଗମ୍ ॥ ୩ ॥

ଲୋଘୁତ୍ର-ମାଗମ୍, ଲୋଗ-ନାହାଗମ୍,

ଲୋଗ-ହିୟାଗମ୍, ଲୋଗ-ପଞ୍ଚିବାଗମ୍,

ଲୋଗ-ପଞ୍ଜୋଅ-ଗରାଗମ୍ ॥ ୪ ॥

ଅଭୟ-ଦୟାଗମ୍, ଚକ୍ଷୁ-ଦୟାଗମ୍,

ମନ୍ଥ-ଦୟାଗମ୍, ସରଣ-ଦୟାଗମ୍,

ବୋହି-ଦୟାଗମ୍ ॥ ୫ ॥

ଧନ୍ୟ-ଦୟାଗମ୍, ଧନ୍ୟ-ଦେସୟାଗମ୍,

ଧନ୍ୟ-ନାୟଗାଗମ୍, ଧନ୍ୟ-ସାରହୀଗମ୍

ଧନ୍ୟ-ବର-ଚାଉ-ରନ୍ତ-ଚକ୍ର-ବଟ୍-ଟୀଗମ୍ ॥ ୬ ॥

ଅସ୍ମାଦି-ହୟ-ବର-ନାଗ-ଦନ୍ତସଂ-ଧରାଗମ୍,

ବିୟଟ୍ଟ-ଛଉ-ମାଗମ୍ ॥ ୭ ॥

जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥

सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं,
सिव-मयल-मरुअ-मणंत,
मक्खवय-मव्वाबाह-मपुणरा-वित्ति
सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं,
नमो जिणाणं जिअ-भयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा,
जे अ भविस्संति णागए काले,
संपइ अ वट्टमाणा,
सव्वे-तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

জিগাণম্, জাবয়াণম্, তিন্নাণম্, তারয়াণম্,
বুদ্ধাণম্ বোহয়াণম্, মুত্তাণম্ মোঅগাণম্ ॥ ৮ ॥

সব্বনুণম্, সব্ব-দরিসীণম্,
সিব-ময়ল-মরুঅ-মণন্ত-
মক্খয়-মব্বা-ব্রাহ-মপুণরা-বিত্তি ।
সিদ্ধিগই-নামধেয়ম্ ঠাণম্ সম্পত্তাণম্
নমো জিগাণম্ জিঅ-ভয়াণম্ ॥ ৯ ॥

জে অ অইআ সিদ্ধা
জে অ ভবিস্সন্তি-ণাগএ কালে,
সম্পই অ বট্টমাণা,
সব্বে তিবিহেণ বন্দামি ॥ ১০ ॥

❀ जावंति चेईआई सूत्र ❀

जावंति चेईआई ,
ऊडढे अ, अहे अ, तिरिय लोए अ,
सव्वाईं ताईं वंदे, इह संतो तत्थ संताईं ।। १ ।

❀ जावंत के वि साहू सूत्र ❀

जावंत के वि साहू, भर-हेर-वय-महा-विदेहे अ,
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदण्ड विरयाणं ।। १ ।।

❀ नमोऽर्हत् सूत्र ❀

(मात्र पुरुषो के लिए)
नमोर्-हत्-सिद्धा-चार्यो-पाध्याय-सर्वसाधुभ्यः ।। १ ।।

❖ জাবন্তি চেঙ্গিয়াঙ্গম্ সূত্র ❖

জাবন্তি চেঙ্গিয়াঙ্গম্।

উড়চে অ, অহে অ, তিরিয়-লোএ অ,
সব্বাঙ্গম্ তাঙ্গম্ বন্দে ইহ সন্তো তথ সন্তাঙ্গম্ ॥ ১ ॥

❖ জাবন্ত কে বি সাহু সূত্র ❖

জাবন্ত কে বি সাহু, ভর-হের-বয়-মহা-বিদেহে অ,
সব্বেসিম্ তেসিম্ পণও, তিবিহেণ তিদন্ত বিরয়াণম্ ॥ ১ ॥

❖ নমোহত্ সূত্র ❖

(কেবলমাত্র পুরুষদের বলার জন্য)

নমোর্-হত্-সিদ্ধা-চার্যো-পাধ্যায়-সর্ব-সাধুভ্যঃ ॥ ১ ॥

उवसग्गहरं सूत्र

उवसग्ग-हरं-पासं,
पासं वंदामि कम्म-घण मुक्कं,
विसहर - विस - निन्नासं,
मंगल - कल्लाण - आवासं ।। १ ।।
विसहर - फुलिंग - मंतं,
कंठे धारेइ जो सया मणुओ,
तरस्स गह - रोग - मारी -
दुट्-ठ-जरा जंति उवसामं ।। २ ।।
चिट्-ठउ दूरे मंतो,
तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ
नर - तिरिएसु वि जीवा,
पावंति न दुक्ख - दोगच्चं ।। ३ ।।
तुह सम्मत्ते लद्धे,
चिंतामणि - कप्प-पाय - वब्-भ-हिए,
पावंति अविग्-घेणं,
जीवा अयरामरं ठाणं ।। ४ ।।
इअ संथुओ महायस !
भत्-तिब्-भर-निब्-भ-रेण हियएण,
ता देव ! दिज्ज बोहिं,
भवे भवे पास-जिणचंद !। ५ ।।

উবসগ্ন-হরম্ সূত্র

উবসগ্ন-হরম্-পাসম্,
পাসম্ বন্দামি, কস্ম-ঘণ-মুক্কম্,
বিসহর-বিস-নিলাসম্,
মংগল-কল্লাণ-আবাসম্ ॥১॥
বিসহর-ফুলিংগ-মন্তম্,
কঠে ধারেই জো সয়া মণুও
তস্ গহ-রোগ-মারী-
দুট্-ঠ-জরা জন্তি উবসামম্ ॥২॥
চিট্-ঠউ দূরে মন্তো,
তুজ্জা পণামো বি ব্হ-ফলো হোই,
নর-তিরিএসু বি জীবা,
পাবন্তি ন দুক্খ-দোগচ্চম্ ॥৩॥
তুহ সস্মত্তে লদ্ধে,
চিন্তামণি-কপ্প-পায়-বব্-ভ-হিএ,
পাবন্তি অবিগ্-ঘেণম্,
জীবা অয়রা-মরম্ ঠাণম্ ॥৪॥
ইঅ সন্থুও মহায়স!
ভত্-তিব্-ভর-নিব্-ভ-রেণ হিয়এণ,
তা দেব! দিঙ্জ বোহিম্,
ভবে ভবে পাস! জিণচন্দ! ॥৫॥

❀ जय वीयराय सूत्र ❀

जय वीयराय ! जग - गुरु !
होउ ममं तुह पभावओ, भयवं !

(१) भव-निवेओ

(२) मग्गाणु-सारिआ

(३) इट्-ठ-फल - सिद्धि ।। १ ।।

(४) लोग - विरुद्धच्-चाओ

(५) गुरुजण - पूआ

(६) परत्थकरणं च

(७) सुहगुरु - जोगो

(८) तव्वयण सेवणा

आभव मखंडा ।। २ ।।

वारिज्जइ जइ वि नियाण - बंधणं

वीयराय ! तुह समये,

तह वि (९) मम हुज्ज सेवा

भवे भवे तुम्ह चलणाणं ।। ३ ।।

(१०) दुक्खक् - खओ (११) कम्मक्-खओ

(१२) समाहि - मरणं च (१३) बोहि-लाभो अ

संपज्जउ मह एअं,

तुह नाह ! पणाम - करणेणं ।। ४ ।।

सर्व मंगल मांगल्यं

सर्व कल्याण कारणं

प्रधानं सर्व धर्माणां

जैनं जयति शासनं ।। ५ ।।

❀ জয় বীয়ারায় সূত্র ❀

জয় বীয়ারায়! জগ-গুরু!
হোউ মমম্ তুহ পভাবও ভয়বম্!
(১) ভব-নিষেও
(২) মগ্ধাণু-সারিআ
(৩) ইট্-ঠ-ফল-সিদ্ধি।।১।।
(৪) লোগ বিরুদ্ধচ্-চাও,
(৫) গুরুজগ-পূআ
(৬) পরথ-করণম্ চ
(৭) সুহগুরু-জোগো
(৮) তব্বয়ণ সেবণা
আভব-মখন্ডা।।২।।
বারিজ্জই জই বি নিয়াণ-বন্ধণম্
বীয়ারায়! তুহ সময়ে,
তহ বি (৯) মম হুজ্জ সেবা,
ভবে ভবে তুম্হ চলণাণম্।।৩।।
(১০) দুক্খক্-খও (১১) কন্মক্-খও,
(১২) সমাহি-মরণম্ চ (১৩) বোহি-লাভো অ,
সম্পজ্জউ মহ এতম্,
তুহ নাহ! পণাম-করণেণম্।।৪।।
সর্ব-মংগল-মাংগল্যম্,
সর্ব-কল্যাণ-কারণম্,
প্রধানম্ সর্ব-ধর্মাণাম্,
জৈনম্ জয়তি শাসনম্।।৫।।

❀ अरिहंत चेइयाणं सूत्र ❀

अरिहंत चेइयाणं, करेमि काउरसग्गं !
वंदण - वत्ति-याए, पूअण - वत्ति-याए,
सक्कार - वत्ति-याए, सम्माण - वत्ति-याए ;
बोहिलाभ - वत्ति-याए,
निरुव-सग्ग - वत्ति-याए,
सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए,
अणुप्-पेहाए, वड्ढ-माणीए,
ठामि काउरसग्गं ॥१॥

❀ অরিহন্ত-চেইয়াণম্ সূত্র ❀

অরিহন্ত চেইয়াণম্, করেমি কাউস্সগ্গম্
বন্দণ-বত্তি-য়াএ, পূঅণ-বত্তি-য়াএ,
সঙ্কার-বত্তি-য়াএ, সম্মাণ-বত্তি-য়াএ
বোহিলাভ-বত্তি-য়াএ,
নিরুব-সগ্গ-বত্তি-য়াএ
সদ্ধাএ, মেহাএ, থিইএ, ধারণাএ,
অনুপ্প-পেহাএ, বড্ঢমাণীএ,
ঠামি কাউস্সগ্গম্ ॥ ১ ॥

चैत्यवन्दन

पद्मप्रभु ने वासुपूज्य, दोग राता कहीए
चन्द्रप्रभु ने सुविधिनाथ, दोग उज्ज्वल लहीए ॥ १ ॥
मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दोग नीला निर्-रव्या
मुनिसुवत ने नेमिनाथ, दोग अंजन सरिरवा ॥ २ ॥
सोले जिन कंचन समा, एवा जिन चोवीश
धीर विमल पण्डित तणो, 'ज्ञान विमल' कहे शिष्य ॥ ३ ॥

स्तवन

पार्श्व जिणंदा वामाजी के नन्दा
तुम पर वारि जाऊ बोल बोल रे
दादा दरवाजा तेरा खोल खोल रे ।
दूर दूर से लंबी सफर से
हम दर्शन आये दौड दौड रे... ॥ १ ॥
पूजा करुंगा, धूप धरुंगा
फुल चढ़ाऊंगा में मोल मोल रे... ॥ २ ॥
तु मेरा ठाकर में तेरा चाकर
एकबार मुझसु बोल बोल रे... ॥ ३ ॥
श्री शंखेश्वर भगवन्त सुन्दर सुरत
मुखड्ड ते झाकम झोल झोल रे... ॥ ४ ॥
रूप विबुधनो मोहन पभणे
रंग लाग्यो चित्त चोल चोल रे... ॥ ५ ॥

চৈতন্যবন্দন

পদ্মপ্রভু নে বাসুপূজ্য, দোয় রাতা কহীএ
চন্দ্রপ্রভু নে সুবিধিনাথ, দোয় উজ্জ্বল লহীএ ॥ ১ ॥
মল্লিনাথ নে পার্শ্বনাথ, দোয় নীলা নিৰ্-খ্যা
মুনিসুব্রত নে নেমিনাথ, দোয় অন্জন সরিখা ॥ ২ ॥
সোলে জিন কন্চন সমা, এবা জিন চৌবীশ
ধীর বিমল পণ্ডিত তণো, ‘জ্ঞান বিমল’ কহে শিষ্য ॥ ৩ ॥

স্তবন

পার্শ্বজিগন্দা বামাজী কে নন্দা
তুম পর বারি জাউ বোল বোল রে
দাদা দরবাজা তেরা খোল খোল রে ।
দূর দূর সে লম্বী সফর সে
হম দর্শন আয়ে দৌড় দৌড় রে... ॥ ১ ॥
পূজা করুংগা, ধূপ ধরুংগা
ফুল চড়াউংগা মে মোল মোল রে... ॥ ২ ॥
তু মেরা ঠাকর মে তেরা চাকর
একবার মুঝসু বোল বোল রে... ॥ ৩ ॥
শ্রী শংখেশ্বর ভগবন্ত সুন্দর সুরত
মুখডু তে ঝাকম ঝোল ঝোল রে... ॥ ৪ ॥
রূপ বিবুধনো মোহন পভণে
রংগ লাগ্যো চিত্ত চোল চোল রে... ॥ ৫ ॥

❀ चैत्यवंदन की विधि ❀

→ सर्वप्रथम एक खमासमण देकर **इरियावहियं, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ** कहकर चंदेसु निम्मलयरा तक **एक लोगस्स** (ना जानो तो ४ नवकार) का काउरुसग्ग करें। 'नमो अरिहंताणं' कहकर हाथ जोड़े और **लोगस्स** कहें।

→ तीन खमासमण देकर '**इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं?**' ... इच्छं, (एसा बोलकर बाया पैर उपर करके योग मुद्रा में बैठे)। **सकल कुशल वल्ली, चैत्यवंदन** (पद्मप्रभु ने वासुपूज्य) **जंकिंचि, नमुत्थुणं, जावंति चेईआई** सूत्र कहकर, **खमासमण देकर, जावंत के वि साहू** सूत्र कहने के उपरांत **नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः** कहें और एक **स्तवन** (पार्श्व जिन्दा, वामाजी के नंदा) बोले। इसके बाद मस्तक पर हाथ जोड़ कर **जयवीरराय** सूत्र बोलें।

→ खड़े होकर, **अरिहंत चेइयाणं, अन्नत्थ** कहकर **एक नवकार** का काउरुसग्ग करें 'नमो अरिहंताणं' कहकर '**नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः**.' कहकर **थोय/स्तुति** बोलकर।

→ **एक खमासमण** देकर, 'अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कडं' बोले।

❀ চৈত্যবন্দন বিধি ❀

→ প্রথমে খমাসমণ দিয়ে ইরিয়াবহীয়ম্, তস্স উত্তরী অন্তথ সূত্র বলার পর চন্দেসু নিম্নলয়রা পর্যন্ত এক লোগস্স (অথবা ৪ নবকার) এর কাউস্সগ্ন করতে হবে। ‘নমো অরিহন্তাণম্’ বলে হাত জোড় করে লোগস্স বলতে হবে।

→ তিনবার খমাসমণ দিয়ে ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্ চৈত্যবন্দন করু? ইচ্ছম্। (এই রকম বলে বাম পা উপর করে যৌগ মুদ্রায় বসতে হবে।) সকলকুশলবল্লী, একটা চৈত্যবন্দন (পদ্ম প্রভুনে বাসুপূজ্য), জং কিঞ্চিঃ, নমুখুণম্, জাবন্তি চেইয়াইম্ সূত্র বলে এক খমাসমণ দিতে হবে জাবন্ত কেবি সাহ্ সূত্র বলে ‘নমোইত্’ বলতে হবে আর একটি স্তবন (পার্শ্ব জিগন্দা, বামাজি কে নন্দা) বলতে হবে। তারপর মাথার উপরে দু’হাত জোড় করে জয় বীয়রায় সূত্র বলতে হবে।

→ দাঁড়িয়ে অরিহন্ত চেইয়াণম্, অন্তথ সূত্র বলে এক নবকার কাউস্সগ্ন করতে হবে। ‘নমো অরিহন্তাণম্’ বলবার পর ‘নমোইত্’ বলে এক থোয়/স্তুতি বলতে হবে।

→ তারপর এক খমাসমণ দিয়ে, “অবিধি আশাতনা মিচ্ছামি দুক্কডম্” বলতে হবে।

❀ कल्लाण कंदं सूत्र ❀

कल्लाण कंदं, पढमं जिणिंदं,
संतिं तओ नेमि-जिणं मुणिंदं,
पासं पयासं, सुगुणिकक-ठाणं,
भत्तीइ वंदे, सिरि वद्धमाणं ।।१।।

अपार-संसार, समुद्ध-पारं,
पत्ता सिवं दिंतु, सुइक्क-सारं,
सव्वे जिणिंदा, सुरविंद-वंदा,
कल्लाण वल्लीण, विसाल कंदा ।।२।।

निव्वाण मग्गे, वर-जाण कप्पं,
पणासिया-सेस-कुवाइ-दप्पं,
मयं जिणाणं, सरणं बुहाणं,
नमामि निच्चं, तिजगप्-पहाणं ।।३।।

कुन्दिन्दु-गोक्-खीर-तुसार-वन्ना,
सरोज हत्था, कमले निसन्ना,
वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था,
सुहाय सा अम्ह, सया पसत्था ।।४।।

❀ କଳ୍ପାଂ କନ୍ଦୟ୍ ସୁତ୍ର ❀

କଳ୍ପାଂ କନ୍ଦୟ୍, ପଟୟ୍ ଜିଗନ୍ଦୟ୍
ସନ୍ତିୟ୍ ତଓ ନେୟ୍-ଜିଗୟ୍ ମୁଗନ୍ଦୟ୍
ପାସୟ୍ ପୟାସୟ୍, ସୁଗୁଗିକ୍-ଠାଗୟ୍
ଭଗ୍ନୀୟ୍ ବନ୍ଦେ, ସିରି ବନ୍ଦୟାଗୟ୍ ।।୧ ।।

ଅପାର୍ ସଂସାର୍, ସୟ୍-ଦ୍ ପାରୟ୍
ପତ୍ତା ସିବୟ୍ ଦିନ୍ତୁ, ସୁ-ଇକ୍ ସାରୟ୍ ।
ସବେ ଜିଗନ୍ଦା, ସୁର୍-ବିନ୍ଦ-ବନ୍ଦା,
କଳ୍ପାଂ ବଲ୍ଲୀଂ, ବିସାଳ-କନ୍ଦା ।।୨ ।।

ନିବ୍ବାଂ-ମଗ୍ନେ-ବର-ଜାଂ-କମ୍ପୟ୍
ପଂଗାସିୟା-ସେସ-କୁବାୟ୍-ଦମ୍ପୟ୍ ।
ମୟ୍ ଜିଗାଂ, ସରାଂ ବୁହାଂ
ନୟାୟ୍ ନିଷ୍ଟୟ୍, ତିଜଗୟ୍-ପହାଂ ।।୩ ।।

କୁନ୍ଦିନ୍ଦୁ-ଗୋକ୍-ଧୀର୍ ତୁସାର ବନ୍ନା
ସରୋଜ ହଥା, କମ୍ବେ ନିସନ୍ନା
ବାଂ ସିରି, ପୁଥୟ୍ ବନ୍ନ ହଥା,
ସୁହାୟ୍ ସା ଅୟ୍, ସୟା ପସଥା ।।୪ ।।

संसार दावानल सूत्र

संसार-दावानल-दाह-नीरं,
संमोह-धूलि-हरणे समीरं,
माया-रसा-दारण-सार-सीरं,
नमामि वीरं गिरि-सार-धीरं ।। १ ।।
भावाव-नाम-सुर-दानव-मानवेन,
चूला-विलोल-कमला-वलि मालितानि,
संपूरिताभि-नत-लोक-समीहि-तानि,
कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ।। २ ।।
बोधा-गाधं सुपद-पदवी-नीर-पूरा-भिरामं,
जीवा-हिंसा-विरल-लहरी-संगमा-गाह-देहं,
चूला-वेलं-गुरुगम-मणि-संकुलं दूर-पारं,
सारं वीरा-गम-जल-निधिं सादरं साधु सेवे ।। ३ ।।
आमूला-लोल-धूली-बहुल-परिमला,
लीढ-लोलालि-माला,
झंकारा-राव-सारा-मल-दल-कमला
गार-भूमि-निवासे !
छाया-संभार-सारे ! वर-कमल-करे !
तार-हारा-भिरामे !
वाणी संदोह-देहे ! भव-विरह वरं
देहि मे देवि ! सारम् ।। ४ ।।

❀ সন্সার দাবানল সূত্র ❀

সন্সার - দাবা - নল - দাহ - নীরম্,
সম্মোহ - ধূলী - হরণে সমীরম্।
মায়া - রসা - দারণ - সার - সীরম্,
নমামি বীরম্ গিরি - সার - ধীরম্ ॥১॥

ভাবাব-নাম - সুর - দানব - মানবেন,
চুলা - বিলোল - কমলা - বলি মালিতানি।
সম্পূরিতাভি-নত - লোক - সমীহি - তানি,
কামম্ নমামি জিনরাজ পদানি তানি ॥২॥

ব্রোধা-গাধম্ সুপদ-পদবী-নীর-পুরা-ভিরামম্,
জীবা-হিন্সা-বিরল-লহরী-সংগমা-গাহ-দেহম্।
চুলা-বেলম্ গুরুগম-মণি-সংকুলম্ দূর-পারম্,
সারম্ বিরা-গম-জল-নিধিম্ সাদরম্ সাধু সেবে ॥৩॥

আমূলা-লোল-ধূলী-ব্রহ্মল-পরিমলা
লীচ-লোলালী-মালা
বাক্ষারা-রাব-সারা-মল-দল-কমলা
গার-ভূমি-নিবাসে!
ছায়া-সম্ভার-সারে! বর-কমল-করে!
তার-হারা-ভিরামে!
বাণী-সন্দোহ-দেহে! ভব-বিরহ-বরম্
দেহি মে দেবি! সারম্ ॥৪॥

❀ पुक्खर-वर-दीवहे सूत्र ❀

पुक्खर-वर-दीवड्-ढे,
धायड्-संडे अ जम्बू-दीवे अ,
भर-हेर-वय-विदेहे,
धम्माड्-गरे नमंसामि ।।१।।
तम-तिमिर-पडल-विद्-धन्-सणस्स,
सुरगण-नरिंद-महियस्स,
सीमाधरस्स वंदे,
पप्-फोडिय मोह-जालस्स ।।२।।
जाड्-जरा-मरण-सोग-पणा-सणस्स,
कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहा-वहरस्स,
को देव-दाणव-नरिन्द-गणच्-चिअस्स,
धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ।।३।।
सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए,
नंदी सया संजमे,
देवं-नाग-सुवन्न-किन्नर-
गणस्-सब्भूअ-भावच्-चिए,
लोगो जत्थ पड्ट्-ठिओ जगमिणं,
तेलुक्क मच्-चासुरं,
धम्मो वड्-ढउ सासओ विजयओ,
धम्मुत्तरं वड्ढउ, ।।४।।

सुअस्स भगवओ, करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तियाए...

❀ পুঙ্খর-বর দীবড্‌তে সূত্র ❀

পুঙ্খর-বর-দীবড্‌-তে,
ধায়ই-সন্ডে অ জম্বু-দীবে অ,
ভর-হের-বয়-বিদেহে,
ধম্মাই-গরে নমম্-সামি ॥১॥
তম-তিমির-পডল-বিদ্-ধন্-সগম্স
সুরগণ-নরিন্দ-মহিয়ম্স,
সীমাধরম্স বন্দে,
পপ্-ফোডিয় মোহ-জালম্স ॥২॥
জাই-জরা-মরণ-সোগ-পণা-সগম্স,
কল্লাণ-পুঙ্খল-বিসাল-সুহা-বহম্স ।
কো দেব-দাণব-নরিন্দ-গণচ্-চিঅম্স,
ধম্মম্স সার মুবলবুভ করে পমায়ম্? ॥৩॥
সিদ্ধে ভো! পয়ও গমো জিগমএ,
নন্দী সয়া সন্‌জমে,
দেবম্-নাগ-সুবল্ল-কিন্নর-
গণস্-সব্‌ভুঅ ভাবচ্-চিএ ।
লোগো জথ পইট্‌-ঠিও জগমিগম্
তেলুক্‌ মচ্‌-চাসুরম্,
ধম্মো বড্‌-ঢউ সাসও বিজয়ও
ধম্মুত্তরম্‌ বড্‌ঢউ ॥৪॥

সুঅম্স ভগবও করেমি কাউম্সগ্‌ম্‌, বন্দণ বত্তিয়াএ....

❀ सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र ❀

सिद्धाणं बुद्धाणं,
पार-गयाणं परंपर-गयाणं;
लोअग्ग-मुवगयाणं,
नमो सया सव्व-सिद्धाणं ।।१।।
जो देवाण वि देवो,
जं देवा पंजलि नमंसंति;
तं देव-देव महियं,
सिरसा वंदे महावीरं, ।।२।।
इक्को वि नमुक्कारो,
जिणवर-वस-हरस्स वद्धमाणस्स;
संसार सागराओ,
तारेइ नरं व नारिं वा ।।३।।
उज्जिंत सेल सिहरे,
दिक्खा नाणं निसीहिया जरस्स;
तं धम्म-चक्कवट्-टिं,
अरिट्ठ-नेमिं नमंसा मि ।।४।।
चत्तारि अट्-ठ दस दोय,
वंदिया जिणवरा चउब्बीसं;
परमट्ठ-निट्ठि-अट्ठा,
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।५।।

❀ वेयावच्चगराणं सूत्र ❀

वेयावच्च-गराणं, संति-गराणं
सम्म-दिट्ठि-समाहिगराणं
करेमि काउरसग्गं ।।१।।

❀ সিদ্ধাণম্-বুদ্ধাণম্ সূত্র ❀

সিদ্ধাণম্-বুদ্ধাণম্,
পার-গয়াণম্ পরম্পর-গয়াণম্
লোঅগ্না-মুবগয়াণম্,
নমো সয়া সব্ব-সিদ্ধাণম্ ॥১॥
জো দেবাণ বি দেবো,
জম্ দেবা পঞ্জলী নমম্-সন্তি
তম্ দেব-দেব মহিয়ম্
সিরসা বন্দে মহাবীরম্ ॥২॥
ইক্কো বি নমুকারো
জিণবর-বস-হস্স বদ্ধমাণস্স
সন্সার সাগরাও
তারেই নরম্ ব নারিম্ বা ॥৩॥
উজ্জিন্ত সেল সিহরে
দিक्খা নাণম্ নিসীহিয়া জস্স
তম্ ধম্ম-চক্ক-বট্-টিম্
অরিট্ঠ-নেমিম্ নমম্-সামি ॥৪॥
চত্তারি অট্-ঠ দস দোয়
বন্দিয়া জিণবরা চউব্বীসম্
পরমট্ঠ-নিট্ঠি-অট্ঠা,
সিদ্ধা-সিদ্ধিম্ মম দিসন্তু ॥৫॥

❀ বেয়াবচ্চ-গরাণম্ সূত্র ❀

বেয়াবচ্চ-গরাণম্, সন্তি-গরাণম্
সম্ম-দিট্ঠি-সমাহি-গরাণম্
করেমি কাউস্সগ্গম্।

❁ भगवानहं सूत्र ❁

भगवानहं, आचार्यहं
उपाध्यायहं, सर्वसाधुहं

❀ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउ सूत्र ❀

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
 देवसिअ पडिक्कमणे ठाउ ?
 इच्छं-सव्वस्स वि देवसिअ
 दुच्-चिंतिअ, दुब्-भासिअ, दुच्-चिट्-ठिअ
 (इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं, तरस्स)
 मिच्छा मि दुक्कडं ।। १ ।।

ভগবানহম্ সূত্র

ভগবানহম্ আচার্যহম্
উপাধ্যায়হম্ সর্বসাধুহম্

দেবসিঅ পডিক্সমণে ঠাউ সূত্র

ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্!
দেবসিঅ পডিক্সমণে ঠাউ?
ইচ্ছম্-সব্বস্স বি দেবসিঅ,
দুচ্-চিন্তিঅ, দুব্-ভাসিঅ, দুচ্-চিট্-ঠিঅ,
(ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! ইচ্ছম্ তস্স)
মিচ্ছামি দুক্কডম্।। ১।।

इच्छामि ठामि सूत्र

इच्छामि ठामि काउरसग्गं
जो मे देवसिओ (राइओ)
(इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
देवसिअं (राइअं) आलोउ ?
इच्छं ! आलोएमि । जो मे देवसिओ (राइओ)
अइआरो कओ, काइओ, वाइओ,
माणसिओ, उस्-सुत्तो, उम्मग्-गो,
अकप्पो, अकरणिज्-जो,
दुज्झाओ, दुव्वि-चिंतिओ,
अणायारो, अणिच्-छिअव्वो,
असावग-पाउग्गो
नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते,
सुए, सामाइये,
तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं,
पंचण्ह मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं,
चउण्हं सिक्खा-वयाणं,
बारस-विहरस्स, सावग-धम्मस्स
जं खंडिअं, जं विराहिअं
तरस्स, मिच्छा मि दुक्कडं ।।

❀ ইচ্ছামি ঠামি সূত্র ❀

ইচ্ছামি ঠামি কাউস্সগ্নম্
জো মে দেবসিও (রাইও)
(ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্!
দেবসিঅম্ (রাইঅম্) আলোউ?
ইচ্ছম্! আলোএমি। জো মে দেবসিও (রাইও)
অইআরো কও, কাইও, বাইও,
মাণসিও উস্-সুত্তো, উম্-মগ্-গো,
অ-কপ্পো অকরগিজ্-জো,
দুজ্-ঝাও দুব্বি-চিন্তিও,
অণায়ারো অণিচ্-ছি অব্বো,
অসাবগ-পাউল্লো
নাণে, দন্সণে, চরিত্তা-চরিত্তে।
সুএ, সামাইয়ে,
তিণ্-হম্ গুত্তীণম্, চউণ্-হম্ কসায়াণম্
পঞ্চণ্হ-মণু-ব্-বয়াণম্, তিন্-হম্ গুণব্-বয়াণম্।
চউণ্-হম্ সিক্খা-বয়াণম্
ব্রারস-বিহস্স, সাবগ ধম্মস্স
জম্ খণ্ডিঅম্, জম্ বিরাহিঅম্
তস্স মিচ্ছামি দুক্কডম্।

❁ नाणम्मि सूत्र ❁

नाणम्मि दंसणम्मि अ,
चरणम्मि तवम्मि तह य वीरियम्मि
आयरणं आयारो,
इअ एसो पंचहा भणियो ।।१।।
काले विणए बहुमाणे,
उवहाणे तह अनिण्हवणे ।
वंजण अत्थ तदुभए,
अट्टविहो नाणमायारो ।।२।।
निरसंकि य निक्कंखिय
निव्विति - गिच्छा अमूढ - दिट्ठि अ ।
उववूह थिरिकरणे,
वच्छल्ल पभावणे अट्ट ।।३।।
पणिहाण जोग जुत्तो,
पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ।
एस चरित्तायारो
अट्टविहो होइ नायव्वो ।।४।।
बारस - विहम्मि वि तवे,
सब्भिंतर बाहिरे कुसल - दिट्ठे ।
अगिलाइ अणाजीवी,
नायव्वो सो तवायारो ।।५।।

❀ নাগশ্মি সূত্র ❀

নাগশ্মি দন্সগশ্মি অ-
চরণশ্মি তবশ্মি তহ য় বীরিয়শ্মি
আয়রণম্ আয়ারো
ইঅ এসো পঞ্চহা ভণিয়ো ॥১॥

কালে বিণএ ব্রহ্মমাণে,
উবহাণে তহ অনিন্হবণে।

বজ্জন অথ তদুভএ
অট্টিবিহো নাগমায়ারো ॥২॥

নিষসংকিয় নিক্কথিয়
নিব্বিতি গিচ্ছা অমূঢ় দিট্টি অ।

উববুহ থিরিকরণে
বচ্ছল্ল পভাবণে অট্টি ॥৩॥

পণিহাণ জোগজুত্তো
পঞ্চহিম্ সমিইহিম্ তীহিম্ গুত্তিহিম্
এস চরিত্তায়ারো

অট্টিবিহো হোই নায়কো ॥৪॥

ব্রারস বিহশ্মি বিতবে,
সত্ত্বিন্তর ব্রাহিরে কুসল দিটে
অগিলাই অণাজীবী

নায়কো সো তবায়ারো ॥৫॥

अणसण - मूणोअरिआ,
वित्ति संखेवणं रसच्चाओ ।
काय-किलेसो संलीणयाय
बज्झो तवो होई ।।६।।
पायच्छित्तं विणओ,
वेयावच्चं तहेव सज्झाओ
झाणं उस्सग्गो वि अ
अब्भितरओ तवो होइ ।।७।।
अणिगूहिअ-बल-वीरिओ,
परक्कमइ जो जहुत्त-माउत्तो
जुंजइ अ जहाथामं,
नायव्वो वीरियायारो ।।८।।

অণসণ মূণোঅরিআ,
বিত্তি সংখেবণম্ রসচ্চাও
কায়-কিলেসো সন্লীগয়ায়
বজ্জো তবো হোই ।। ৬ ।।

পায়চ্ছিত্তম্ বিণও
বেয়াবচ্চম্ তহেব সজ্জাও
ঝাণম্ উস্সণ্ণো বি-অ
অত্তিন্তর তবো হোই ।। ৭ ।।

অণিগুহিঅ-বল-বীরিও
পরক্কমই জো জহত্ত-মাউত্তো
জুঞ্জই-অ জহাথামম্
নায়কো বীরিয়ায়ারো ।। ৮ ।।

❀ वांदणा सूत्र ❀

इच्छामि खमा-समणो ! वंदितं
जावणिज्-जाए, निसीहि-आए ।। १ ।।
अणुजाणह मे मिउग्-गहं ।। २ ।।
निसीहि,
अहो-कायं-काय-संफासं,
खमणिज्-जो भे ! किलामो !
अप्प-किलन्ताणं बहु-सुभेण भे !
दिवसो वडक्-कन्तो ? (राइय वडक्-कन्ता) ।। ३ ।।
जत्ता भे ? ।। ४ ।। जवणिज् जं च भे ? ।। ५ ।।
खामेमि खमासमणो ! देवसिअं (राइयं) वडक्कमं ।। ६ ।।
आवस्सिआए पडिक्कमामि
खमा-समणाणं, देवसिआए (राइयाए)
आसायणाए तित्ती-सन्न-यराए
जं किंचि मिच्छाए,
मण-दुक्-कडाए, वय-दुक्-कडाए, काय-दुक्-कडाए,
कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए,
सव्व कालियाए, सव्व मिच्छो-वयाराए,
सव्व धम्मा-ईक्-कम-णाए, आसायणाए,
जो मे अइआरो कओ, तरस्स खमासमणो !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ।। ७ ।।

❀ বান্দনা সূত্র ❀

ইচ্ছামি খমা-সমণো ! বন্দিউম্
জাবণিজ্-জাএ, নিসীহি-আএ ॥ ১ ॥
অণুজাণহ মে মিউগ্-গহম্ ॥ ২ ॥
নিসীহি
অহো-কায়ম্ কায়-সম্ফাসম্ ।
খমণিজ্-জো ভে ! কিলামো !
অপ্প-কিলন্-তাণম্ বহু-সুভেণ ভে !
দিবসো বইক্কত্তো ? (রাইয় বইক্-কত্তা) ॥ ৩ ॥
জত্তা ভে ? ॥ ৪ ॥ জবণিজ্-জম্ চ ভে ? ॥ ৫ ॥
খামেমি খমাসমণো ! দেবসিঅম্ (রাইয়ম্) বইক্-কমম্ ॥ ৬ ॥
আবস্সি-আএ পডিক্কমামি
খমা-সমণাণম্, দেবসিআএ (রাইয়াএ)
আসায়ণাএ তিত্তী-সন্ন-য়রাএ
জংকিঞ্চি মিচ্ছাএ
মণ-দুক্-কডাএ বয়-দুক্-কডাএ, কায়-দুক্-কডাএ
কোহাএ, মাণাএ, মায়াএ, লোভাএ
সব্ব-কালিয়াএ, সব্ব-মিচ্ছো-বয়ারাএ
সব্ব-ধম্মা-ইক্-কম-ণাএ আসায়ণাএ
জো মে অইআরো কও তস্স খমাসমণো !
পডিক্কমামি নিন্দামি গরিহামি
অপ্পাণম্ বোসিরামি ॥ ৭ ॥

सात लाख सूत्र

सात लाख पृथ्वीकाय,
सात लाख अप्-काय,
सात लाख तेउकाय,
सात लाख वाउकाय,
दस लाख प्रत्-येक वनस्पति काय,
चौद लाख साधारण वनस्पति काय,
बे लाख बेइन्द्रिय,
बे लाख तेइन्द्रिय,
बे लाख चउरिन्द्रिय,
चार लाख देवता,
चार लाख नारकी,
चार लाख तिर्-यन्च-पंचेन्द्रिय,
चौद लाख मनुष्य,
एवंकारे चोरासी लाख जीवयोनि-माहे,
मारे जीवे जे कोइ जीव हण्-यो होय,
हणाव्-यो होय; हणता प्रत्ये अनु-मोद्-यो होय,
ते सवि हु मन-वचन-कायाए करी
मिच्छा मि दुक्कड़ं ।

সাত লাখ সূত্র

সাত লাখ পৃথ্বীকায়
সাত লাখ অপ্-কায়
সাত লাখ তেউকায়
সাত লাখ বাউকায়
দস লাখ প্রত্-য়েক বনস্পতিকায়
চৌদ লাখ সাধারণ বনস্পতিকায়
বে লাখ বেইন্দ্রিয়,
বে লাখ তেইন্দ্রিয়,
বে লাখ চউরিন্দ্রিয়,
চার লাখ দেবতা,
চার লাখ নারকী,
চার লাখ তির্-য়ন্চ-পঞ্চেন্দ্রিয়,
চৌদ লাখ মনুষ্য,
এবম্-কারে চোরাসী লাখ জীবয়োনি-মাহে,
মারে জীবে জে কোই জীব হণ্-য়ো হোয়,
হণাব্-য়ো হোয়, হণতা প্রত্-য়ে-অনু-মোদ্-য়ো হোয়
তে সবি হু মন, বচন, কায়াএ করী
মিচ্ছামি দুক্কডম্।

❀ अढार पापस्थानक सूत्र ❀

पहले प्राणातिपात,
बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्ता-दान,
चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह,
छट्टे क्रोध, सातमे मान,
आठमे माया, नवमे लोभ,
दशमे राग, अग्यारमे द्वेष,
बारमे कलह, तेरमे अभ्-यारव्यान,
चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति-अरति,
सोलमे पर-परिवाद,
सत्तरमे माया मृषावाद,
अढारमे मिथ्या-त्व-शल्य,
ए अढार पापस्थानकमाहि
मारे जीवे जे कोइ पाप सेव्-यु होय, सेव-राव्-यु होय
सेवता प्रत्ये अनु-मोद्-यु होय ते सवि हु
मन, वचन, कायाए करी
मिच्छा मि दुक्कड़ं ।

❀ অঢ়ার পাপস্থানক সূত্র ❀

পহলে প্রাণাতিপাত,
বীজে মৃষাবাদ, ত্রীজে অদত্তা-দান,
চোথে মৈথুন, পাচমে পরিগ্রহ,
ছট্টে ক্রোধ, সাতমে মান,
আঠমে মায়া, নবমে লোভ,
দশমে রাগ, অগ্য়ারমে দ্বেষ,
বারমে কলহ, তেরমে অভ-য়া-খ্যান,
চৌদমে পৈশুন্য, পন্দরমে রতি-অরতি,
সোলমে পর পরিবাদ
সত্তরমে মায়া-মৃষাবাদ
অঢ়ারমে মিথ্যা-ত্ব-শল্য
এ অঢ়ার পাপস্থানক মাহী
মারে জীবে জে কোই পাপ সেব-যু হোয় সেব-রাব-যু হোয়,
সেবতা প্রত্-য়ে অনু-মোদ্-যু হোয় তে সবি ছ
মন-বচন-কায়াএ করী
মিচ্ছামি দুক্কডম্।

❀ वंदितु सूत्र ❀

वंदितु सव्व सिद्धे,
धम्म-यरिअ अ सव्व-साहू अ ।
इच्छामि पडिक्कमिउं,
सावग-धम्म-आरस्स ।।१।।
जो मे वयाइ-यारो,
नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ।
सुहुमो अ बायरो वा,
तं निंदे तं च गरिहामि ।।२।।
दुविहे परिग्गहम्मि,
सावज्जे बहुविहे अ आरम्भे ।
कारावणे अ करणे,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।३।।
जं बद्ध-मिंदिएहिं,
चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ।
रागेण व दोसेण व,
तं निंदे तं च गरिहामि ।।४।।
आगमणे निग्-गमणे,
ठाणे चंकमणे अणाभोगे ।
अभियोगे अ निओगे,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।५।।
संका कंख विगिच्छा,
पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ।
सम्मत्-तरस्-इआरे,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।६।।
छक्काय समारम्भे,
पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ।
अत्तट्-ठा य परट्-ठा,
उभयट्-ठा चेव तं निंदे ।।७।।

❀ বন্দিত্ব সূত্র ❀

বন্দিত্ব সৰ্ব-সিদ্ধে,
ধন্যা-য়রিএ অ সৰ্ব-সাহ অ ।
ইচ্ছামি পডিক্‌মিউ,
সাবগ-ধন্যাই-আরস্স ॥১॥
জো মে বয়াই-য়ারো
নাগে তহ দন্‌সগে চরিণ্তে অ ।
সুহ্মো অ বায়রো বা,
তম্‌ নিন্দে তম্‌ চ গরিহামি ॥২॥
দুবিহে পরিগ্‌-গহন্মি
সাবজ্জে বহ্‌-বিহে অ আরন্তে ।
কারাবগে অ করণে,
পডিক্‌মে দেসিঅম্‌ সৰ্বম্‌ ॥৩॥
জম্‌ বদ্ধ-মিন্দিএহিম্‌,
চউহিম্‌ কসাএহিম্‌ অল্প-সথেহিম্‌ ।
রাগেণ ব দোসেণ ব,
তম্‌ নিন্দে তম্‌ চ গরিহামি ॥৪॥
আগমণে নিগ্‌গমণে,
ঠাগে চংকমণে, অণাভোগে ।
অভিয়োগে, অ নিওগে,
পডিক্‌মে দেসিঅম্‌ সৰ্বম্‌ ॥৫॥
সংকা কংখ বিগিচ্ছা
পসন্‌স তহ সন্‌থবো কু-লিং‌গীসু ।
সন্মত্‌-তস্স-ইআরে,
পডিক্‌মে দেসিঅম্‌ সৰ্বম্‌ ॥৬॥
ছক্‌-কায় সমারন্তে,
পয়ণে অ পয়াবণে অ জে দোসা ।
অত্তট্‌-ঠা য় পরট্‌-ঠা,
উভয়ট্‌-ঠা চেব তম্‌ নিন্দে ॥৭॥

पंचण्ह मणुव्याणं,
 गुणव्याणं च तिण्ह-मइआरे ।
 सिक्खवाणं च चउण्हं,
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।८।।
 पढमे अणुव्यम्मि,
 थूलग पाणाइवाय विरईओ ।
 आयरिय-मप्पसत्थे,
 इत्थ पमायप्प-संगेणं ।।९।।
 वह बंध-छवि-च्छेए,
 अइभारे भत्त-पाण-वुच्छेए ।
 पढम वयरस्स-इयारे,
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।१०।।
 बीए अणुव्यम्मि,
 परिथूलग-अलियवयण-विरईओ ।
 आयरिय-मप्पसत्थे,
 इत्थ पमायप्प-संगेणं ।।११।।
 सहसा-रहरस्स-दारे,
 मोसु-वएसे अ कूडलेहे अ ।
 बीय वयरस्स-इआरे,
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।१२।।
 तइए अणुव्यम्मि,
 थूलग-परदव्व-हरण-विरईओ ।
 आयरिय-मप्पसत्थे,
 इत्थ पमायप्प-संगेणं ।।१३।।
 तेना-हडप्पओगे,
 तप्पडिरूवे विरुद्ध-गमणे अ ।
 कूड-तूल-कूड-माणे
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।१४।।

পঞ্চণ্-হ মণুব্-ব্যাণম্,
 গুণব্-ব্যাণম্ চ তিণ্হ মইআরে ।
 সিক্খা-ণম্ চ চউণ্-হম্,
 পডিক্কেমে দেসিঅম্ সৰবম্ ॥৮॥
 পটমে অণু-ব্-বয়ন্মি,
 থূলগ-পাণা-ইবায়-বিরইও ।
 আয়রিয়-মপ্-পসথে,
 ইথ পমায়প্-প সংগেণম্ ॥৯॥
 বহ বন্ধ-ছবিচ্-ছেএ,
 অইভারে ভত্ত-পাণ-বুচ্-ছেএ ।
 পটম-বয়স্স-ইয়ারে,
 পডিক্কেমে দেসিঅম্ সৰবম্ ॥১০॥
 বীএ অণুব্-বয়ন্মি
 পরি-থূলগ-অলিয়-বয়ণ-বিরইও ।
 আয়রিয়-মপ্-পসথে,
 ইথ পমায়প্-পসংগেণম্ ॥১১॥
 সহসা রহস্স দারে-
 মোসু-বএসে অ কূড়-লেহে অ ।
 বীয়-বয়স্স-ইআরে,
 পডিক্কেমে দেসিঅম্ সৰবম্ ॥১২॥
 তইএ অণু-ববয়ন্মি,
 থূলগ-পর-দবব-হরণ-বিরইও ।
 আয়রিয়-মপ্প-সথে,
 ইথ পমায়প্প-সংগেণম্ ॥১৩॥
 তেনা-হডপ্-পওগে,
 তপ্পডি-রুবে বিরুদ্ধ-গমণে অ ।
 কূড-তূল-কূড-মাণে,
 পডিক্কেমে দেসিঅম্ সৰবম্ ॥১৪॥

चउत्थे अणुव्वयम्मि,
 निच्चं-परदार-गमण-विरईओ ।
 आयरिय-मप्पसत्थे,
 इत्थ पमायप्प-संगेणं ।।१५।।
 अपरिग्-गहिआ-इत्तर,
 अणंग-विवाह-तिव्व अणुरागे ।
 चउत्थ वयरस्स-इआरे,
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।१६।।
 इत्तो अणुव्वये पंचमम्मि,
 आयरिअ मप्प-सत्थम्मि ।
 परिमाण-परिच्छेए,
 इत्थ पमायप्प-संगेणं ।।१७।।
 धण-धन्न-रिवत्त-वत्थू,
 रूप सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ।
 दुपए चउप्प-यम्मि य,
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।१८।।
 गमणस्स उ परिमाणे,
 दिसासु उड्डं अहे अ तिरिअं च ।
 तुड्ढि सइ-अंतरद्धा,
 पढमम्मि गुणव्वए निंदे ।।१९।।
 मज्जम्मि अ मंसम्मि अ,
 पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ।
 उवभोग-परिभोगे,
 बीयम्मि गुण-व्वए निंदे ।।२०।।
 सच्चित्ते पडिबद्धे,
 अपोलि-दुप्पोलियं च आहारे ।
 तुच्छोसहि-भक्खवणया,
 पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।।२१।।

চউথে অণু-বয়ন্মি,
 নিচ্চম্ পর-দার-গমণ-বিরজ্জিও
 আয়রিয় মপ্প-সথে,
 ইথ পমায়প্প-সংগেগম্ ॥১৫॥
 অপরিগ্-গহিআ-ইত্তর,
 অণংগ-বিবাহ-তিব্ব-অণুরাগে ।
 চউথ-বয়স্স-ইআরে,
 পডিক্কেমে দেসিঅম্ সব্বম্ ॥১৬॥
 ইত্তো অণু-ব্বএ পঞ্চমম্মি,
 আয়রিঅ-মপ্প-সথন্মি ।
 পরিমাণ পরিচ্ছেএ,
 ইথ পমায়প্প-সংগেগম্ ॥১৭॥
 ধণ-ধন-খিত্ত-বথু,
 রুপ্প-সুবল্লে অ কুবিঅ-পরিমাণে ।
 দুপএ চউপ্প-য়ন্মি য়,
 পডিক্কেমে দেসিঅম্ সব্বম্ ॥১৮॥
 গমণস্স উ পরিমাণে,
 দিসাসু উড্ঢম্ অহে অ তিরিঅম্ চ ।
 বুড্ঢি সই-অন্তরদ্ধা,
 পটমন্মি গুণ-ব্বএ নিন্দে ॥১৯॥
 মজ্জন্মি অ মন্সন্মি অ,
 পুপ্ফে অ ফলে অ গন্ধ-মল্লে অ ।
 উবভোগ-পরিভোগে,
 বীয়ন্মি গুণ-ব্বএ নিন্দে ॥২০॥
 সচ্-চিত্তে পডিব্বদ্ধে,
 অপোলি-দুপ্প-পোলিয়ম্ চ আহারে ।
 তুচ্ছোসহি-ভক্খ-ণয়া,
 পডিক্কেমে দেসিঅম্ সব্বম্ ॥২১॥

इंगाली-वण-साडी,
 भाडी-फोडी सुवज्जए कम्मं ।
 वाणिज्जं चेव दंत,
 लक्ख-रस-केस-विस-विसयं ।।२२।।
 एवं खु जंत पिल्लण,
 कम्मं निल्लंछणं च दव-दाणं ।
 सर-दह-तलाय-सोसं,
 असई-पोसं च वज्-जिज्-जा ।।२३।।
 सत्थग्-गि-मुसल जंतग,
 तण-कट्ठे मंत-मूल भेसज्जे ।
 दिन्ने दवाविए वा,
 पड़िक्कमे देसिअं सव्वं ।।२४।।
 न्हाणुव्-वट्ठण-वन्नग,
 विलेवणे-सद्ध-रूव-रस-गंधे ।
 वत्थासण-आभरणे,
 पड़िक्कमे देसिअं सव्वं ।।२५।।
 कंदप्पे कुक्कुईए,
 मोहरि-अहिगरण भोग-अइरित्ते ।
 दंडम्मि अणट्-ठाए,
 तइअम्मि गुणव्वए निंदे ।।२६।।
 तिविहे दुप्पणिहाणे,
 अणवट्-ठाणे तहा सइ-विहूणे ।
 सामाइय वितह-कए,
 पढ्ढमे सिक्खावए निंदे ।।२७।।
 आणवणे पेसवणे,
 सद्धे रूवे अ पुग्-गलक्खेवे ।
 देसा-वगासिअम्मि,
 बीए सिक्खावए निंदे ।।२८।।
 संथा-रुच्चार-विहि
 पमाय तह चेव भोयणाभोए ।

ইংগালী-বণ-সাডী,
 ভাডী-ফোডী-সুবজ্জএ কন্মম্।
 বাণিজ্জম্ চেব দন্ত
 লক্খ-রস-কেস-বিস-বিসয়ম্।।২২।।
 এবম্ খু জন্ত-পিল্লণ
 কন্মম্ নিল্-লন্ছণম্ চ দব-দাণম্।
 সর-দহ-তলায় সোসম্,
 অসঙ্গ-পোসম্ চ বজ্-জিজ্-জা।।২৩।।
 সথগ্-গি-মুসল-জন্তগ-,
 তণ-কট্টে মন্ত-মূল-ভেসজ্জে।
 দিনে দবাৰিএ বা,
 পড়িক্কেমে দেসিঅম্ সব্বম্।।২৪।।
 গ্হাণুব্-বট্টণ-বল্লগ,
 বিলেবণে-সদ-রুব-রস-গন্ধে।
 বথা-সণ-আভরণে,
 পড়িক্কেমে দেসিঅম্ সব্বম্।।২৫।।
 কন্দপ্পে কুক্কুঙ্গএ,
 মোহরি-অহিগরণ-ভোগ-অইরিত্তে।
 দণ্ডম্মি অণট্ট-ঠাএ,
 তইঅম্মি গুণব্বএ-নিদে।।২৬।।
 তিবিহে দুপ্প-পণিহাণে,
 অণবট্ট-ঠাণে, তহা সই-বিহুণে।
 সামাইয়-বিতহ-কএ,
 পটমে সিক্খা-বএ নিদে।।২৭।।
 আণবণে পেসবণে,
 সাদে রুবে অ পুগ্-গলক্খেবে।
 দেসা-বগাসিঅম্মি,
 বীএ সিক্খা-বএ নিদে।।২৮।।
 সন্থা-রুচ্চার-বিহি
 পমায় তহ চেব ভোয়ণাভোএ।

पोसहविहि-विवरीए,
 तईए सिक्खावए निंदे ।।२९।।
 सच्चित्ते निक्खि-वणे,
 पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ।
 काला-इक्कमदाणे,
 चउत्थे सिक्खा-वए निंदे ।।३०।।
 सुहि-एसु अ दुहि-एसु अ,
 जा में असंजएसु अणुकम्पा ।
 रागेण व दोसेण व,
 तं निंदे तं च गरिहामि ।।३१।।
 साहूसु संविभागो,
 न कओ तव-चरण-करण-जुत्तेसु ।
 संते फासुअ दाणे,
 तं निंदे तं च गरिहामि ।।३२।।
 इहलोए परलोए,
 जीविअ-मरणे अ आसंस-पओगे ।
 पंचविहो अइआरो,
 मा मज्झ हुज्ज मरणंते ।।३३।।
 काएण काइअरस्स,
 पडिक्कमे वाइअरस्स वायाए ।
 मणसा माणसिअरस्स,
 सव्वरस्स वयाइ-आरस्स ।।३४।।
 वंदण-वय-सिक्खा-गारवेसु,
 सन्ना-कसाय-दंडेसु ।
 गुत्तीसु अ समिईसु अ,
 जो अइआरो अ तं निंदे ।।३५।।
 सम्मदिट्ठी जीवो,
 जइ वि हु पावं समायरे किंचि ।
 अण्णो सि होइ बंधो,
 जेण न निद्धन्-धसं कुणइ ।।३६।।

পোসহ-বিহি-বিবরীএ ।
 তইএ সিক্খা-বএ নিন্দে ॥২৯॥
 সচ্চিত্তে নিক্খি-বণে,
 পিহিণে ববএস-মচ্ছরে চেব ।
 কালা-ইক্কম-দাণে
 চউথে সিক্খা-বএ নিন্দে ॥৩০॥
 সুহি-এসু অ দুহি-এসু অ,
 জা মে অসন্জএসু অণুকম্পা
 রাগেণ ব দোসেণ ব,
 তম্ নিন্দে তম্ চ গরিহামি ॥৩১॥
 সাহুসু সম্ভিভাগো,
 ন কও তব চরণ-করণ-জুত্তেসু,
 সন্তে ফাসুঅ-দাণে,
 তম্ নিন্দে তম্ চ গরিহামি ॥৩২॥
 ইহ-লোএ পরলোএ,
 জীবিত মরণে অ আসনস পওগে,
 পঞ্চ-বিহো অইআরো,
 মা মজ্ঝা হুজ্জ মরণন্তে ॥৩৩॥
 কাএণ কাইঅস্স,
 পডিক্কেমে বাইঅস্স বায়াএ,
 মণসা মাণসিঅস্স,
 সব্বস্স বয়াই-আরস্স ॥৩৪॥
 বন্দণ-বয়-সিক্খা-গারবেসু
 সন্না-কসায়-দন্ডেসু,
 গুত্তীসু অ সমিদ্দিসু অ,
 জো অইআরো অ তম্ নিন্দে ॥৩৫॥
 সন্ম দিট্ঠী জীবো,
 জই বিহু পাবম্ সমায়রে কিঞ্চিৎ ।
 অপ্পো সি হোই ব্রহ্মো,
 জেণ ন নিদ্ধন্-ধসম্ কুণ্ণই ॥৩৬॥

तं पि हु सपडिक्कमणं,
 सप्परिआवं स-उत्तर-गुणं च ।
 खिप्पं उवसामेइ,
 वाहि व्व सु-सिक्खिओ विज्जो ।।३७।।
 जहा विसं कुट्ठ गयं,
 मंत-मूल-विसारया ।
 विज्जा हणंति मंतेहिं,
 तो तं हवइ निव्विसं ।।३८।।
 एवं अट्ठविहं कम्मं,
 राग-दोस-समज्जिअं ।
 आलोअंतो अ निंदंतो,
 खिप्पं हणइ सुसावओ ।।३९।।
 कय-पावो वि मणुस्सो,
 आलोइअ निंदिअ गुरु-सगासे ।
 होइ अइरेग लहुओ,
 ओहरिअ भरुव्व भारवहो ।।४०।।
 आवस्सएण एएण,
 सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
 दुक्खवाण-मंत किरिअं,
 काही अचिरेण कालेण ।।४१।।
 आलोयणा बहुविहा,
 न य संभरिया पडिक्कमण-काले ।
 मूलगुण उत्तरगुणे,
 तं निंदे तं च गरिहामि ।।४२।।
 तरस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्-तरस्स,
 अब्-भुट्-ठिओ मि आराहणाए,
 विरओ मि विराहणाए तिविहेण पडिक्कंतो,
 वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।४३।।

তম্ পি হ্ সপাডিক্ৰমণম্
 সপ্-পরিআবম্ স-উত্তর-গুণম্ চ ।
 খিগ্নম্ উবসামেই,
 বাহি ব্ৰ সু-সিক্খিও বিজ্জা ॥৩৭॥
 জহা বিসম্ কুট্ঠ, গয়ম্
 মন্ত-মূল-বিসারয়া
 বিজ্জা হণন্তি মন্তেহিম্
 তো তম্ হবই নিবিসম্ ॥৩৮॥
 এবম্ অট্ঠ বিহম্ কন্মম্,
 রাগ-দোস-সমজ্জিম্ ।
 আলোঅন্তো অ নিন্দন্তো,
 খিগ্নম্ হণই সু-সাবও ॥৩৯॥
 কয়-পাবো বি মণুস্সো,
 আলোইঅ নিন্দিঅ গুরু-সগাসে,
 হোই অইরেগ-লহুও,
 ওহরিঅ-ভরুব্ৰ ভার-বহো ॥৪০॥
 আবস্সএণ এএণ,
 সাবও জই বি বহু-রও হোই,
 দুক্খাণ-মন্ত-কিরিঅম্,
 কাহী অচিরেণ কালেণ ॥৪১॥
 আলোয়ণা বহু-বিহা,
 ন য় সন্তরিয়া পডিক্ৰমণ-কালে,
 মূল-গুণ-উত্তর গুণে,
 তম্ নিন্দে তম্ চ গরিহামি ॥৪২॥
 তস্স ধম্মস্স কেবলি পন্নত্-তস্স
 অব্ভুট্-ঠিও মি আরাহণাএ
 বিরও মি বিরাহণাএ তিবিহেণ পডিক্ৰন্তো,
 বন্দামি জিণে চউ-ব্বীসম্ ॥৪৩॥

जावंति चेइआइं,
 उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ।
 सब्बाइं ताइम् वंदे,
 इह संतो तत्थ संताइं ।।४४।।
 जावंत के वि साहू,
 भर-हेर-वय-महा-विदेहे अ ।
 सब्बेसिं तेसिं पणओ,
 तिविहेण तिदंड विरयाणं ।।४५।।
 चिर-संचिय-पाव-पणासणीइ,
 भव-सय सहरस-महणीए ।
 चउविस-जिण विणिग्गय कहाइ,
 वोलंतु मे दिअहा ।।४६।।
 मम मंगल-मरिहन्ता,
 सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
 सम्मदिट्ठी देवा,
 दिंतु समाहिं च बोहिं च ।।४७।।
 पड़ि-सिद्धाणं करणे,
 किच्चाण-म-करणे पडिक्कमणं ।
 अ-सद्दहणे अ तहा,
 विवरीअ-परूवणाए अ ।।४८।।
 खामेमि सब्ब जीवे,
 सब्बे जीवा खमंतु मे ।
 मित्ती मे सब्ब भूएसु,
 वेरं मज्झ न केणई ।।४९।।
 एव-महं आलोइअ,
 निंदिय गरहिअ दुगन्धिअं सम्मं ।
 तिविहेण पड़िक्कंतो,
 वंदामि जिणे चउव्वीसं ।।५०।।

জাবন্তি চেইআইম্,
 উড়্‌তে অ অহে অ তিরিঅ-লোএ অ ।
 সৰ্ব্বাইম্ তাইম্ বন্দে,
 ইহ সন্তো তথ সন্তাইম্ ॥৪৪॥
 জাবন্ত কে বি সাহ্,
 ভর-হের-বয়-মহা-বিদেহে অ ।
 সৰ্বেসিম্ তেসিম্ পণও,
 তিবিহেণ তিদণ্ড বিরয়াণম্ ॥৪৫॥
 চির-সঞ্চিয়-পাব-পণাসণীই,
 ভব-সয়-সহস্স-মহণীএ ।
 চউ বিস-জিণ বিণিগ্-গয় কহাই
 বোলন্তু মে দিঅহা ॥৪৬॥
 মম মঙ্গল মরিহন্তা,
 সিদ্ধা সাহ্ সুঅম্ চ ধম্মো অ,
 সন্ম-দিট্ঠী দেবা,
 দিত্তু সমাহিম্ চ বোহিম্ চ ॥৪৭॥
 পডি-সিদ্ধাণম্ করণে,
 কিচ্চাণ-ম-করণে পডিক্কমণম্ ।
 অ-সদহণে অ তহা,
 বিবরীঅ-পরুণাএ অ ॥৪৮॥
 খামেমি সৰ্ব-জীবে,
 সৰ্বে জীবা খমন্তু মে ।
 মিত্তী মে সৰ্ব-ভূএসু ।
 বেরম্ মজ্ঝা ন কেণই ॥৪৯॥
 এব-মহম্ আলোইঅ,
 নিন্দিয়-গরহিঅ-দুগন্‌ছিঅম্ সন্মম্ ।
 তিবিহেণ পডিক্কন্তো,
 বন্দামি জিণে চউব্বীসম্ ॥৫০॥

❁ आयरिय उवज्झाए सूत्र ❁

आयरिय उवज्झाए
सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ
जे मे केइ कसाया
सव्वे तिविहेण खामेमि ।।१।।
सव्वस्स समण-संघस्स
भगवओ अंजलिं-करिअ सीसे
सव्वं खमा-वइत्ता
खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।२।।
सव्वस्स जीव रासिस्स
भावओ धम्म-निहिअ-निय-चित्तो
सव्वं खमा-वइत्ता
खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।३।।

✧ আয়রিয় উবজ্বাএ সূত্র ✧

আয়রিয় উবজ্বাএ
সিসে সাহন্মিএ কুল-গণে অ
জে মে কেই কসায়া
সবের তিবিহেণ-খামেমি ॥১॥

সববস্স-সমণ-সংঘস্স,
ভগবও-অন্-জলিম্-করিঅ-সীসে ।

সববম্ খমা-বইত্তা,
খমামি সববস্স অহয়ম্ পি ॥২॥

সববস্স জীব-রাসিস্স,
ভাবও ধম্ম-নিহিঅ-নিয়-চিত্তো
সববম্ খমা-বইত্তা,
খমামি সববস্স অহয়ম্ পি ॥৩॥

❀ नमोऽस्तु वर्धमानाय सूत्र ❀

(मात्र पुरुषो के लिए)
नमोऽस्तु वर्धमानाय,
स्पर्ध-मानाय कर्मणा,
तज्-जया-वाप्त-मोक्षाय,
परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ।।१।।
येषां विकचार-विन्द-राज्या,
ज्या-यः क्रम कमला-वलिं दधत्-या,
सदृशैः-रिति संगतं प्रशस्यं,
कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ।।२।।
कषाय-तापार्-दित जन्तु निर्-वृतिं
करोति यो जैन मुखाम्बु-दोद-गतः,
स शुक्र-मासोद-भव-वृष्टि-सन्निभो,
दधातु तुष्टिं मयि विस्तरा गिराम् ।।३।।

❀ विशाल लोचन सूत्र ❀

(मात्र पुरुषो के लिए)
विशाल-लोचन-दलं
प्रोद-यद्-दंतांशु केसरम्
प्रातर्वीर जिनेन्द्रस्य,
मुख-पद्मं पुनातु वः ।।१।।

❖ नमोस्तु वर्धमानाय सूत्र ❖

(केवलमात्र पुरुषदेर जन्य)
नमोस्तु वर्धमानाय
स्पर्ध-माणाय कर्मणा
तज्-जया-बापु मोक्षाय,
परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥
येषाम् विकचार-बिन्द-राज्या
ज्या-यः क्रम कमला-बलिम् दधत्या,
सदृशै-रिति संगतम् प्रशस्यम्,
कथितम् सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥
कषाय तापार्-दित-जस्तु-निर्-वृतिम्,
करोति यो जैन-मुखाम्बु-दोद्-गतः,
स शुक्र-मासोद्-भव-वृष्टि-सन्निभो,
दधातु तूष्णिम् मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

❖ विशाल लोचन सूत्र ❖

(केवलमात्र पुरुषदेर जन्य)
विशाल-लोचन-दलम्
प्रोद्-यद्-दन्तान्शु-केसरम्
प्रातर्वीर-जिनेन्द्रस्य,
मुखपद्मम् पुनातु वः ॥१॥

येषा-मभिषेक कर्म कृत्वा,
मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेन्द्राः,
तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं
प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥१२॥
कलंक-निर्मुक्त ममुक्त पूर्णतं,
कुतर्क राहु ग्रसनं सदोदयम्
अपूर्वचन्द्रं जिनचंद्र-भाषितं
दिनागमे नौमि बुधैर् नमस्कृतम् ॥१३॥

❀ श्रुतदेवता की स्तुति ❀

(मात्र पुरुषो के लिए)
सुअदेवया भगवई,
नाणावरणीय-कम्म संघायं;
तेसिं खवेउ सययं;
जेसिं सुअ सायरे भत्ती ॥१४॥

(मात्र महिलाओं के लिए)
कमलदलविपुलनयना
कमलमुखी कमलगर्भ सम गौरी;
कमले स्थिता भगवती,
ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥१५॥

য়েষা-মভিষেক-কর্ম কৃত্বা,
মত্তা হর্ষভরাত্ সুখম্ সুরেন্দ্রাঃ
তৃণমপি গণয়ন্তি নৈব নাকম্,
প্রাতঃ সন্তু শিবায় তে জিনেন্দ্রাঃ ॥২॥
কলঙ্ক-নির্মুক্ত মমুক্ত পূর্ণতম্,
কুতর্ক-রাহু গ্রসনম্ সদোদয়ম্
অপূর্ব চন্দ্রম্-জিনচন্দ্র-ভাষিতম্,
দিনাগমে নৌমি বুধৈর্ নমস্কৃতম্ ॥৩॥

❀ শ্রুত দেবতা-র স্তুতি ❀

(কেবলমাত্র পুরুষদের বলার জন্য)

সুঅদেবয়া ভগবই,
নাণাবরণীয়-কস্ম-সংঘায়ম্
তেসিম্ খবেউ সয়য়ম্,
জেসিম্ সুঅ সায়ে ভত্তী ॥১॥

(কেবলমাত্র মহিলাদের বলার জন্য)

কমল-দল-বিপুল-নয়না,
কমল-মুখী কমল-গর্ভ-সম-গৌরী
কমলে স্থিতা ভগবতী,
দদাতু শ্রুতদেবতা সিদ্ধিম্ ॥১॥

❁ भवन देवता की स्तुति ❁

ज्ञानादिगुण-युतानां,
नित्यं स्वाध्याय संयम रतानाम्;
विदधातु भवनदेवी,
शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥

❁ क्षेत्रदेवता की स्तुति ❁

(मात्र पुरुषो के लिए)
जिसे खित्ते साहू,
दंसण नाणेहिं चरण-सहिण्हिं;
साहंति मुक्खमग्गं,
सा देवी हरउ दुरिआइं ॥१॥

(पुरुष एवं महिला के लिए)
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य,
साधुभिः साध्यते क्रिया,
सा क्षेत्रदेवता नित्यं,
भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

ভবন দেবতা-র স্তুতি

জ্ঞানাদি গুণ-যুতানাম্
নিত্যম্ স্বাধ্যায় সঁয়ম রতানাম্
বিদধাতু ভবনদেবী
শিবম্ সদা সর্ব সাধুনাম্ ॥ ১ ॥

ক্ষেত্র দেবতা-র স্তুতি

(কেবলমাত্র পুরুষদের বলার জন্য)
জীসে থিত্তে সাহু, দন্সগ
নাগেহিম্ চরণ-সহিএহিম্
সাহন্তি মুক্খ মগ্গম্,
সা দেবী হরউ দুরি-আইম্ ॥ ১ ॥

(পুরুষ ও স্ত্রী উভয়ের জন্য)
য়স্যাঃ ক্ষেত্রম্ সমাশ্রিত্য
সাধুভিঃ সাধ-য়তে ত্রিগ্য়া
সা ক্ষেত্র-দেবতা নিত্যম্
ভুয়ান্নঃ সুখদায়িনী ॥ ১ ॥

❧ अट्टाङ्गजेसु सूत्र ❧

अङ्-ढाङ्गजेसु, दीव-समुद्-देसु,
पनरससु कम्म-भूमिसु,
जावंत केवि साहू,
रय-हरण-गुच्छ-पडिग्गह-धारा, ।।१।।
पंच-महव्वय-धारा,
अट्-ठारस-सहरस्स-सीलंग-धारा,
अक्खुया-यार-चरित्ता,
ते सव्वे सिरसा मणसा, मत्थएण वंदामि ।।२।।

❧ वरकनक सूत्र ❧

(मात्र पुरुषो के लिए)
वर-कनक-शंख-विद्-रुम,
मरकत-घन-सन्निभं विगत-मोहं ।
सप्तति शतं जिनानां,
सर्वामर पूजितं वंदे ।।१।।

❀ অড্‌টাইজ্‌জ্‌সু সূত্র ❀

অড্‌-টাইজ্‌জ্‌সু, দীব সমুদ্‌-দেসু
পনরসসু, কন্ম ভূমিসু,
জাবন্ত কেবি সাহ
রয়-হরণ-গুচ্ছ-পডিগ্গহ ধারা ॥১॥
পঞ্চ-মহবয়-ধারা
অট্‌-ঠারস-সহস্স-সীলংগ-ধারা
অক্‌খুয়া-য়ার-চরিত্তা
তে সৰ্বে সিরসা মণসা মথএণ বন্দামি ॥২॥

❀ বরকনক সূত্র ❀

(কেবলমাত্র পুরুষদের জন্য)
বর-কনক-শঙ্খ-বিদ্‌-রুম
মরকত-ঘন-সন্নিভম্‌ বিগত-মোহম্‌
সপ্ততি-শতম্‌ জিনানাম্‌
সৰ্বামর-পূজিতম্‌ বন্দে ॥১॥

❀ लघु शान्ति सूत्र ❀

शान्तिं शान्ति-निशान्तं,
शान्तं शान्ता शिवं नमस्कृत्-य ।
स्तोतुः शान्ति-निमित्तं,
मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ।।१।।
ओमिति निश्चित-वचसे,
नमो नमो भगवतेऽर्-हते पूजाम् ।
शान्तिजिनाय जयवते,
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ।।२।।
सकला-ति-शेषक-महा,
सम्पत्ति-समन्विताय शर्याय ।
त्रैलोक्य-पूजिताय च,
नमो नमः शान्तिदेवाय ।।३।।
सर्वामर-सुसमूह,
स्वामिक-सम्पूजिताय न जिताय ।
भुवन-जन-पालनो-द्यत,
तमाय सततं नमस्तस्मै ।।४।।
सर्व-दुरितौघ-नाशन,
कराय सर्वाशिव-प्रशमनाय ।
दुष्ट-ग्रह-भूत-पिशाच,
शाकिनीनां प्रमथनाय ।।५।।
यस्येति नाम मन्त्र-
प्रधान-वाक्यो-प-योग-कृत-तोषा ।
विजया कुरुते जन-हित-
मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ।।६।।

❀ লঘু-শান্তি সূত্র ❀

শান্তি শান্তি-নিশান্তম্
শান্তম্ শান্তা-শিবম্ নমস্-কৃত্য
স্তোতুঃ শান্তি-নিমিত্তম্,
মন্ত্র-পদৈঃ শান্তয়ে-স্তৌমি ॥১॥
ওমিতি নিশ্চিত-বচসে,
নমো নমো ভগবতে-হতে পূজাম্।
শান্তি-জিনায় জয়বতে,
য়শস্বিনে স্বামিনে দমিনাম্ ॥২॥
সকলা-তি-শেষক-মহা-
সম্পত্তি-সমম্বিতায় শস্যায়।
ত্রৈলোক্য-পূজিতায় চ,
নমো নমঃ শান্তি-দেবায় ॥৩॥
সর্বামর-সুসমূহ
স্বামিক-সম্ পূজিতায় ন জিতায়।
ভুবন-জন-পালনোদ্যত
তমায় সততম্ নমস্ তস্মৈ ॥৪॥
সর্ব দুরি-তৌঘ-নাশন-
করায়-সর্বা-শিব-প্রশমনায়।
দুষ্ট-গ্রহ-ভূত-পিশাচ
শাকিনীনাম্ প্রমথনায় ॥৫॥
য়স্যেতি নাম মন্ত্র-
প্রধান বাক্যো-প-যোগ-কৃত-তোষা।
বিজয়া কুরুতে জন-হিত-
মিতি চ নুতা নমত তম্ শান্তি ॥৬॥

भवतु नमस्ते भगवति !
 विजये ! सुजये ! परापरै-रजिते !
 अपराजिते ! जगत्यां,
 जयतीति जयावहे ! भवति । ॥७॥
 सर्वस्यापि च संघस्य,
 भद्र-कल्याण-मंगल-प्रददे ! ।
 साधूनां च सदा शिव,
 सु-तुष्टि-पुष्टि-प्रदे ! जीयाः । ॥८॥
 भव्यानां कृतसिद्धे !
 निर्-वृति-निर्वाण-जननि ! सत्त्वानाम् ।
 अभय-प्रदान-निरते !
 नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम् । ॥९॥
 भक्तानां जन्तूनां,
 शुभावहे ! नित्य-मुद्यते ! देवि !
 सम्यग्दृष्टीनां धृति-
 रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय । ॥१०॥
 जिनशासन-निरतानां,
 शांति-नतानां च जगति जनतानाम् ।
 श्री संपत्-कीर्ति-यशो-वर्धनि !
 जय देवि ! विजयस्व । ॥११॥
 सलिलानल-विष-विषधर,
 दुष्टग्रह-राज-रोग-रण-भयतः ।
 राक्षस-रिपुगण-मारी-
 चौरेति-श्वापदा-दिभ्यः । ॥१२॥
 अथ रक्ष रक्ष सुशिवं,
 कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ।

ভবতু নমস্তে ভগবতি !
 বিজয়ে ! সুজয়ে ! পরাপরৈ-রজিতে !
 অপরাজিতে ! জগত্যাং,
 জয়তীতি জয়া-বহে ! ভবতি ॥৭॥
 সর্বস্যাপি চ সংঘস্য
 ভদ্র-কল্যাণ-মঙ্গল-প্রদদে !
 সাধুনাম্ চ সদা শিব-
 সু-তুষ্টি-পুষ্টি-প্রদে ! জীয়াঃ ॥৮॥
 ভব্যানাম্ কৃত-সিদ্ধে !
 নিৰ্-বৃতি-নিৰ্বাণ-জননি ! সত্ত্বানাম্ !
 অভয়-প্রদান-নিরতে !
 নমোস্তু স্বস্তি-প্রদে ! তুভ্যম্ ॥৯॥
 ভক্তানাম্ জন্তুনাম্
 শুভা-বহে ! নিত্য-মুদ্যতে দেবি !
 সম্যগ্-দৃষ্টীনাম্ ধৃতি-
 রতি-মতি-বুদ্ধি-প্রদানায় ॥১০॥
 জিন-শাসন-নিরতানাম্,
 শাস্তি-নতানাম্ চ জগতি জনতা-নাম্ ।
 শ্রী-সম্পত্-কীর্তি-য়শো-বৰ্ধনি !
 জয় দেবি ! বিজয়স্ব ॥১১॥
 সলিলা-নল-বিষ-বিষধর-
 দুষ্ট-গ্রহ-রাজ-রোগ-রণ-ভয়তঃ ।
 রাক্ষস-রিপু-গণ-মারী-
 চৌরেতি-শ্বাপদা-দিভ্যঃ ॥১২॥
 অথ রক্ষ রক্ষ সু-শিবম্
 কুরু কুরু শান্তিম্ চ কুরু কুরু সদেতি

तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,
 कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम् ।।१३।।
 भगवति ! गुणवति ! शिव-शान्ति,-
 तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ।
 ओमिति नमो नमो, ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ हः
 यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ।।१४।।
 एवं यन्नामाक्षर-
 पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ।
 कुरुते शान्तिं नमतां,
 नमो नमः शान्तये तस्मै ।।१५।।
 इति पूर्वसूरि-दर्शित
 मन्त्रपद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः ।
 सलिलादि-भय-विनाशी,
 शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ।।१६।।
 यश्चैनं पठति सदा,
 शृणोति भावयति वा यथा-योगम्
 स हि शान्तिपदं यायात्,
 सूरिः श्रीमान-देवश्च ।।१७।।
 उपसर्गाः क्षयं यान्ति,
 छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
 मनः प्रसन्नतामेति,
 पूज्यमाने जिनेश्वरे ।।१८।।
 सर्व-मंगल-मांगल्यं,
 सर्व-कल्याण कारणम् ।
 प्रधानं सर्व-धर्माणां,
 जैनं जयति शासनम् ।।१९।।

তুষ্টিম্ কুরু কুরু পুষ্টিম্
 কুরু কুরু স্বস্তিম্ চ কুরু কুরু ত্বম্ ॥১৩॥
 ভগবতি ! গুণবতি ! শিব-শান্তি-
 তুষ্টি-পুষ্টি-স্বস্তীহ কুরু কুরু জনানাম্ ।
 ওমিতি নমো নমো হ্রাঁ হ্রীঁ হ্রুঁ হ্রঃ
 যঃ ক্ষঃ হ্রীঁ ফুট্ ফুট্ স্বাহা ॥১৪॥
 এবম্ যন্মামাক্ষর-
 পুরস্সরম্ সনস্তুতা জয়াদেবী
 কুরুতে শান্তিম্ নমতাম্
 নমো নমঃ শান্তয়ে তস্মৈ ॥১৫॥
 ইতি পূর্ব-সূরি-দর্শিত
 মন্ত্র পদ-বিদর্ভিতঃ স্তবঃ শান্তেঃ ।
 সলিলাদি-ভয়-বিনাশী
 শান্ত্যাদি করশ্চ ভক্তিমতাম্ ॥১৬॥
 যশ্চৈনম্ পঠতি সদা,
 শ্রুণোতি ভাবয়তি বা যথা-যোগম্ ।
 স হি শান্তি-পদম্ যায়াত্,
 সূরিঃ শ্রীমান-দেবশ্চ ॥১৭॥
 উপসর্গাঃ ক্ষয়ম্ যান্তি,
 ছিদ্যন্তে বিঘ্নবল্লয়ঃ
 মনঃ প্রসন্নতা-মেতি-
 পূজ্যমানে জিনেশ্বরে ॥১৮॥
 সর্ব-মঙ্গল-মঙ্গল্যম্,
 সর্ব-কল্যাণ-কারণম্ ।
 প্রধানম্ সর্ব ধর্মাণাম্
 জৈনম্ জয়তি শাসনম্ ॥১৯॥

❀ चउक्कसाय सूत्र ❀

चउक्-कसाय-पडिमल्-लुल्-लूरणु,
दुज्जय-मयण-बाण-मुसु-मूरणु ।
सरस पियंगु-वन्नु गय गामिउ,
जयउ पासु भुवणत्-तय-सामिउ ।।१।।

जसु तणु-कंति-कडप्प-सिणिद्धउ,
सोहइ फणि-मणि-किरणा-लिद्धउ;
नं नव-जलहर-तडिल्लय-लंछिउ,
सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ।।२।।

❀ চউক্-কসায় সূত্র ❀

চউক্-কসায়-পডিমল্-লুল্-লূরণু,
দুজ্জয়-ময়ণ-বাণ-মুসু-মূরণু
সরস-পিয়ংগু-বন্নু-গয় গামিউ,
জয়উ পাসু ভুবণত্-তয় সামিউ ॥১॥

জসু-তণু কন্তি-কডপ্প-সিগিদ্ধউ,
সোহই ফণি-মণি-কিরণা-লিদ্ধউ ;
নম্ নব জলহর তডিল্পয়-লন্ছিউ,
সো জিণু পাসু পয়চ্-ছউ বন্ছিউ ॥২॥

भरहेसर सूत्र

भरहे-सर बाहु-बली, अभय-कुमारो अ ढंढण-कुमारो;

सिरिओ अणिआ-उत्तो, अइमुत्तो नाग-दत्तो अ ।। १ ।।

मेअज्ज थूलि-भदो वयर-रिसी नंदिसेण सिंहगिरी;

कय-वन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि कर-कंडू ।। २ ।।

हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महा-साल सालि-भदो अ;

भदो दसन्न-भदो, पसन्न-चंदो अ जस-भदो ।। ३ ।।

जंबु-पहु वंक-चूलो, गय-सुकुमालो अवंति-सुकुमालो ;

धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ।। ४ ।।

अज्ज-गिरी अज्ज-रक्खिअ अज्ज-सुहत्थी उदायगो मणगो

कालय-सूरि संबो, पज्जुन्नो मूल-देवो अ ।। ५ ।।

पभवो विण्हु-कुमारो, अद-दकुमारो दढप्-पहारी अ;

सिज्जंस कूर-गडू अ, सिज्जंभव मेह-कुमारो अ ।। ६ ।।

एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुण-गणेहिं संजुत्ता;

जेशिं नामग्-गहणे, पावप्-पबंधा विलयं जंति ।। ७ ।।

ভরাহেঙ্গর সূত্র

ভরাহে-সর ব্রাহ্ম-বলী, অভয়-কুমারো অ চন্টণ-কুমারো

সিরিও অগিআ-উত্তো, অইমুত্তো নাগ-দত্তো অ ॥১॥

মেঅজ্জ খুলি-ভদ্বো, বয়র-রিসী নন্দিসেণ সীহগিরী

কয়-বন্বো অ সুকোসল, পুভরিও কেসি কর-কভু ॥২॥

হল্ল বিহল্ল সুদন্সণ, সাল মহা-সাল সালি-ভদ্বো অ

ভদ্বো দসন্ন-ভদ্বো, পসন্ন চন্দো অ জস-ভদ্বো ॥৩॥

জম্বুপহ বন্ধ-চুলো, গয়-সুকুমালো অবন্তি-সুকুমালো

ধন্বো ইলাইপুত্তো, চিলাইপুত্তো অ ব্রাহ্ম-মুণী ॥৪॥

অজ্জ-গিরী অজ্জ-রকখিঅ, অজ্জ-সুহত্থী উদায়গো মণগো,

কালয়-সূরী সন্মো, পজ্জুন্বো মূল-দেবো অ ॥৫॥

পভবো বিণ্ণ-কুমারো, অদ্বকুমারো দট্প-পহারী অ,

সিজ্জনস কুর-গডু অ, সিজ্জম্-ভব মেহ-কুমারো অ ॥৬॥

এমাই মহাসত্তা, দিত্তু সুহম্ গুণ-গণেহিম্ সঞ্জুত্তা,

জেসিম্ নামগ্-গহণে, পাবপ্-পবন্থা বিলয়ম্ জন্তি ॥৭॥

सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती;
नमयासुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य ।।८।।
राइमई रिसिदत्ता, पउमावई अंजणा सिरीदेवी;
जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी ।।९।।
बंभी सुंदरी रुपिणी, रेवई कुंती सिवा जयंती अ;
देवई दोवई धारणी, कलावई पुप्-फचूला य ।।१०।।
पउमावई अ गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य;
जंबूवई सच्चभामा, रुपिणी कण्-हट्ट महिसीओ ।।११।।
जक्खा य जक्ख-दिन्ना, भूआ तह चेव भूअ-दिन्ना य ;
सेणा वेणा रेणा, भइणीओ थूलि-भद्दस्स ।।१२।।
इच्-चाइ महासइयो, जयंति अकलंक सील-कलियाओ;
अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ।।१३।।

সুলসা চন্দনবালা, মণোরমা ময়ণরেহা দময়ন্তী,
নময়াসুন্দরী সীয়া, নন্দা ভদ্রা সুভদ্রা য় ॥৮॥
রাইমঈ রিসিদন্তা, পউমাবঈ অন্জণা সিরীদেবী;
জিট্ঠ সুজিট্ঠ মিগাবঈ, পভাবঈ চিল্লণাদেবী ॥৯॥
বন্তী সুন্দরী রুপ্পিণী, রেবই কুন্তী সিবা জয়ন্তী অ,
দেবই দোবই ধারণী, কলা-বই পুপ্-ফচুলা য় ॥১০॥
পউমাবঈ অ গোরী, গন্ধারী লক্-খমণা সুসীমা য়,
জম্বুবঈ সচ্চভামা, রুপ্পিণী কণ্ঠট্-ঠ মহিসীও ॥১১॥
জক্খা য় জক্খ-দিম্মা, ভুআ তহ চেব ভুঅ-দিম্মা য়,
সেণা বেণা রেণা, ভইণীও থুলি-ভদম্স ॥১২॥
ইচ্চাই মহাসইয়ো জয়ন্তি অকলঙ্ক-সীল-কলিয়াও,
অজ্জ বি বজ্জই জাসিম্, জস-পডহো তিহঅণে সয়লে ॥১৩॥

❀ मन्नह जिणाणं सूत्र ❀

मन्नह जिणाणमाणं,
मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।
छव्विह-आवरस्सयम्मि,
उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥१॥

पव्वेसु पोसहवयं,
दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।
सज्झाय नमुक्कारो,
परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥

जिण-पूआ जिण-थुणणं,
गुरु-थुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
ववहारस्स य सुद्धी,
रह-जत्ता तित्थ-जत्ता य ॥३॥

उवसम-विवेग-संवर,
-भासा-समिई छज्जीव-करुणा य ।
धम्मिअ-जण-संसग्गो,
करण-दमो चरण परिणामो ॥४॥

संघोवरि बहुमाणो,
पुत्थय-लिहणं पभावणा तित्थे ।
सइ-ढाण किच्चमेअं,
निच्चं सुगुरु-वएसेणं ॥५॥

❀ মনহ জিণাণম্ সূত্র ❀

মনহ জিণাণমাণম্,
মিচ্ছম্ পরিহরহ ধরহ সম্মত্তম্
ছবিহ আবস্সয়ন্মি,
উজ্জুত্তো হোই পই-দিবসম্ ॥১॥

পৰ্বেসু পোসহবয়ম্,
দাণম্ সীলম্ তবো অ ভাবো অ,
সজ্জায় নমুঙ্কারো,
পরো-বয়ারো অ জয়ণা অ ॥২॥

জিণপূআ জিণ-থুণণম্,
গুরু থুঅ সাহন্মি-আণ বচ্ছল্লম্
ববহারস্স য় সুদ্ধী
রহ জত্তা তিথ জত্তা য় ॥৩॥

উবসম বিবেগ সম্বর,
ভাসা-সমিঈ ছজ্-জিব-করণা য়
ধন্মিঅ জণ সন্সগ্গো,
করণ-দমো চরণ পরিণামো ॥৪॥

সংঘোবরি ব্হমাণো,
পুথয়-লিহণম্ পভাবণা তিথে
সড্ঢাণ কিচ্ছ-মেঅম্,
নিচ্ছম্ সুগুরু-বএসেণম্ ॥৫॥

❀ सकल तीर्थ सूत्र ❀

सकल तीर्थ वंदु करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड;
पहेले स्वर्गे लाख बत्रीस, जिनवर चैत्य नमु निशदिश ॥१॥
बीजे लाख अट्-ठावीस कह-या, त्रीजे बार लाख सद्-दहया;
चोथे स्वर्गे अड लाख धार, पांचमे वंदु लाख ज चार ॥२॥
छट्टे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीस सहस प्रासाद;
आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमे वंदु शत चार ॥३॥
अग्यार बारमे त्रणशे सार, नवग्रैवेयके त्रणशे अढार;
पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिका वली ॥४॥
सहस सत्ताणु त्रेवीश सार, जिनवर भवनतणो अधिकार,
लांबा सो जोजन, विस्तार-पचास, ऊँचा-बहोतेर धार ॥५॥
एकसो एशी बिंब प्रमाण, सभा सहित एक चैत्ये जाण,
सो क्रोड बावन क्रोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौआल ॥६॥
सातशे उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमु त्रण काल,
सात क्रोड ने बहोतेर लाख, भवनपतिमा देवल भाख ॥७॥
एकसो एशी बिम्ब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण,
तेरशे क्रोड नेव्-यासी क्रोड, साठ लाख वंदु कर जोड ॥८॥
बत्रीशे ने ओगण-साठ, तिच्छा-लोकमा चैत्यनो पाठ,
त्रण लाख एकाणु हजार, त्रणशे वीस ते बिंब जुहार ॥९॥

❀ ਸਕਲ ਤੀਰਥ ਸੂਤਰ ❀

ਸਕਲ ਤੀਰਥ ਬੰਦੂ ਕਰਜੋਡ, ਜਿਨਬਰ ਨਾਮੇ ਮੰਗਲ ਕੋਡ,
ਪਹੇਲੇ ਸ੍ਵਰ্ਗੇ ਲਾਖ ਬੁਤੀਸ, ਜਿਨਬਰ ਚੈਤ੍ਯ ਨਮੁ-ਨਿਸ਼ਦਿਸ਼ ॥੧॥

ਬੀਝੇ ਲਾਖ ਅਟ੍-ਠਾਵੀਸ ਕਹ੍-ਯਾ, ਤੀਝੇ ਬਾਰ ਲਾਖ ਸਦ੍-ਦਹ੍ਯਾ,
ਚੋਥੇ ਸ੍ਵਰ੍ਗੇ ਅਡ ਲਖ ਧਾਰ, ਪਾਂਚਮੇ ਬੰਦੂ ਲਾਖ ਜ ਚਾਰ ॥੨॥

ਛੁਟ੍ਥੇ ਸ੍ਵਰ੍ਗੇ ਸਹਸ ਪਚਾਸ, ਸਾਤਮੇ ਚਾਲੀਸ ਸਹਸ ਪ੍ਰਾਸਾਦ,
ਆਠਮੇ ਸ੍ਵਰ੍ਗੇ ਛ ਹਜ਼ਾਰ, ਨਬ-ਦਸ਼ਮੇ ਬੰਦੂ ਸ਼ਤਚਾਰ ॥੩॥

ਅਗ੍ਧਾਰ ਬਾਰਮੇ ਟ੍ਰਣਸ਼ੇ ਸਾਰ, ਨਬ ਥ੍ਰੇਬੇਯਕੇ ਟ੍ਰਣਸ਼ੇ ਅਟਾਰ
ਪਾਂਚ ਅਨੁਬਰ ਸਰ੍ਵੇ ਮਲੀ, ਲਾਖ ਚੋਰਾਸ਼ੀ ਅਧਿਕਾ ਬਲੀ ॥੪॥

ਸਹਸ ਸਤ੍ਰਾਗੁ ਟ੍ਰੇਵੀਸ਼ ਸਾਰ, ਜਿਨਬਰ ਭਬਨਤਗੋ ਅਧਿਕਾਰ,
ਲਾਸ਼੍ਵਾ ਸੋ-ਜੋਯਨ, ਬਿਸ਼ਤਾਰ ਪਚਾਸ, ਊਂਚਾ-ਬੁਹੋਤੇਰ ਧਾਰ ॥੫॥

ਅਕਸੋ ਅਸ਼ੀ ਬਿਸ਼੍ਵ ਪ੍ਰਮਾਗ, ਸਭਾ ਸਹਿਤ ਅਕ ਚੈਤ੍ਯੇ ਜਾਗ,
ਸੋ ਕ੍ਰੋਡ ਬਾਬਨ ਕ੍ਰੋਡ ਸੰਤਾਲ, ਲਾਖ ਚੋਰਾਗੁ ਸਹਸ ਚੋਆਲ ॥੬॥

ਸਾਤਸ਼ੇ ਉਪਰ ਸਾਠ ਬਿਸ਼ਾਲ, ਸਬਿ ਬਿਸ਼੍ਵ ਪ੍ਰਯਮੁ ਟ੍ਰਣ ਕਾਲ,
ਸਾਤ ਕ੍ਰੋਡ ਨੇ ਬੁਹੋਤੇਰ ਲਾਖ, ਭਬਨ-ਪਤਿਮਾ ਦੇਬਲ ਭਾਖ ॥੭॥

ਅਕਸੋ ਅਸ਼ੀ ਬਿਸ਼੍ਵ ਪ੍ਰਮਾਗ, ਅਕ ਅਕ ਚੈਤ੍ਯੇ ਸੰਯਯਾ ਜਾਗ,
ਤੇਰਸ਼ੇ ਕ੍ਰੋਡ ਨੇਬ੍-ਯਾਸੀ ਕ੍ਰੋਡ, ਸਾਠ ਲਾਖ ਬੰਦੂ ਕਰ ਜੋਡ ॥੮॥

ਬੁਤੀਸ਼ੇ ਨੇ ਓਗਣ-ਸਾਠ, ਤੀਛ੍ਰਾ-ਲੋਕਮਾ ਚੈਤ੍-ਯਨੋ ਪਾਠ,
ਟ੍ਰਣਲਾਖ ਅਕਾਨੁ ਹਜ਼ਾਰ, ਟ੍ਰਣਸ਼ੇ ਵੀਸ ਤੇ ਬਿਸ਼੍ਵ ਯੁਹਾਰ ॥੯॥

व्यंतर ज्योतिषीमा वली जेह, शाश्वता जिन वंदु तेह,
ऋषभ चन्द्रानन वारिषेण, वर्धमान नामे गुणसेण ।।१०।।

समेतशिखर वंदु जिन वीश, अष्टापद वंदु चोवीस,
विमलाचल ने गढ़ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ।।११।।

शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार,
अंतरीक्ख वरकाणो पास, जीरावलो ने थंभण पास ।।१२।।

गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमु गुणगेह,
विहरमान वंदु जिन वीश, सिद्ध अनंत नमु निश-दिश ।।१३।।

अढी-द्वीपमा जे अणगार, अढार सहरस्स शीलांगना धार,
पंच महाव्रत समिति सार, पाले पलावे पंचाचार ।।१४।।

बाह्-य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदु गुण-मणि-माल,
नित नित उठी कीर्ति करु, 'जीव' कहे भवसायर तरु ।।१५।।

বয়স্কর জ্যোতিষীমা বলী জেহ, শাস্ততা জিন বন্দু তেহ,
ঋষভ চন্দ্রানন বারিষেণ, বর্ধমান নামে গুণ সেণ ॥১০॥

সমেতশিখর বন্দু জিনবীশ, অষ্টাপদ বন্দু চোবীস,
বিমলাচল নে গড় গিরনার, আবু উপর জিনবর জুহার ॥১১॥

শঙ্খেশ্বর কেসরিয়ো সার, তারঙ্গে শ্রী অজিত জুহার,
অন্তরীক্খ বরকাণো পাস, জীরা-বলো নে থম্ভণ পাস ॥১২॥

গাম-নগর পুর পাটণ জেহ, জিণবর চৈত্য নমু গুণগেহ,
বিহরমান বন্দু জিণ বীশ, সিদ্ধ অনন্ত নমু নিশ-দিশ ॥১৩॥

অটী-দ্বীপমা জে অণগার, অটার সহস্স শীলাঙ্গনা ধার,
পঞ্চ-মহাব্রত সমিতি সার, পালে পলাবে পঞ্চাচার ॥১৪॥

ব্রাহ্ম-য় অভ্যন্তর তপ উজমাল, তে মুনি বন্দু গুণ-মণিমাল,
নিত নিত উঠী কীর্তি করু, 'জীব' কহে ভবসায়র তরু ॥১৫॥

❀ देवसिय प्रतिक्रमण की विधि ❀

१. सबसे पहले सामायिक लेवें ।
२. यदि पक्का पानी पिया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन करें और यदि भोजन किया हो तो दो वांदणा देवें ।
३. इसके बाद 'इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी पच्चक्खाण नी आस करावशोजी' कहकर यथाशक्ति पच्चक्खाण करें ।
४. इसके बाद स्वमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करु ?' इच्छं ! कहकर चैत्यवंदन मुद्रामे चैत्यवंदन कहें तत्पश्चात् जंकिंचि एवं नमुत्थुणं कहे ।
५. खड़े होकर अरिहंत चेइआणं, अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पार कर, नमोऽर्हत् कहकर पहली थुई कहें ।
६. लोगस्स, सब्बलोए-अरिहंत चेईआणं, अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करे, कायोत्सर्ग पार कर दूसरी थुई कहें ।
७. इसके बाद पुक्खर-वर-दीवङ्गे, सुअस्स भगवओ करेमि काउरस्सग्गं वंदणवत्तियाए, अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पार कर तीसरी थुई कहें ।

❀ দেবসিতা প্রতিক্রমণের বিধি ❀

- ১। প্রথমে সামায়িক নেওয়া।
- ২। তারপর যদি জল খেয়ে থাকে তাহলে মুহপত্তি পডিলেহন করা হয়। যদি আহার করা হয়ে থাকে তবে দুই বার ‘বান্দণা’ দেওয়া উচিত।
- ৩। ইচ্ছাকারী ভগবন্! পসায় করী পচ্চবন্ধাণ।
নী আস করাবশোজী বলে পচ্চবন্ধান নেওয়া ওচিত।
- ৪। ‘খমাসমণ’ দিয়ে “ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্ চৈত্যবন্দন করু?” “ইচ্ছম্ বলে চৈত্যবন্দন মুদ্রায় বসে ‘চৈত্যবন্দণ’ বলতে হবে।
- ৫। ‘জংকিঞ্চি, নমুখুণম্ বলে দাঁড়িয়ে অরিহন্ত চেইআণম্ অন্তত্থ বলে একটি ‘নবকারের কাউস্সগ্গ পূর্ণ করে নমোহঁত্ বলে প্রথম থোয় বলা উচিত। তারপর—
- ৬। লোগস্স, সব্বলোয়ে অরিহন্তচেইআণম্, অন্তত্থ বলে একটি ‘নবকারের’ কাউস্সগ্গ পূর্ণ করে দ্বিতীয় থোয় বলা উচিত।
- ৭। পুব্বস্বরবরদী, সুঅস্স ভগবও করেমি কাউস্সগ্গম্ বন্দণবত্তিয়াএ, অন্তত্থ বলে একটি নবকারের কাউস্সগ্গ করে। পূর্ণ করে তৃতীয় থোয় বলা উচিত। তারপর—

८. सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का काउरसगग करें, कायोत्सर्ग कर नमोऽर्हत्० कहकर चौथी थुईं कहे ।
९. बैठकर योग मुद्रा में नमुत्थुणं कहें । इसके बाद ।
१०. एक खमासमण देकर भगवान्हं, दूसरा खमासमण देकर आचार्यहं, तीसरा खमासमण देकर उपाध्यायहं, और चौथा खमासमण देकर सर्वसाधुहं कहें । फिर
११. 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ पडिक्कमणे ठाउ?' 'इच्छं' कहकर दाहिना हाथ (मुट्ठि) चरवला के ऊपर रखकर 'सव्वस्सवि-देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छा मि दुक्कडं' कहें । फिर
१२. खड़े होकर करेमि भंते, इच्छामि ठामि काउरसगगं जो मे, तरस्सउत्तरी, अन्नत्थ० कहकर, नाणंमि सूत्र, न आता हो तो आठ नवकार का कायोत्सर्ग करें । फिर
१३. प्रगट लोगस्स कहकर, तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहण करके दो वांदणा देवें ।
१४. इसके बाद खड़े होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउ? इच्छं आलोएमि, जो मे देवसिओ०' सूत्र कहें ।
१५. इसके बाद सातलाख और अठारह पाप स्थानक का पाठ कहें ।

- ৮। ‘সিদ্ধাণম্—বুদ্ধাণম্ বলে বেয়াবচ্চগরাণম্, অন্তথ বলে একটি নবকারের কাউস্সগ্ন করে। পূর্ণ করে নমোহঁত বলে চতুর্থ থোয় বলতে হবে। তারপর—
- ৯। বাম্ পা উপর করে ‘নমুখুণম্ বলতে হবে।
- ১০। চারটে খমাসমন দেওয়ার সাথে সাথে ‘ভগবানহম্, আচার্যহম্, উপাধ্যায়হম্, সর্বসাধুহম্ বলা উচিৎ।
- ১১। ‘ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্ দেবসিঅ পডিক্কমণে ঠাউ?’ ‘ইচ্ছম্’ বলে ডান হাত চরবলার উপর রেখে ‘সব্বস্সবি দেবসিঅ’ দুচ্চিস্তিঅ, দুব্ভাসিঅ, দুচ্চিট্ঠিঅ, মিচ্ছামি দুক্কডম্’ বলা উচিৎ। তারপর—
- ১২। দাঁড়িয়ে করেমি ভন্তে, ইচ্ছামি ঠামি কাউস্সগ্নম্ জো মে, তস্স উত্তরী, অন্তথ বলার পর নাণন্নির আটটি গাথার কাউস্সগ্ন করতে হবে। যদি না জানো, তবে আটটি নবকারের কাউস্সগ্ন করা উচিৎ।
- ১৩। তারপর তৃতীয় আবশ্যকের মুহপত্তি পডিলেহন করে দুটো বাঁদনা দেওয়া উচিৎ।
- ১৪। তারপর দাঁড়িয়ে ‘ইচ্ছাকারেন সন্দিহ ভগবন্! দেবসিঅম্ আলোউ?’ ‘ইচ্ছম্’ আলোএমি, জো মে দেবসিও বলে—

१६. फिर 'सव्वस्सवि-देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं, तरस्स मिच्छा मि दुक्कडं' कहें।
१७. अब बैठकर दाहिना पैर खड़ा करके, एक नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं० बोलकर वंदित्तु सूत्र कहकर दो वांदणा देकर खड़े होकर -
१८. अब्भुट्ठिओ करके दो वांदणा देवें। तत्पश्चात्
१९. आयरिअ उवज्झाए, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तरस्सउत्तरी, अन्नत्थ० कहकर दो लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक (न आता हो तो आठ नवकार) का कायोत्सर्ग करें, कायोत्सर्ग पूर्ण कर
२०. प्रकट लोगस्स, सव्वलोए अरिहंत चेईआणं, अन्नत्थ० कहकर, एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर।
२१. पुक्खर-वर-दीवड्डे, सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं०, वंदणवत्तियाए अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर

১৫। ‘সাত লাখ’, ‘আঠারোটি পাপ স্থানের’ সূত্র বলা উচিৎ।

১৬। “সব্বস্সবি দেবসিঅ দুচ্চিস্তিয়, দুব্বাসিয়, দুচ্চিট্ঠিয়, ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্! ইচ্ছম্, তস্স মিচ্ছামি দুক্কডম্” বলে বীরাসনে—

১৭। ডান পা উপর করে বসে একটি নবকার, করেমি ভন্তে, ইচ্ছামি পডিক্কমিউম্, এবং বন্দিত্ত বলার পর দুই বাঁদনা দিতে হবে।

১৮। “অব্ভুট্ঠিওমি অব্ভিস্তুর দেবসিঅম্, বলে দুই ‘বাঁদনা’ দেওয়া উচিৎ।

১৯। তারপর হাতজোড় করে আয়রিঅ উবজ্জায়ে, করেমি ভন্তে, ইচ্ছামি ঠামি, তস্স উত্তরী অন্নথ বলে দুটি লোগস্স চন্দেশু নিম্মলয়রা পর্যন্ত না জানো তবে আটটি নবকারের কাউস্সগ্গ করে।

পূর্ণ করে লোগস্স প্রকটভাবে বলা উচিৎ।

২০। তারপর সব্বলোয়ে অরিহন্ত চেইআণম্, অন্নথ বলে একটি লোগস্স না জানো তবে চারটি নবকারের কাউস্সগ্গ করে।

২১। পুঙ্খরবরদী, সুঅস্স ভগবও, বন্দণ বত্তিয়াএ, অন্নথ বলে চন্দেশু নিম্মলয়বা পর্যন্ত একটি লোগস্স না জানো তবে চারটি নবকারের কাউস্সগ্গ করে পূর্ণ করে—

२२. सिद्धाणं बुद्धाणं कहे, सुअदेवयाए करेमि काउरसग्गं० अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें, कायोत्सर्ग के बाद नमोऽर्हत् कहकर 'सुअदेवया' की थुई कहें। महिलाएँ इसके स्थान पर 'कमलदल' थुई कहें। बाद में

२३. शिवत्तदेवयाए करेमि काउरसग्गं० अन्नत्थ० कहकर, एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग के बाद नमोऽर्हत्० कहकर 'जिसे शिवत्ते साहू' थुई कहें। महिलाएँ इसके स्थान पर 'यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य' की थुई कहें।

२४. फिर एक नवकार कहकर, छट्टे आवश्यक की मुँहपत्ति पडिलेहण कर, दो वांदणा देवें। तत्पश्चात्

२५. 'सामायिक, चउवीसत्थो, वंदण, पडिक्कमण, काउरसग्ग, पच्चक्खाण कर्युं छे जी' बाद में

२६. इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्० कहकर, योग मुद्रा में 'नमोऽस्तु वर्धमानाय' कहें। महिलाएँ इसके स्थान पर 'संसार दावानल' की तीन थुई कहें। इसके बाद

२७. नमुत्थुणं कहकर नमोऽर्हत्० कहकर स्तवन बोलें। तत्पश्चात्

२८. वरकनक० कहकर चार खमासमण से भगवानादि को वंदना करे, पश्चात् दाहिना हाथ (हथेली) चरवले पर रखकर अङ्गुलिज्जेसु० कहने के बाद

২২। সিদ্ধাণম্—বুদ্ধাণম্ বলে সুঅদেবয়াএ করেমি কাউস্সগ্গম্
অন্নথ বলে একটি নবকারের কাউস্সগ্গ পূর্ণ করে নমোহঁৎ
বলে সুঅদেবয়ার স্তুতি এবং মহিলাদের নমোহঁৎ না বলে
কমলদলের স্তুতি বলা উচিৎ।

২৩। ‘খিওদেবয়াএ করেমি কাউস্সগ্গম্ অন্নথ বলে একটি
নবকারের কাউস্সগ্গ করে ‘নমোহঁত্ বলে, জিসে খিত্তে
সাত্থু থোয়, মহিলাদের ‘নমোহঁত্ না বলে ‘য়স্যাঃ
ক্ষেত্রম্’-এ থোয় বলা উচিৎ। তারপর—

২৪। প্রকট একটি ‘নবকার’ বলতে হবে এবং ষষ্ঠ আবশ্যকের
মুহপত্তি পডিলেহন করে এবং দুটো বান্দনা দিতে হবে।

২৫। “সামায়িক, চউবীসথো, বন্দণ, পডিক্কমণ, কাউস্সগ্গ,
পচ্চবক্সাণ কর্যু ছেজী।

২৬। ‘ইচ্ছামো অণুসট্ঠিম্, নমো খমাসম্ণানম্ নমোহঁত্ বলে
পুরুষদের ‘নমোস্তু বর্ধমানায়’ বলা উচিৎ এবং স্ত্রীদের
শুধুমাত্র ‘সংসার-দাবা’র তিনটি থোয় বলতে হবে।
তারপর—

২৭। ‘নমুখুণম্ বলে নমোহঁৎ বলে স্তবন বলবেন ‘বরকনক’
বলে চারটি ‘খমাসমণ’ পূর্বক ভগবানহম্ আদি চার বলে।

২৮। ডান হাতটি চারবলার ওপর রেখে ‘অডাইজ্জেসু০’
বলে।

२९. खडे होकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं काउरसग्ग करु ? इच्छं 'देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउरसग्गं' अन्नत्थ कहकर, चार लोगरस चंदेसु निम्मलयरा तक (न आता हो तो सोलह नवकार) का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर, प्रकट लोगरस कहने के बाद

३०. खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहु ? इच्छं' दूसरा खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करु ? इच्छं' कहकर एक नवकार गिनकर सज्झाय कहें। पुनः एक नवकार गिने, इसके बाद

३१. खमासमण देवे, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं काउरसग्ग करु ? इच्छं दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउरसग्गं' अन्नत्थ० बोलकर चार लोगरस सम्पूर्ण (न आता हो तो सोलह नवकार का) कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर, नमोऽर्हत्० कहकर लघु शांति बोलें। तत्पश्चात् प्रकट लोगरस कहें।

३२. अब ४८ मिनट पूर्ण होने पर सामायिक पारने की विधि के अनुसार सामायिक पारें। लेकिन इरियावहियं से लोगरस तक बोलने के बाद चउक्कसाय, नमुत्थुणं, जावंति चेइआई, खमासमणा देकर जावंत केवि साहू, नमोऽर्हत्० उवसग्गहरं और जयवीयराय कहने के बाद पूर्ववत् मुहपत्ति का पड़िलेहन करके सामायिक पारने के दो आदेश लेवें इत्यादि।

नोट : अष्टमी के दिन देवसिअ प्रतिक्रमण में 'संसार दावानल दाहनीरं' की थुई बोली जाती है। प्रत्येक त्रयोदशी और भाद्रपद शुक्ल की तृतीया दिन सायंकाल देवसिअ प्रतिक्रमण में पार्श्वनाथ प्रभु का चैत्यवंदन, कल्लाणकंदं की थुई, संतिकरं स्तवन तथा मन्नहजिणाणं की सज्झाय बोली जाती है।

২৯। দাঁড়িয়ে “ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্। দেবসিঅ-
পায়চ্ছিত্ত বসোহণথম্ কাউস্সগ্গ করু?” ইচ্ছম্, দেবসিঅ
পায়চ্ছিত্ত-বসোহণথম্ করেমি কাউস্সগ্গম্, অন্তথ বলে
চন্দেসু নিম্মলয়বা পর্যন্ত চার লোগস্স না জানো তবে
ষোলটি নবকারের কাউস্সগ্গ করা উচিৎ। কাউস্সগ্গ পূর্ণ
করে প্রকট ভাবে লোগস্স বলা উচিৎ।

৩০। তারপর ‘খমাসমণ’ দিয়ে “ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্
সজ্জায় সন্দিহ?” ইচ্ছম্ ‘খমাসমণ’ দিয়ে “ইচ্ছাকারেণ
সন্দিহ ভগবন্ সজ্জায় করু?” ইচ্ছম্ নবকার গুণে সজ্জায়
বলবে এবং এক নবকার গুনবে।

৩১। খমাসমণ দিয়ে ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্! “দুব্বক্কয়
কম্মক্কয় নিমিত্তম্ কাউস্সগ্গ করু?” ইচ্ছম্ “দুব্বক্কয়
-কম্মক্কয় নিমিত্তম্ করেমি কাউস্সগ্গম্” অন্তথ বলে সম্পূর্ণ
চার লোগস্স না জানো তবে ষোল নবকারের কাউস্সগ্গ
করা উচিৎ। তারপর ‘নমোহঁত্’ বলে ‘লঘুশান্তি’ বলতে
হবে। তারপর একটি ‘লোগস্স’ প্রকটভাবে বলতে হবে।

৩২। তারপর ৪৮ মিনিট সময় পূর্ণ হলে খমাসমণ দিয়ে
ইরিয়াবহিয়ম্, তস্স উত্তরী, ‘অন্তথ বলে একটি লোগস্স
অথবা চারটি নবকারের কাউস্সগ্গ করে লোগস্স বলা
উচিৎ। তারপর চউক্কসায়, নমুথুণম্, জাবন্তি, খমাসমণ,
জাবন্ত, নমোহঁত্, উবসগ্গহরম্, জয় বীয়রায় বলে মুহপত্তি
পডিলেহন আদেশ আদি ক্রিয়া সামায়িক পারনের বিধি
অনুসারে পূর্ণ করা উচিৎ।

নোট : অষ্টমির দিনে দেবসিঅ প্রতিক্রমণে ‘সংসারদাবানল’ থুই
বলা উচিৎ এবং তেরস তিথিদিনে এবং ভাদ্রপদ শুক্লা
তৃতীয়া পার্শ্বনাথ ভগবানের চৈত্যবন্দন, কল্লাণ কন্দম্ থুই
এবং সন্তিকরম্ এর স্তবন মনহ জিনানম্, সজ্জায় বলা

❀ राइय प्रतिक्रमण की विधि ❀

१. सर्वप्रथम सामायिक लेवें । फिर
२. खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राइय पायच्छित्त विसोहणत्थं काउरस्सग्ग करु ? इच्छं, कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राइय पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउरस्सग्गं', अन्नत्थ^० कहकर चार लोगरस्स 'सागरवर गंभीरा' तक (न आता हो तो सोलह नवकार) का कायोत्सर्ग करें । कायोत्सर्ग पूर्ण कर प्रकट लोगरस्स कहें ।
३. इसके पश्चात् खमासमण देकर— 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करु ? इच्छं' कहकर जगचिंतामणि से जयवीयराय तक चैत्यवंदन योगमुद्रा में करें ।
४. इसके बाद एक खमासमण देकर, 'भगवान्हं', दूसरा खमासमण देकर, 'आचार्य्हं', तीसरा खमासमण देकर 'उपाध्याय्हं', 'सर्वसाधुहं', कहने के बाद पुनः खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहु ? इच्छं' कहकर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करु ? इच्छं' बोलकर एक नवकार गिनकर भरहेसर की सज्झाय बोलकर एक नवकार गिनें ।
५. इसके बाद खडे होकर इच्छकार सुहराई का पाठ कहें,

❀ রাইয়-প্রতিক্রমণের বিধি ❀

- ১। প্রথমে সামায়িক নিতে হবে।
- ২। খমাসমণ দিয়ে ‘ইচ্ছাকারেণ সন্দিসই ভগবন্! কুসুমিণ-দুসুমিণ ওড্ডাবণী রাইঅ পায়চ্ছিভ্ত-বিসোহণথম্ কাউস্সগ্ন করু?’ ‘ইচ্ছম্ ‘কুসুমিণ- দুসুমিণ-ওড্ডাবণী রাইয় পায়চ্ছিভ্ত-বিসোহণথম্ করেমি কাউস্সগ্নম্ অন্নথ০ বলে ‘সাগরবর গম্ভীরা’ পর্যন্ত চার লোগস্স অথবা ১৬ নবকারের কাউস্সগ্ন করে প্রকটভাবে ‘লোগস্স’ বলা উচিৎ।
- ৩। ‘খমাসমণ দিয়ে “ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! চৈত্যবন্দন করু?” ইচ্ছম্ বলে ‘জগচিন্তামণি থেকে ‘জয় বীয়রায়’ পর্যন্ত বলা উচিৎ। তারপর—
- ৪। চার ‘খমাসমণ দিয়ে ‘ভগবানহম্, আচার্যহম্, উপাধ্যায়হম্, সর্বসাধুহম্ কে বন্দনা করা উচিৎ। পরে—
খমাসমণ দিয়ে “ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! সজ্জায় সন্দিসাহ? ইচ্ছম্, বলে খমাসমণ দিয়ে “ইচ্ছাকারেণ সন্দিসহ ভগবন্! সজ্জায় করু?” ইচ্ছম্ বলে। নবকার গুনে তারপর ‘ভরহেসরের’ সজ্জায়টা বলতে হবে তারপরের একটি ‘নবকার’ গুনবে।
- ৫। তারপর দাঁড়িয়ে ‘ইচ্ছকার সুহরাই০’ পাঠ করবে।

फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राईय पडिक्कमणे ठाउ ? इच्छं' बोलकर दाहिना हाथ (मुट्ठि) चरवले के ऊपर रखकर—'सव्वस्सवि राईय दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ मिच्छा मि दुक्कडं' कहे और बाद में।

६. नमुत्थुणं, करेमि भंते, इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, तस्सउत्तरी अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर।
७. प्रकट लोगस्स बोलकर सव्वलोए अरिहंत चेईआणं, अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक (न आता हो तो चार नवकार) का कायोत्सर्ग करें। पश्चात्
८. पुक्खर-वर-दीवट्ठे, 'सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ कहकर नाणम्मि सूत्र की आठ गाथा (न आता हो तो आठ नवकार) का कायोत्सर्ग करें। इसके बाद
९. सिद्धाणं बुद्धाणं कहकर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहण करें। दो वांदणा देवें।
१०. अब 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राईअं आलोउ ? इच्छं, आलोएमि जो मे राईयो', का पाठ कहने के बाद
११. सात लाख तथा अठारह पाप स्थानक सूत्र कहकर—'सव्वस्सवि राईय दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं' कहने के बाद

‘ইচ্ছাকারেন সন্দিহ ভগবন্! রাইঅ পডিক্কেমণে ঠাউ’
‘ইচ্ছম্ বলে ডান হাত চরবলার উপর রেখে ‘সব্বস্সবি
রাইঅ দুচ্চিস্তিয়, দুব্ভাসিয়, দুচ্চিট্ঠিয় মিচ্ছামি দুক্কডম্
বলবে।

৬। ‘নমুথুগম্’, করেমি ভন্তে, ‘ইচ্ছামি ঠামি কাউস্সগ্গম্ তস্স
উত্তরী, অন্নথ বলে চন্দেসু নিম্মলয়রা পর্যন্ত না জানো
তবে চারটি নবকারের কাউস্সগ্গ করে।

৭। প্রকটভাবে লোগস্স বলে সব্বলোএ অরিহন্ত চেইআণম্
অন্নথ বলে একটি লোগস্স না জানো তবে চারটি
নবকারের কাউস্সগ্গ করে।

৮। ‘পুব্বথর-বরদী০’ সুঅস্স ভগবও, বন্দণবত্তিয়াএ অন্নথ
বলে নাগন্নির আটটি গাথা না জানো তবে আটটি
‘নবকারের’ কাউস্সগ্গ করে।

৯। সিদ্ধাণম্ বুদ্ধাণম্ বলে তৃতীয় আবশ্যকের মুহপত্তি
পডিলেহন করে, দুটি ‘বান্দনা দিতে হবে।

১০। তারপর দাঁড়িয়ে ‘ইচ্ছাকারেন সন্দিহ ভগবন! রাঈঅম্
আলোউ?’ ‘ইচ্ছম্’ আলোএমি, জো মে রাইও বলে—

১১। ‘সাত লাখ’, ‘আঠারটি পাপ স্থানের’ সূত্র বলা উচিৎ।

“সব্বস্সবি রাইঅ দুচ্চিস্তিয়, দুব্ভাসিয়, দুচ্চিট্ঠিয়,
ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্! ইচ্ছম্, তস্স মিচ্ছামি
দুক্কডম্” বলে বীরাসনে—

१२. (दाहिना घुटना ऊपर कर) नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राईओ० का पाठ कहकर वंदितु बोले।
अब्भुट्ठिओमि से खडे होकर सूत्र पूर्ण करें
१३. बाद, दो वांदणा—इच्छाकारेण संदिसह भगवन्
अब्भुट्ठिओमि सूत्र कहकर, दो वांदणा करके दोनों हाथ जोड़कर
१४. आयरिअ उवज्झाए, करेमि भंते, इच्छामि ठामि,
तरस्सउत्तरी अन्नत्थ० कहकर तप चिंतामणि (न आता हो
तो सोलह नवकार) का कायोत्सर्ग करें, कायोत्सर्ग पूर्ण
करके प्रकट लोगस्स कहें और छट्टे आवश्यक की मुहपत्ति
का पडिलेहण करके दो वांदणा देवें। पश्चात्
१५. सकल तीर्थ बोलकर यथाशक्ति पच्चक्खाण करें।
१६. बाद में 'सामायिक, चउविसत्थो, वंदण, पडिक्कमण,
काउरस्सग्ग, पच्चक्खाण कर्युं छे जी।' कहें
१७. इसके पश्चात् इच्छामो अणुसट्ठिं० नमो खमासमणाणं
नमोऽर्हत् कहकर, विशाललोचन दलं कहें। महिलाएँ
इसके बदले संसार दावानल की तीन गाथा कहें।
१८. नमुत्थुणं, अरिहंत चेईयाणं० अन्नत्थ० कहकर एक
नवकार का कायोत्सर्ग करने के बाद नमो अरिहंताणं से
कायोत्सर्ग पूर्ण कर नमोऽर्हत्० कहकर 'कल्लाणकंदं' की
पहली गाथा कहें।

১২। ডান পা উপর করে বসে একটি নবকার, করেমি ভন্তে,
ইচ্ছামি পডিক্কেমিউম্ জো মে রাইও এবং বন্দিভু বলার
পর দুই বাঁদণা দিতে হবে।

১৩। “অবুভুচ্চিওমি বলে দুই ‘বান্দনা’ দেওয়া উচিৎ।

১৪। তারপর হাতজোড় করে আয়রিঅ উবজ্জায়ে, করেমি
ভন্তে, ইচ্ছামি ঠামি, তস্স উত্তরী অন্নথ বলে তপ
চিস্তামণি না জানো তবে ১৬ নবকারের কাউস্সগ্ন করবে।
লোগস্স বলে ষষ্ঠ আবশ্যকের মুহপত্তি পড়িলেহন করে
এবং বান্দনা দিবে।

১৫। ‘সকলতীর্থ’ বলা উচিৎ।

১৬। পরে— যথাশক্তি পচ্চবক্ষাণ করা উচিৎ।

১৭। ‘সামায়িক, চউবিসথো, বন্দণ, পডিক্কেমণ, কাউস্সগ্ন,
পচ্চবক্ষাণ কর্যু ছেজী ইচ্ছামো অণুসট্ঠিম্ নমো
খমাসমণাণম্ ‘নমোহঁত্ বলে। ‘বিশাললোচন দলম্ এবং
মহিলারা সন্সার দাবানলের তিনটি গাথা বলবেন।

১৮। ‘নমুখুণম্, অরিহন্ত চেইআণম্, অন্নথ বলে একটি
নবকারের কাউস্সগ্ন করে এবং পূর্ণ করে নমোহঁত্ বলে
কল্লাণকন্দম্—এর প্রথম গাথা বলা উচিৎ। তারপর —

१९. इसके पश्चात् लोगस्स कहकर, सबलोए अरिहंत चेईआणं, अन्नत्थ कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करें, कायोत्सर्ग पूर्ण कर 'कल्लाणकंदं' की दूसरी गाथा कहें।
२०. इसके बाद पुक्खर-वर—दीवङ्गे, सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर कल्लाणकंदं की तीसरी गाथा कहें।
२१. इसके बाद सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्चगराणं, अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का कायोत्सर्ग करें। कायोत्सर्ग पूर्ण कर नमोऽर्हत्० कहकर कल्लाणकंदं की चौथी गाथा कहें। तत्पश्चात्
२२. नमुत्थुणं कहकर, एक-एक खमासमण देकर, भगवान्हं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, और सर्वसाधुहं कहें। इसके पश्चात् दाहिना हाथ (हथेली) चरवले पर रखकर अङ्गुलिज्जेसु कहें।
२३. अब, सीमंधर स्वामी के तीन दोहे के साथ 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! श्रीसीमंधरस्वामी आराधनार्थं चैत्यवंदन करु, इच्छं' बोलकर सीमंधर स्वामी का चैत्यवंदन करें।
२४. सिद्धाचलजी के तीन दोहे के साथ खमासमण देकर "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! श्रीशत्रुंजय महातीर्थ आराधनार्थं चैत्यवंदन करु इच्छं," बोलकर सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन करें।
२५. सामायिक पारने की विधि के अनुसार सामायिक पारें।

১৯। লোগস্স সব্বলোয়ে অরিহত্তু চেইআণম্, অন্নথ বলে
একটি নবকারের কাউস্সগ্গ করে। দ্বিতীয় গাথা বলে।

২০। পুব্বস্সরবরদী, সুঅস্স ভগবও, বন্দণ বত্তিয়াএ, অন্নথ বলে
একটি নবকারের কাউস্সগ্গ করে। পূর্ণ করে তৃতীয় গাথা
বলে।

২১। সিদ্ধাণম্-বুদ্ধাণম্ বেয়াবচ্চগরাণম্, অন্নথ বলে এক
নবকারের কাউস্সগ্গ করে। পূর্ণ করে নমোহঁৎ বলে চতুর্থ
গাথা বলে।

২২। নমুথুণম্ বলে ‘ভগবানহম্ আদি’ চারটি খমাসমণ দিয়া
উচিৎ এরপরে—

ডান হাত চরবলার উপরে রেখে অড্ঢাইজ্জেসু বলা উচিৎ

২৩। তারপর— সীমন্ধর স্বামীর তিন দোহের সঙ্গে খমাসমণ
দিয়ে পরে “ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্!
শ্রীসীমন্ধরস্বামী আরাধনার্থে চৈত্যবন্দন করু?” ইচ্ছম্
বলে, শ্রী সীমন্ধর স্বামীর চৈত্যবন্দন বলা উচিৎ।
চৈত্যবন্দন পূর্ণ করার পর।

২৪। শ্রীসিদ্ধাচলজীর তিন দোহের সঙ্গে খমাসমণ দিয়ে পরে
ইচ্ছাকারেণ সন্দিহ ভগবন্! শ্রীশত্রুঞ্জয় মহাতীর্থ
আরাধনার্থে চৈত্যবন্দন করু!” ইচ্ছম্ বলে শ্রীশত্রুঞ্জয়
চৈত্যবন্দন বলা উচিৎ। চৈত্যবন্দন পূর্ণ করার পর।

২৫। যদি ৪৮ মিনিট হলো, সামায়িক পারনের বিধি অনুসারে
সামায়িক পূর্ণ করা উচিৎ।

❁ श्री सीमंधर स्वामी के दोहे ❁

अनंत चोवीसी जिन नमु, सिद्ध अनंती कोड ;
केवलधर मुगते गया, वंदु बे कर जोड़ ॥१॥
बे कोडी केवलधरा, विहरमान जिन वीश;
सहसकोडी युगल नमु, साधु नमु निशदिश ॥२॥
जे चारित्रे निर्मला, जे पंचानन सिंह;
विषय कषाय-नागं जिया, ते प्रणमु निशदिश ॥३॥

❁ सीमन्धर स्वामी चैत्यवंदन ❁

श्री सीमन्धर जगधणी, आ भरते आवो
करुणावंत करुणाकरी, अमने वन्दावो ॥१॥
सयल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ
भवोभव हु छु ताहरो, नही मेलु हवे साथ ॥२॥
सयल संघ छंडी करी, ए चारित्र लइशु
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरशु ॥३॥
ए अलजो मुजने घणोए, पुरो सीमन्धर देव ।
इहा थकी हु विनवु, अवधारो मुज सेव ॥४॥
कर जोड़ी उभो रहु, सामु रही ईशान
भाव जिनेश्वर भाणने, देजो समकित दान ॥५॥

❁ सीमंधर स्वामी की थुई ❁

श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करु सेव,
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,
जयवंती आणा, 'ज्ञानविमल' गुण खाणी ॥

❀ শ্রী সীমন্ধর স্বামীর দোহা ❀

অনন্ত চোবীসী জিন নমু, সিদ্ধ অনন্তী কোড
কেবলধর মুগতে গয়া, বন্দু বে কর জোড়।।১।।
বে কোডী কেবলধরা, বিহরমান জিন বীশ
সহসকোডী যুগল নমু, সাধু নমু নিশদিশ।।২।।
জে চারিত্রে নির্মলা, জে পঞ্চানন সিহ
বিষয় কষায়-নাগম্ জিয়া, তে প্রণমু নিশদিশ।।৩।।

❀ শ্রীমন্ধর স্বামী চৈত্য়বন্দন ❀

শ্রী সীমন্ধর জগধনী, আ ভরতে আবো
করুণাবন্ত করুণাকরী, অমনে বন্দাবো।।১।।
সয়ল ভক্ত তুমে ধনী, জো হোবে অম নাথ
ভবোভব ছ ছু তাহরো, নহী মেলু হবে সাথ।।২।।
সয়ল সংঘ ছন্ডী করী, এ চারিত্র লইশু
পায় তুমারা সেবীনে, শিবরমণী বরশু।।৩।।
এ অলজো মুজনে ঘণোএ, পুরো সীমন্ধর দেব।
ইহা থকী ছ বিনবু, অবধারো মুজ সেব।।৪।।
কর জোডী উভো রহু, সামু রহী ইশান
ভাব জিনেশ্বর ভাণনে, দেজো সমকিত দান।।৫।।

❀ শ্রীমন্ধর জিন থোয় ❀

শ্রী সীমন্ধর জিনবর, সুখকর সাহিব দেব
অরিহন্ত সকলনী, ভাব ধরী করু সেব
সকলাগম পারগ, গণধর ভাষিত বাণী
জয়বন্তী আণা 'জ্ঞানবিমল' গুণ খাণী।

❀ સીમન્ધર સ્વામી સ્તવન ❀

સુણો ચન્દાજી, સીમન્ધર પરમાત્મ પાસે જાજો
મુજ વિનતડી પ્રેમ ધરીને ણી પેરે તુમે સંભલાવજો
જે ત્રણ ભુવનનો નાયક છે
જસ ચોસઠ ઇન્દ્ર પાયક છે,
જ્ઞાન દર્શન જેહને ક્ષાયક છે.....સુણો ચંદાજી ॥૧॥
જેની કજ્યનવર્ણી કાયા છે
જસ ધોરી લંછન પાયા છે
પુણ્ડરીકગિરી નગરીનો રાયા છે.....સુણો ચંદાજી ॥૨॥
બાર પર્ષદામાંહી બિરાજે છે
જસ ચોત્રિશ અતિશય છાજે છે
ગુણ પાત્રીશ વાળીયે ગાજે છેસુણો ચંદાજી ॥૩॥
ભવિજનને જે પડિબોહે છે,
તુમ અધિક શીતલ ગુણ સોહે છે
રૂપ દેરવી ભવિજન મોહે છે....સુણો ચંદાજી ॥૪॥
તુમ સેવા કરવા રસિયો છુ
પણ ભરતમા દૂરે વસિયો છુ
મહા મોહરાય કર ફસિયો છુ.....સુણો ચંદાજી ॥૫॥
પણ સાહેબ ચિત્તમા ધરિયો છે
તુમ આણ સ્વઙ્ગ કર ગ્રહિયો છે
તો કાઙ્ક મુજથી ડરિયો છેસુણો ચંદાજી ॥૬॥
જિન ઉત્તમ પુઠ હવે પુરો
કહે “પદ્મવિજય” થાઠુ શૂરો
તો વાધે મુજ મન અતિ નુરો.....સુણો ચંદાજી ॥૭॥

❀ সীমন্ধর স্বামী স্তবন ❀

সুণো চন্দাজী, সীমন্ধর পরমাতম পাসে জাজো
মুজ বিনতডী প্রেম ধরীনে এণী পেরে তুমে সম্ভলাবজো
জে ত্রণ ভুবননো নায়ক ছে
জস চোসঠ ইন্দ্র পায়ক ছে,
জ্ঞান দর্শন জেহনে ক্ষায়ক ছে.....সুণো চন্দাজী ॥১॥
জেনী কঞ্চনবর্ণী কায়া ছে
জস ধোরী লঙ্ঘন পায়া ছে
পুণ্ডরীকগিরী নগরীনো রায়া ছে.....সুণো চন্দাজী ॥২॥
ব্রার পর্যদামাহী বিরাজে ছে
জস চোত্রীশ অতিশয় ছাজে ছে
গুণ পাত্রীশ বাণীয়ে গাজে ছে.....সুণো চন্দাজী ॥৩॥
ভবিজননে জে পড়িবোহে ছে,
তুম অধিক শীতল গুণ সোহে ছে
রূপ দেখী ভবিজন মোহে ছে.....সুণো চন্দাজী ॥৪॥
তুম সেবা করবা রসিয়ো ছু
পণ ভরতমা দুরে বসিয়ো ছু
মহা মোহরায় কর ফসিয়ো ছু.....সুণো চন্দাজী ॥৫॥
পণ সাহেব চিত্তমা ধরিয়ো ছে
তুম আণ খড়গ কর গ্রহিয়ো ছে
তো কাইক মুজখী ডরিয়ো ছে.....সুণো চন্দাজী ॥৬॥
জিন উত্তম পুঠ হবে পুরো
কহে “পদ্মবিজয়” থাউ শুরো
তো বাধে মুজ মন অতি নুরো.....সুণো চন্দাজী ॥৭॥

❀ श्री सिद्धाचल जी का दोहा ❀

एकेकु डगलु भरे शेत्रुंजा समु जेह,
ऋषभ कहे भव क्रोड़ना, कर्म खपावे तेह ॥१॥
शेत्रुंजा समु तीरथ नहीं, ऋषभ समो नहीं देव
गौतम सरीखा गुरु नहीं, वली वली वंदु तेह ॥२॥
सिद्धाचल समरु सदा, सोरठ देश मोझार
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदु वार हजार ॥३॥

❀ श्री सिद्धाचलजी का चैत्यवंदन ❀

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र दीठे दुर्गति वारे;
भाव धरीने जे चढ़े, तेने भव पार उतारे ॥१॥
अनंत सिद्ध नो अंह ठाम, सकल तीर्थनो राय,
पूर्व नव्वाणुं ऋषभदेव, ज्या ठविया प्रभु पाय ॥२॥
सूरज कुण्ड सोहा-मणो, कवडयक्ष अभिराम,
नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करु प्रणाम ॥३॥

❀ श्री सिद्धाचलजी का स्तवन ❀

सिद्धाचल ना वासी, विमलाचल ना वासी, जिनजी प्यारा
आदिनाथने वंदन हमारा
प्रभुजी नु मुखडु मलके, नयनोमाथी वरसे,
अमीरस धारा, आदिनाथ ने ... ॥१॥

❀ শ্রী সিদ্ধাচলজী দোহা ❀

একেকু ডগলু ভরে শেত্রঞ্জা সমু জেহ
ঋষভ কহে ভব ত্রোড়না, কর্ম খপাবে তেহ ॥১॥
শেত্রঞ্জা সমু তীরথ নহী, ঋষভ সমো নহী দেব
গৌতম সরীখা গুরু নহী, বলী বলী বন্দু তেহ ॥২॥
সিদ্ধাচল সমরু সদা, সোরঠ দেশ মোঝার
মনুষ্য জন্ম পামী করী, বন্দু বার হজার ॥৩॥

❀ শ্রী সিদ্ধাচলজী চৈত্যবন্দন ❀

শ্রী শেত্রঞ্জয় সিদ্ধক্ষেত্র, দীঠে দুর্গাতি বারে
ভাব ধরীনে জে চঢ়ে, তেগে ভব পার উতারে ॥১॥
অনন্ত সিদ্ধ নো এহ ঠাম, সকল তীর্থনো রায়
পূর্ব নব্বাণু ঋষভদেব, জ্যা ঠবিয়া প্রভু পায় ॥২॥
সুরজ-কুন্ড সোহা-মনো, কবডয়ঙ্ক অভিরাম,
নাভিরায়ী কুলমন্ডণো, জিনবর করু প্রণাম ॥৩॥

❀ শ্রী সিদ্ধাচলজী স্তবন ❀

সিদ্ধাচল না বাসি, বিমলাচল না বাসি জিনজী প্যারা
আদিনাথ নে বন্দন হমারা
প্রভুজী নু মুখডু মলকে, নয়নো মাথী বরসে
অমীরস ধারা আদিনাথ নে বন্দন হমারা ॥১॥

प्रभुजीनु मुखडु छे मलक मिलाकर,
दिल में भक्ति की ज्योत जलाकर
भज ले प्रभु ने भावे, दुर्गति कदी ना आवे,
जिनजी प्यारा ... ॥ २ ॥

भमीने लाख चोरासी हु आव्यो,
पुण्ये दरिशन तुम्हारा हुं पायो,
धन्य दिवस मारो, भव ना फेरा टालो,
जिनजी प्यारा ... ॥ ३ ॥

प्रभुजी अमे तो मायाना विलासी,
तमे छो मुक्तिपूरीना वासी,
कर्म बंधन कापो, मोक्ष सुख आपो,
जिन जी प्यारा ... ॥ ४ ॥

अरजी उर मा धरजो अमारी,
अमने आशा छे प्रभुजी तुम्हारी,
कहे हर्ष हवे, साचा स्वामी तमे,
जिनजी प्यारा ... ॥ ५ ॥

❀ श्री सिद्धाचल की थुई ❀

शत्रुंजय मंडन, ऋषभ जिपंद दयाल,
मरुदेवा नंदन, वंदन करु त्रण काल;
अे तीरथ जाणी, पूर्व नवाणु वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ॥ ११ ॥

প্রভুজীনু মুখডু ছে মলক মিলাকর,
দিল মে ভক্তি কী জ্যোত জলাকর
ভজলে প্রভু নে ভাবে, দুর্গতি কদী না আবে
জিনজী প্যারা ... ॥ ২ ॥

ভমীনে লাখ চোরাসী হু আব্যো
পুণ্যে দরিশন তুম্হারা হু পায়ো
ধন্য দিবস মারো, ভব নো ফেরা টালো
জিনজী প্যারা, ... ॥ ৩ ॥

প্রভুজী অমে তো মায়ানা বিলাসী
তমে ছো মুক্তি পুরীনা বাসি
কর্মবন্ধন কাপো, মোক্ষ সুখ আপো
জিনজী প্যারা, ... ॥ ৪ ॥

অরজী উরমা ধরজো অমারী
অমনে আশা ছে প্রভুজী তুম্হারী
কহে হর্ষ হবে, সাচা স্বামী তমে
জিনজী প্যারা, ... ॥ ৫ ॥

❀ শ্রী সিদ্ধাচলজী থুঙ্গ ❀

শত্রুঞ্জয় মণ্ডন, ঋষভ জিগন্দ দয়াল,
মরুদেবা নন্দন বন্দন করু ত্রণ কাল
এ তীরথ জাগী পূর্ব নবাণু বার
আদীশ্বর আব্যা জাগী লাভ অপার ॥ ১ ॥

पच्चक्खाण

❀ नवकारसी ❀

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्-खाई (पच्चक्-खामि); चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सब्ब-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरई (वोसिरामि) ।

❀ पोरिसी/एकासना/बियासना/आयंबिल ❀

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअं / पोरिसिं / साइढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्-खाई (पच्चक्-खामि); उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं, सब्ब-समाहि-वत्तिया-गारेणं, आयंबिलं/निव्विगइअं/विगइओ पच्चक्-खाई (पच्चक्-खामि); अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, लेवा-लेवेणं, गिहत्थ-संसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, पारिट्ठा-वणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सब्ब-समाहि-वत्तिया-गारेणं, एगासणं / बियासणं पच्चक्-खाई (पच्चक्-खामि), तिव्विहं पि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, सागरिया-गारेणं, आउंटण-पसारेणं, गुरु-अब्-भूट्ठाणेणं, पारिट्ठा-वणिया-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सब्ब-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरई (वोसिरामि) ।

পচক্‌খাণ

নবকারঙ্গী

উগ্গএ সূরে, নমুঙ্কার-সহিঅম্, মুট্‌ঠি-সহিঅম্, পচক্‌-খাঈ (পচক্‌-খামি); চউব্বিহম্ পি আহারম্, অসণম্, পাণম্, খাইমম্, সাইমম্, অন্নথণা-ভোগেণম্, সহসা-গারেণম্, মহত্তরা-গারেণম্, সব্ব-সমাহি-বত্তিয়া-গারেণম্ বোসিরঈ (বোসিরামি)।

পোরিসী/একাসণা/বিয়াসণা/আয়ম্‌বিল

উগ্গএ সূরে, নমুঙ্কার-সহিঅম্/পোরিসিম্/সাড্‌ঢ-পোরিসিম্, মুট্‌ঠি-সহিঅম্, পচক্‌-খাঈ (পচক্‌-খামি); উগ্গএ সূরে চউব্বিহম্ পি আহারম্, অসণম্, পাণম্, খাইমম্, সাইমম্, অন্নথণা-ভোগেণম্, সহসা-গারেণম্, পচ্ছন্ন-কালেণম্, দিসা-মোহেণম্, সাহ্‌-বয়ণেণম্, মহত্তরা-গারেণম্, সব্ব-সমাহি-বত্তিয়া-গারেণম্, আয়ম্‌বিলম্/নিব্বিগইঅম্/বিগইও পচক্‌-খাঈ (পচক্‌-খামি); অন্নথণা-ভোগেণম্, সহসা-গারেণম্, লেবা-লেবেণম্, গিহথ-সন্-সট্‌-ঠেণম্, উক্‌খিত্ত-বিবেগেণম্, পডুচ্চ-মক্‌খিএণম্, পারিট্‌ঠা-বণিয়া-গারেণম্, মহত্তরা-গারেণম্, সব্ব-সমাহি-বত্তিয়া-গারেণম্, এগাসণম্/বিয়াসণম্ পচক্‌-খাঈ (পচক্‌-খামি), তিব্বিহম্ পি আহারম্, অসণম্, খাইমম্ সাইমম্, অন্নথণা-ভোগেণম্, সহসা-গারেণম্, সাগরিয়া গারেণম্ আউন্টণ-পসারেণম্, গুরু-অব্‌-ভূট্‌ঠা-গেণম্, পারিট্‌ঠা-বণিয়া-গারেণম্, মহত্তরা-গারেণম্, সব্ব-সমাহি-বত্তিয়া-গারেণম্ পাণস্স লেবেণ বা, অলেবেণ বা, অচ্ছেণ বা, বৃহ্‌লেবেণ বা, সসিথেণ বা, অসিথেণ বা বোসিরঈ (বোসিরামি)।

❀ चउविहार / तिविहार उपवास ❀

सूरे उग्गए अब्-भत्-तट्ठं पच्चक्-खाई (पच्चक्-खामि); चउव्विहं पि आहारं तिविहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेण, पारिट्ठा-वणिआ-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सब्ब-समाहि-वत्तिया-गारेणं; पाणहार पोरिसिं/साइढपोरिसिं, मुट्ठि-सहिअं, पच्चक्-खाई (पच्चक्-खामि); अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, पच्छन्न-कालेणं, दिसा-मोहेणं, साहु-वयणेणं, महत्तरा-गारेणं, सब्ब-समाहि-वत्तिया-गारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरई (वोसिरामि) ।

❀ चउविहार / तिविहार (संध्या पच्चक्खाण) ❀

दिवसचरिमं पच्चक्-खाई (पच्चक्-खामि); चउव्विहं पि आहारं तिविहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सब्ब-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरई (वोसिरामि) ।

❀ पाणहार (संध्या पच्चक्खाण) ❀

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्-खाई (पच्चक्-खामि) अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसा-गारेणं, महत्तरा-गारेणं, सब्ब-समाहि-वत्तिया-गारेणं वोसिरई (वोसिरामि) ।

❀ চতুৰ্থাৰ তিৰিহাৰ উপবাস পচক্‌খান ❀

সূৰে উল্লএ অব্‌-ভত্তট্‌ম্‌ পচক্‌-খাঈ (পচক্‌-খামি);
চউব্বিহম্‌ পি আহাৰম্‌ তিৰিহম্‌ পি আহাৰম্‌, অসণম্‌, পাণম্‌
খাইমম্‌, সাইমম্‌, অন্নথণা-ভোগেণম্‌, সহসা-গারেণম্‌,
পাৰিট্‌ঠা-বণিয়া-গারেণম্‌, মহত্তরা-গারেণম্‌, সৰব-সমাহি
বত্তিয়া-গারেণম্‌; পাণহাৰ পোৰিসিম্‌/সাদ্‌ট-পোৰিসিম্‌,
মুট্‌ঠি-সহিঅম্‌, পচক্‌-খাঈ (পচক্‌-খামি); অন্নথণা-
ভোগেণম্‌, সহসা-গারেণম্‌, পচ্ছন্ন-কালেণম্‌, দিসা-মোহেণম্‌,
সাহ্‌-বয়ণেণম্‌, মহত্তরা-গারেণম্‌, সৰব-সমাহি-বত্তিয়া-
গারেণম্‌, পাণস্‌স লেবেণ বা, অলেবেণ বা, অচ্ছেণ বা,
বহ্‌লেবেণ বা, সসিথেণ বা, অসিথেণ বা বোসিৰঈ
(বোসিৰামি)।

❀ চউৰ্থাৰ তিৰিহাৰ (সক্‌খ্যা পচক্‌খান) ❀

দিবস-চৰিমম্‌ পচক্‌-খাঈ (পচক্‌-খামি); চউব্বিহম্‌ পি
আহাৰম্‌ তিৰিহম্‌ পি আহাৰম্‌, অসণম্‌, পাণম্‌, খাইমম্‌, সাইমম্‌,
অন্‌নথণা-ভোগেণম্‌, সহসা-গারেণম্‌, মহত্তরা-গারেণম্‌,
সৰব-সমাহি-বত্তিয়া-গারেণম্‌ বোসিৰঈ (বোসিৰামি)।

❀ পাণহাৰ (সক্‌খ্যা পচক্‌খান) ❀

পাণহাৰ দিবস-চৰিমম্‌ পচক্‌-খাঈ (পচক্‌-খামি)
অন্‌নথণা-ভোগেণম্‌, সহসা-গারেণম্‌, মহত্তরা-গারেণম্‌,
সৰব-সমাহি-বত্তিয়া-গারেণম্‌ বোসিৰঈ (বোসিৰামি)।

❁ दादा आदेश्वरजी ❁

दादा आदेश्वरजी दुर थी आव्यो, दादा दरिशन द्यो;
कोई आवे, हाथी घोडे, कोई आवे चढे पलाणे,
कोई आवे पग पाले, दादा ने दरबार.. हां हां दादाने दरबार;
दादा आदेश्वरजी.....(1)

शेठ आवे हाथी घोडे, राजा आवे चढे पलाणे;
हुँ आवुं पग पाले, दादा ने दरबार हां हां दादाने दरबार,
दादा आदेश्वरजी.....(2)

कोई मुके सोना रूपा, कोई मुके महोर;
कोई मुके, चपटी चोरवा, दादा ने दरबार हां हां दादाने दरबार,
दादा आदेश्वरजी(3)

शेठ मुके सोना रूपा, राजा मुके महोर,
हुँ मुकु चपटी चोरवा, दादा ने दरबार हां हां दादाने दरबार,
दादा आदेश्वरजी.....(4)

कोई मांगे कंचन काया, कोई मांगे आँख;
कोई मांगे चरणो नी सेवा दादा ने दरबार हां हां दादाने दरबार,
दादा आदेश्वरजी.....(5)

पांगलो मांगे कंचन काया, आंधलो मांगे आँख
हुँ मांगुं चरणो नी सेवा, दादा ने दरबार हां हां दादाने दरबार,
दादा आदेश्वरजी.....(6)

हीर विजय गुरू हीरलों ने, वीर विजय गुण गाय,
शत्रुंजय ना दर्शन करतां, आनंद अपार हां हां आनंद अपार,
दादा आदेश्वरजी(7)

❀ দাদা আদেশ্বরজী ❀

দাদা আদেশ্বরজী দুর থী আবে্যো, দাদা দরিশন দ্যো ;
কোঈ আবে, হাথী ঘোড়ে, কোঈ আবে চটে পলাণে,
কোঈ আবে পগ পালে, দাদা নে দরবার... হা হা দাদানে দরবার;
দাদা আদেশ্বরজী দুর থী আবে্যো দাদা দরিশন দ্যো (1)

শেঠ আবে হাথী ঘোড়ে, রাজা আবে চটে পলাণে ;
হুঁ আবু পগ পালে, দাদা নে দরবার হা হা দাদানে দরবার,
দাদা আদেশ্বরজী (2)

কোঈ মুকে সোনা রুপা, কোঈ মুকে মহোর ;
কোঈ মুকে, চপটী চোখা, দাদা নে দরবার হা হা দাদানে দরবার,
দাদা আদেশ্বরজী (3)

শেঠ মুকে সোনা রুপা, রাজা মুকে মহোর,
হু মুকু চপটী চোখা, দাদা নে দরবার হা হা দাদানে দরবার,
দাদা আদেশ্বরজী (4)

কোঈ মাংগে কন্চন কায়া, কোঈ মাংগে আঁখ ;
কোঈ মাংগে চরণো নী সেবা দাদা নে দরবার হা হা দাদানে
দরবার,

দাদা আদেশ্বরজী (5)

পাংগলো মাংগে কন্চন কায়া, আন্ধলো মাংগে আঁখ
হু মাংগু চরণো নী সেবা, দাদা নে দরবার হা হা দাদানে দরবার,
দাদা আদেশ্বরজী (6)

হীর বিজয় গুরু হীরলো নে, বীর বিজয় গুণ গায়,
শত্রুংজয় না দর্শন করতা, আনন্দ অপার হা হা আনন্দ অপার,
দাদা আদেশ্বরজী (7)

❁ ऋषभ जिणंद दयाल हो ❁

लागी रे...लागी रे...लागी रे...मोहे तुमसे लगन लागी

ऋषभ जिणंद दयाल हो मोहे लागी लगन वा (2)

लागी लगन वा, छोडी ना छुटे

जब तक घट मे हो प्राण हो मोहे लागी लगन वा....

ऋषभ जिणंद दयाल हो मोहे लागी लगन वा.....(1)

विमलाचल मंडण दुख खंडण

मंडण धर्म विशाल हो मोहे लागी लगन वा

ऋषभ जिणंद दयाल हो मोहे लागी लगन वा.....(2)

विषधर मोर चोर कामिजन

दर्शन कर निहाल हो मोहे लागी लगन वा

ऋषभ जिणंद दयाल हो मोहे लागी लगन वा.....(3)

हुं अनाथ तु त्रिभुवन नाथ

कर मोरी संभाल हो मोहे लागी लगन वा

ऋषभ जिणंद दयाल हो मोहे लागी लगन वा.....(4)

आतम आनंद कंद के दाता

त्राता परम दयाल हो मोहे लागी लगन वा

ऋषभ जिणंद दयाल हो मोहे लागी लगन वा.....(5)

লাগী লগন বা, ছোড়ী না ছুটে

মন্ডগ ধর্ম বিশাল হো মোহে লাগী লগন বা

দর্শন কর নিহাল হো মোহে লাগী লগন বা

কর মোরী সম্ভাল হো মোহে লাগী লগন বা

ব্রাতা পরম দয়াল হো মোহে লাগি লগন বা

❀ सिद्धाचल नो वासी प्यारो लागे मोरा ❀

सिद्धाचल नो वासी प्यारो लागे मोरा राजीदा,
विमलाचल नो वासी प्यारो लागे मोरा राजीदा...

ईण रे डुंगरीयामा झीणी झीणी कोरणी,
उपर शिखर बिराजे मोरा राजीदा, सिद्धाचल.....(1)

काने कुंडल माथे मुगट बिराजे,
बाहे बाजुबंध छाजे मोरा राजीदा, सिद्धाचल.....(2)

चउ मुख बिंब अनुपम छाजे,
अद्भुत दीठे दुःख भांजे मोरा राजीदा, सिद्धाचल.....(3)

चुवा चुवा चंदन और अगरजा,
केसर तिलक बिराजे मोरा राजीदा, सिद्धाचल.....(4)

ईण रे गिरि साधु अनंता सिद्ध्या,
कहेता पार ना आवे मोरा राजीदा, सिद्धाचल.....(5)

ज्ञान विमल प्रभु एणी पेरे बोले,
आ भव पार उतारो मोरा राजीदा, सिद्धाचल.....(6)

❀ সিদ্ধাচল নো বাসী প্যারো লাগে মোরা ❀

সিদ্ধাচল নো বাসী প্যারো লাগে মোরা রাজীন্দা,
বিমলাচল নো বাসী প্যারো লাগে মোরা রাজীন্দা.....

ঈগ রে ডুংগরীয়ামা বীণী বীণী কোরনী,
উপর শিখর বিরাজে মোরা রাজীন্দা, সিদ্ধাচল (1)

কানে কুন্ডল মাথে মুগট বিরাজে,
বাহে বাজুবন্ধ ছাজে মোরা রাজীন্দা, সিদ্ধাচল (2)

চউ মুখ বিন্ধ অনুপম ছাজে,
অদ্ভুত দীঠে দুঃখ ভান্জে মোরা রাজীন্দা, সিদ্ধাচল (3)

চুবা চুবা চন্দন ঔর অগরজা,
কেসর তিলক বিরাজে মোরা রাজীন্দা, সিদ্ধাচল (4)

ঈগ রে গিরি সাধু অনন্তা সিদ্ধ্যা,
কহেতা পার না আবে মোরা রাজীন্দা, সিদ্ধাচল (5)

জ্ঞান বিমল প্রভু এণী পেরে বোলে,
আ ভব পার উতারো মোরা রাজীন্দা, সিদ্ধাচল (6)

❁ मारो मुजरो ल्योने राज ❁

मारो मुजरो ल्योने राज साहिब शांति सलुणा
अचिराजीना नंदन तोरे, दरिसण हेते आव्यो;
समकित रीझ करो ने स्वामी, भक्ति भेटणुं लाव्यो
मारो मुजरो ल्योने राज.....(1)

दुःखभंजन छे बिरुद तुमाखं, अमने आशा तुमारी;
तुमे नीरागी थईने छूटो, शी गति होंशे अमारी
मारो मुजरो ल्योने राज.....(2)

कहेशे लोक न ताणी कहेवुं, एवडुं स्वामी आगे;
पण बालक जो बोली न जाणे, तो किम व्हालो लागे
मारो मुजरो ल्योने राज.....(3)

म्हारे तो तुं समरथ साहिब, तो किम ओछु मानु;
चिंतामणी जेणे गांठे बांध्यु, तेहने काम किश्यानुं
मारो मुजरो ल्योने राज.....(4)

अध्यातम रवि उग्यो मुज घट, मोहतिमिर हर्यु जुगते;
विमलविजय वाचकनो सेवक, 'राम' कहे शुभ भगते
मारो मुजरो ल्योने राज.....(5)

❀ মারো মুজরো ল্যোনে রাজ ❀

মারো মুজরো ল্যোনে রাজ সাহিব শান্তি সলুণা
অচিরাজীনা নন্দন তোরে, দরিসণ হেতে আব্যো;
সমকিত রীঝ করো নে স্বামী, ভক্তি ভেটণু লাব্যো,
মারো মুজরো ল্যোনে রাজ.... (1)

দুঃখভন্জন ছে বিরুদ তুমারু, অমনে আশা তুমারী;
তুমে নীরাগী থঈনে ছুটো, শী গতি হোশে অমারী,
মারো মুজরো ল্যোনে রাজ (2)

কহেশে লোক ন তাণী কহেবু, এবডু স্বামী আগে ;
পণ বালক জো বোলী ন জাণে, তো কিম ব্হালো লাগে,
মারো মুজরো ল্যোনে রাজ..... (3)

ম্হারে তো তু সমরথ সাহিব, তো কিম ওছু মানু;
চিন্তামণী জেণে গাঠে ব্রান্ধ্যু, তেহনে কাম কিশ্যানু,
মারো মুজরো ল্যোনে রাজ..... (4)

অধ্যাতম রবি উগ্যো মুজ ঘট, মোহতিমির হর্যু জুগতে ;
বিমলবিজয় বাচকনো সেবক, ‘রাম’ কহে শুভ ভগতে,
মারো মুজরো ল্যোনে রাজ..... (5)

❀ शांति जिनेश्वर साचो साहिब ❀

शांति जिनेश्वर साचो साहिब,
शांतिकरण ईण कलि में हो जिनजी
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें
ध्यान धरुं पल पल में साहिबजी
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें.....(1)

भवमां भमता में दरिशन पायो,
आशा पूरो एक पल में हो जिनजी
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें.....(2)

निर्मल ज्योत वदन पर सोहे,
निकस्यो ज्युं चंद बादल में हो जिनजी
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें.....(3)

मेरो मन तुंम साथे लीनो,
मीन वसे ज्युं जल में हो जिनजी
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें.....(4)

जिनरंग कहे प्रभु शांति जिनेश्वर,
दीठोजी देव सकल में हो जिनजी
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें.....(5)

❁ শান্তি জিনেশ্বর সাচো সাহিব ❁

শান্তি জিনেশ্বর সাচো সাহিব,
শান্তিকরণ ঈন কলি মে হো জিনজী
তু মেরা মনমে তু মেরা দিলমে
ধ্যান ধরু পল পল মে সাহিবজী,
তু মেরা মনমে তু মেরা দিলমে (1)

ভবমা ভমতা মে দরিশন পায়ে,
আশা পুরো এক পল মে হো জিনজী,
তু মেরা মনমে তু মেরা দিলমে (2)

নির্মল জ্যোত বদন পর সোহে,
নিকসো জ্যু চন্দ বাদল মে হো জিনজী,
তু মেরা মনমে তু মেরা দিলমে.....(3)

মেরো মন তুম সাথে লীনো,
মীন বসে জ্যু জল মে হো জিনজী,
তু মেরা মনমে তু মেরা দিলমে.....(4)

জিনরংগ কহে প্রভু শান্তি জিনেশ্বর,
দীঠোজী দেব সকল মে হো জিনজী,
তু মেরা মনমে তু মেরা দিলমে (5)

❀ अरजी सुणलो हो नेम नगीना ❀

अरजी सुणलो हो नेम नगीना, राजुलना भरथार,
भजलो भजलो हो जगना प्राणी भजो सदा किरतार...
अरजी सुणलो हो नेम नगीना.....(1)

जान लईने आव्या त्यारे, हर्ष तनो नहीं पार,
पशु तनो पोकार सुणीने, पाछा वल्या तत्काल
अरजी सुणलो हो नेम नगीना.....(2)

राजुल गोखे राह निरखती, रडती आंसु धार
पियुजी मारा केम रिसाया, मुज हैयाना हार
अरजी सुणलो हो नेम नगीना.....(3)

मन तलसातुं तन तलसातुं तलसे राजुल नार
राज वैभवने ठोकर मारी, लीधो संयम भार
अरजी सुणलो हो नेम नगीना.....(4)

नेम बन्या तीर्थकर स्वामी, बावीशमा जिनराज,
माया छोडी मनडु साध्यु नमो नमो शिरताज
अरजी सुणलो हो नेम नगीना.....(5)

नेम निरंजन नाथ हमारा, अम नयनो ना तारा,
बालक तुम भक्तिने माटे, रडतो आंसु धार
अरजी सुणलो हो नेम नगीना.....(6)

परदुःख भंजन नाथ निरंजन, जगपालक किरतार,
ज्ञानविमल कहे, भवसिंधुथी मुजने पार उतार
अरजी सुणलो हो नेम नगीना.....(7)

❀ অরজী সুণলো হো নেম নগীনা ❀

অরজী সুণলো হো নেম নগীনা, রাজুলনা ভরথার,
ভজলো ভজলো হো জগনা প্রাণী ভজো সদা কিরতার.....
অরজী সুণলো হো নেম নগীনা.....(1)

জান লঈনে আব্যা ত্যারে, হর্ষ তনো নহী পার,
পশু তণো পোকার সুণীনে, পাছা বল্যা তত্কালা
অরজী সুণলো হো নেম নগীনা..... (2)

রাজুল গোখে রাহ নিরখতী, রডতী আঁসু ধার
পিয়ুজী মারা কেম রিসায়া, মুজ হৈয়ানা হার
অরজী সুণলো হো নেম নগীনা..... (3)

মন তলসাতু তন তলসাতু তলসে রাজুল নার
রাজ বৈভবনে ঠোকর মারী, লীধো সঁয়ম ভার
অরজী সুণলো হো নেম নগীনা.....(4)

নেম ব্রন্যা তীর্থঙ্কর স্বামী, বাবীশমা জিনরাজ,
মায়া ছোডী মনডু সাধ্য নমো নমো শিরতাজ
অরজী সুণলো হো নেম নগীনা..... (5)

নেম নিরনজন নাথ হমারা, অম নয়নো না তারা,
বালক তুম ভক্তিনে মাটে, রডতো আঁসু ধার
অরজী সুণলো হো নেম নগীনা (6)

পরদুঃখ ভনজন নাথ নিরনজন, জগপালক কিরতার,
জ্ঞানবিমল কহে, ভবসিঙ্খুখী মুজনে পার উতার
অরজী সুণলো হো নেম নগীনা..... (7)

❀ अखियां हरखन लागी ❀

अखियां हरखन लागी
हमारी अखियां हरखन लागी
दरिशन देखत पार्श्व जिणंद को
भाग्य दशा अब जागी
अखियां हरखन लागी.....

अकल अरूपी और अविनाशी
जग मे तु ही तुही निरागी
सूरत सुंदर अचरिज एही
जग जन ने करे रागी
अखियां हरखन लागी.....

शरणागत प्रभु तुज पद पंकज
सेवना मुज मति मुज मति जागी
लीला लहेरे दे निज पदवी
तुम सम को नही त्यागी
अखियां हरखन लागी.....

वामा नंदन चंदन नी परे
शीतल तु हि तु सौभागी
ज्ञान विमल प्रभु ध्यान धरंता
भव भय भावठ भांगी
अखियां हरखन लागी.....

❀ অখিয়া হরখন লাগী ❀

অখিয়া হরখন লাগী
হমারী অখিয়া হরখন লাগী
দরিশন দেখত পার্শ্ব জিনন্দ কো
ভাগ্য দশা অব্ জাগী.....
অখিয়া হরখন লাগী

অকল অরুপী ঔর অবিনাশী
জগ মে তু হী তুহী নিরাগী
সূরত সুন্দর অচরিজ এহী
জগ জন নে করে রাগী
অখিয়া হরখন লাগী

শরণাগত প্রভু তুজ পদ পংকজ
সেবনা মুজ মতি মুজ মতি জাগী
লীলা লহেরে দে নিজ পদবী
তুম সম কো নহী ত্যাগী
অখিয়া হরখন লাগী

বামা নন্দন চন্দন নী পরে
শীতল তু হি তু সৌভাগী
জ্ঞান বিমল প্রভু ধ্যান ধরন্তা
ভব ভয় ভাবঠ ভাংগী
অখিয়া হরখন লাগী

❀ दीन दुःखियानो तुं छे बेली ❀

दीन दुःखियानो तुं छे बेलि तुं छे तारणहार,
तारा महिमानो नहीं पार,
राजपाटने वैभव छोडी, छोडी दीधो संसार
तारा महिमानो नहीं पार.....(1)

चंडकोशियो डसियो ज्यारे, दुधनी धारा पगथी नीकले;
विषने बदले दूध जोईने, चंडकोशीयो, आव्यो शरणे,
चंडकोशियाने ते तारी, कीधो घणो उपकार
तारा महिमानो नहीं पार.....(2)

कानमां रवीला ठोक्कां ज्यारे, थई वेदना प्रभुने भारे
तोये प्रभुजी शांत विचारे, गोवालनो नहि वांक लगावे,
क्षमा आपीने, ते जीवानो, तारी दीधो संसार
तारा महिमानो नहीं पार.....(3)

महावीर महावीर गौतम पुकारे, आंखेथी आंसुनी धारा वहावे;
क्यां गया एकला छोडी मुजने, हवे नथी कोई जगमां मारे,
पश्चात्ताप करता करता उपन्यु केवलज्ञान
तारा महिमानो नहीं पार.....(4)

ज्ञान विमल गुरू वयणे आजे, गुण तमारा गावा काजे,
थई सुकानी तुं प्रभु आवे, भवजल नैया पार लगावे,
अरज अमारी, दिलमां धारी वंदु वारंवार
तारा महिमानो नहीं पार.....(5)

❀ দীন দুঃখিয়ানো তু ছে বেলী ❀

দীন দুঃখিয়ানো তু ছে বেলি তু ছে তারণহার,
তারা মহিমানো নহী পার,
রাজপাটনে বৈভব ছোড়ী, ছোড়ী দীধো সন্সার
তারা মহিমানো নহী পার (1)

চন্ডকোশিয়ো ডসিয়ো জ্যারে, দুধনী ধারা পগখী নীকলে;
বিষনে বদলে দুধ জোঈনে, চন্ডকোশিয়ো, আব্যো শরণে,
চন্ডকোশীয়ানে তে তারী, কীধো ঘণো উপকার
তারা মহিমানো নহী পার (2)

কানমা খীলা ঠোক্যা জ্যারে, থঈ বেদনা প্রভুনে ভারে
তোয়ে প্রভুজী শান্ত বিচারে, গোবালনো নহি বাক লগারে,
ক্ষমা আপীনে, তে জীবোনো, তারী দীধো সন্সার
তারা মহিমানো নহী পার..... (3)

মহাবীর মহাবীর গৌতম পুকারে, আঁখেখী আঁসুনী ধারা বহাবে ;
ক্যা গয়া একলা ছোড়ী মুজনে, হবে নখী কোঈ জগমা মারে,
পশ্চাত্তাপ করতা করতা উপন্য কেবলজ্ঞান
তারা মহিমানো নহী পার..... (4)

জ্ঞান বিমল গুরু বয়ণে আজে, গুণ তমারা গাবা কাজে,
থঈ সুকানী তু প্রভু আবে, ভবজল নৌয়া পার লগাবে,
অরজ অমারী, দিলমা ধারী বন্দু বারম্বার
তারা মহিমানো নহী পার..... (5)

❀ जिन तेरे चरण की ❀

जिन तेरे चरण की शरण ग्रह
हृदय कमल में ध्यान धरत हू,
शिरतुज आण वहुं...जिन तेरे....(1)

तुम सम खोल्यो देव खलक में,
पेरव्यो नहीं कबहुं... जिन तेरे...(2)
तेरे गुण की जपु जपमाला,
अहो निश पाप दहुं... जिन तेरे... (3)

मेरे मन की तुम सब जानो,
क्या मुख बहोत कहु... जिन तेरे...(4)
कहे जस विजय करो त्यों साहिब,
ज्युं भव दुःख न लहुं... जिन तेरे... (5)

❀ জিন তেরে চরণ কী ❀

জিন তেরে চরণ কী শরণ গ্রহ
হৃদয় কমল মে ধ্যান ধরত হু,
শিরতুজ আগ বহ.... জিন তেরে.... (1)

তুম সম খোল্যো দেব খলক মে,
পেখ্যো নহী কব্হ..... জিন তেরে.....(2)
তেরে গুণ কী জপু জপমালা,
অহো নিশ পাপ দহ..... জিন তেরে..... (3)

মেরে মন কী তুম সব জানো,
ক্যা মুখ বহুত কহ.... জিন তেরে....(4)
কহে জস বিজয় করো ত্যু সাহিব,
জ্যু ভব দুঃখ ন লহ.... জিন তেরে.... (5)

❀ તમે મહાવિદેહે જઈને કહેજો ચાંદલિયા ❀

તમે મહાવિદેહે જઈને કહેજો ચાંદલિયા (૨),
સીમંધર તેડાં મોકલે,
તમે ભરતક્ષેત્રના દુઃસ્વ, કહેજો ચાંદલિયા (૨),
સીમંધર તેડાં મોકલે.....(1)

અજ્ઞાનતા અહીં છવાઈ ગઈ છે,
તત્ત્વોની વાતો ભૂલાઈ ગઈ છે;
હાં રે એવા આત્માના દુઃસ્વ મારા, કહેજો ચાંદલિયા (૨),
સીમંધર તેડાં મોકલે.....(2)

પુદ્ગલના મોહમાં ફસાઈ ગયો છું
કર્મોની જાલમાં જકડાઈ ગયો છું;
હાં રે એવા કર્મોના દુઃસ્વ મારા, કહેજો ચાંદલિયા (૨),
સીમંધર તેડાં મોકલે.....(3)

મારું ન હતું તેણે મારું કરી માણ્યું,
મારું હતું તેને ના રે પિછાણ્યું;
હાં રે એવા મુર્ચ્ચતાના દુઃસ્વ મારા, કહેજો ચાંદલિયા (૨),
સીમંધર તેડાં મોકલે.....(4)

❀ তমে মহাবিদেহে জঙ্গনে কহেজো চান্দলিয়া ❀

তমে মহাবিদেহে জঙ্গনে কহেজো চান্দলিয়া(২)
সীমন্ধর তেড়া মোকলে,
তমে ভরতক্ষেত্রনা দুঃখ, কহেজো চান্দলিয়া(২)
সীমন্ধর তেড়া মোকলে (1)

অজ্ঞানতা অহী ছবাই গই ছে,
তত্ত্বেনী বাতো ভুলাই গই ছে ;
হা রে এবা আত্মানা দুঃখ মারা, কহেজো চান্দলিয়া(২)
সীমন্ধর তেড়া মোকলে (2)

পুদ্গলনা মোহমা ফসাই গয়ো ছু
কমেনী জালমা জকডাই গয়ো ছু;
হা রে এবা কর্মোনা দুঃখ মারা, কহেজো চান্দলিয়া(২)
সীমন্ধর তেড়া মোকলে (3)

মারু ন হতু তেনে মারু করী মান্যু,
মারু হতু তেনে না রে পিছাণ্যু ;
হা রে এবা মুর্খতানা দুঃখ মারা, কহেজো চান্দলিয়া(২)
সীমন্ধর তেড়া মোকলে (4)

सीमंधर-सीमंधर हृदयमां धरतो,
प्रत्यक्ष दरिशननी आशा हुं करतो;
हां रे एवा वियोगना दुःख मारा, कहेजो चांदलिया (२)
सीमंधर तेडां मोकले.....(5)

संसारि सुख मने कारमुं ज लागे,
प्रभु तुम विण वात कहुं कोनी पासे
हां रे एवा वीरविजयना दुःख कहेजो चांदलिया (२),
सीमंधर तेडां मोकले.....(6)

चैत्यवंदन

❁ श्री आदिनाथ भगवान ❁

आदिदेव अलवेसरु, विनीतानो राय;
नाभिराया कुल मंडणो, मरूदेवा माय
पांचसें धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल;
चौरासी लाख पूर्वनुं, जस आयु विशाल
वृषभ लंछन जिन वृषधरु ए, उत्तम गुणमणी खाण;
तस पद, पद्म सेवन थकी, लहीए अविचल ठाण ।

সীমন্ধর-সীমন্ধর হৃদয়মা ধরতো,
প্রত্যক্ষ দরিশননী আশা হু করতো;
হা রে এবা বিয়োগনা দুঃখ মারা, কহেজো চান্দলিয়া(২),
সীমন্ধর তেড়া মোকলে (5)

সনসারী সুখ মনে কারমু জ লাগে,
প্রভু তুম বিণ বাত কহু কোনী পাসে
হা রে এবা বীরবিজয়না দুঃখ কহেজো চান্দলিয়া(২)
সীমন্ধর তেড়া মোকলে (6)

চৈতন্যবন্দন

❀ শ্রী আদিনাথ ভগবান ❀

আদিদেব অলবেসরু, বিনীতানো রায়;
নাভিরায়া কুল মন্ডণো, মরুদেবা মায়,
পাঁচসে ধনুষনী দেহড়ী, প্রভুজী পরম দয়াল;
চোরাসী লাখ পূর্বনু, জস আয়ু বিশাল,
বৃষভ লন্ছন জিন বৃষধরু এ, উত্তম গুণমণী খাগ;
তস পদ, পদ্ম সেবন থকী, লহীএ অবিচল ঠাগ।

❁ શ્રી શાંતિનાથ ભગવાન ❁

શાંતિ જિનેશ્વર સોલમા, અચિરાસુત વંદો;
વિશ્વસેન કુલ નભોમણિ, ભવિજન સુરવ કંદો
મૃગ લંછન જિન આઝરું, લાઝ વરસ પ્રમાણ;
હત્થિનાઝર નયરી ધણી, પ્રભુજી ગુણ મણિ સ્વાણ
ચાલીશ ધનુષ્યની દેહડી, સમચોરસ સંઠાણ;
વદન પદ્મ જ્યું ચંદલો, દીઠે પરમ કલ્યાણ ।

❁ શ્રી નેમિનાથ ભગવાન ❁

નેમિનાથ બાવીસમા, શિવાદેવી માય;
સમુદ્રવિજય પૃથ્વીપતિ, જે પ્રભુના તાય
દશ ધનુષ્યની દેહડી, આયુ વરસ હજાર;
શંઝ લંછનધર સ્વામીજી, તજી રાજુલ નાર
શૌરીપુરી નયરી ભલી ં, બ્રહ્મચારી ભગવાન;
જિન ઉત્તમ પદપદ્મને, નમતા અવિચલ ઠાણ ।

❀ শ্রী শান্তিনাথ ভগবান ❀

শান্তি জিনেশ্বর সোলমা, অচিরাসুত বন্দো;
বিশ্বসেন কুল নভোমণি, ভবিজন সুখ কন্দো,
মৃগ লন্ছন জিন আউখু, লাখ বরস প্রমাণ;
হথিণাউর নয়রী ধনী, প্রভুজী গুণ মণি খাণ,
চালীশ ধনুষ্যনী দেহডী, সমচোরস সন্ঠাণ;
বদন পদ্ম জ্যু চন্দলো, দীঠে পরম কল্যাণ।

❀ শ্রী নেমিনাথ ভগবান ❀

নেমিনাথ বাবীসমা, শিবাদেবী মায়;
সমুদ্রবিজয় পৃথ্বীপতি, জে প্রভুনা তায়,
দশ ধনুষ্যনী দেহডী, আয়ু বরস হজার;
শঙ্খ লন্ছনধর স্বামীজী, তজী রাজুল নার,
শৌরীপুরী নয়রী ভলী এ, ব্রহ্মচারী ভগবান ;
জিন উত্তম পদপদ্মনে, নমতা অবিচল ঠাণ।

❁ श्री पार्श्वनाथ भगवान ❁

जय चिंतामणी पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी;
अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी
प्रभु नामे आनन्द कंद, सुख संपत्ति लहीये;
प्रभु नामे भव भयतणां, पातिक सवी दहीए
ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करी, जपीए पारसनाम;
विष अमृत थई परिणमे, लहीए अविचल ठाम

❁ श्री महावीर स्वामी ❁

सिद्धार्थ सुत वंदिये, त्रिशलानो जायो;
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो,
मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया;
बहोंतेर वरसनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया
खिमाविजय जिनराजनो, ए उत्तम गुण अवदात;
सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात

❀ শ্রী পার্শ্বনাথ ভগবান ❀

জয় চিন্তামণী পার্শ্বনাথ, জয় ত্রিভুবন স্বামী;
অষ্ট কৰ্ম রিপু জীতীনে, পন্চমী গতি পামী।
প্রভু নামে আনন্দ কন্দ, সুখ সম্পত্তি লহীয়ে ;
প্রভু নামে ভব ভয়তণা, পাতিক সবি দহীএ।
ওঁ হ্রীঁ বর্ণ জোড়ী করী, জপীএ পারসনাম;
বিষ অমৃত থষ্ট পরিণমে, লহীএ অবিচল ঠাম।

❀ শ্রী মহাবীর স্বামী ❀

সিদ্ধার্থ সুত বন্দিয়ে, ত্রিশলানো জায়ো;
ক্ষত্রিয়কুণ্ডমা অবতর্যো, সুর নরপতি গায়ো,
মৃগপতি লন্ছন পাউলে, সাত হাথনী কায়া;
ব্রহ্মহোতের বরসনু আউখু, বীর জিনেশ্বর রায়া,
খিমাবিজয় জিনরাজনো, এ উত্তম গুণ অবদাত;
সাত বোলখী বর্ণব্যো, পদ্মবিজয় বিখ্যাত।

थोय

❁ पार्श्वनाथ भगवान थोय ❁

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो ल्हावो लीजीए;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु(1)

दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुण नीला;
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचनवर्ण लह्या .(2)

आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हैडे राखीयो;
तेहनो रस जेणे चाखियो, ते हुवो शिवसुख साखीयो(3)

धरणेन्द्रराय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती;
सहु संघना संकट चुरती, नयविमलना वांछित पूरती(4)

থোয়

পাৰ্শ্বনাথ ভগবান থোয়

শঙ্খেশ্বৰ পাসজী পূজীএ, নৱভবনো ল্হাবো লীজীএ ;
মনবান্ছিত পূৰণ সূৰতৰু, জয় বামাসুত অলবেসৰু (1)

দোয় ৰাতা জিনবৰ অতিভলা, দোয় ধোলা জিনবৰ গুণ নীলা ;
দোয় নীলা দোয় শামল কহ্যা, সোলে জিন কন্চনবৰ্ণ লহ্যা
..... (2)

আগম তে জিনবৰ ভাখীয়ো, গণধৰ তে হৈডে ৰাখীয়ো;
তেহনো ৰস জেগে চাখীয়ো, তে হুবো শিবসুখ সাখীয়ো ।..... (3)

ধৰণেন্দ্ৰৰায় পদ্মাবতী, প্ৰভু পাৰ্শ্বতণা গুণ গাবতী;
সহ সংঘনা সংকট চূৰতী, নয়বিমলনা বান্ছিত পূৰতী..... (4)

❁ आदिनाथ भगवान थोय ❁

प्रह ऊठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत,
प्रभु बेठा सोहे, समवसरण भगवंत ;
त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाले ईन्द्र,
जिनना गुण गावे, सुरनर नारीना वृंद(1)

बार पर्षदा बेसे, ईन्द्र ईन्द्राणी राय,
नव कमल रचे सुर, तिहां ठवता प्रभुपाय;
देव दुंदुभि वाजे, कुसुमवृष्टि बहु हुंत,
एवा जिन चोवीस, पूजो एकण चित्त(2)

जिन जोजन भूमि, वाणीनो विस्तार,
प्रभु अर्थ प्रकाशे, रचना गणधर सार;
सो आगम सुणता छेदीजे गति चार,
जिन वचन वरवाणी, लीजे भवनो पार(3)

जक्ष गोमुख गिरूवो, जिननी भक्ति करेव,
तिहां देवी चकेसरी, विघ्न क्रोड हरेव;
श्री तपगच्छ नायक, विजयसेन सूरिराय,
तस केरो श्रावक, ऋषभदास गुण गाव(4)

❀ আদিনাথ ভগবান থোয় ❀

প্রহ উঠী বন্দু, ঋষভদেব গুণবন্ত,
প্রভু বেঠা সোহে, সমবসরণ ভগবন্ত;
ত্রণ ছত্র বিরাজে, চামর ঢালে ইন্দ্র,
জিননা গুণ গাবে, সুরনর নারীনা বৃন্দ (1)

বার পর্দা বেসে, ইন্দ্র ইন্দ্রাণী রায়,
নব কমল রচে সুর, তিহা ঠবতা প্রভুপায়;
দেব দুন্দুভি বাজে, কুসুমবৃষ্টি বহু হন্ত,
এবা জিন চোবীস, পূজো একগ চিত্ত (2)

জিন জোজন ভূমি, বাণীনো বিস্তার,
প্রভু অর্থ প্রকাশে, রচনা গণধর সার;
সো আগম সুণতা ছেদীজে গতি চার,
জিন বচন বখাণী, লীজে ভবনো পার (3)

জঙ্ঘ গোমুখ গিরুবো, জিননী ভক্তি করেব,
তিহা দেবী চকেসরী, বিঘ্ন ক্রোড হরেব;
শ্রী তপগচ্ছ নায়ক, বিজয়সেন সুরিরায়,
তস কেরো শ্রাবক, ঋষভদাস গুণ গায়। (4)

सज्झाय

❀ जगत है स्वार्थ का साथी ❀

जगत है स्वार्थ का साथी, समज ले कौन है अपना
ये काया काचका कुंभा, नाहक तुं देखके फूलता,
पलकमें फूट जावेगा, पत्ता ज्युं डालसे गिरता जगत.....-१

मनुष्यकी एसी जींदगानी, अभी तु चेत अभिमानी,
जीवनका क्या भरोसा है ? करी ले धर्मकी करणी जगत.....०२

खजाना, मालने मिलकत, तुक्यु कहेतां मेरा मेरा ?
ईहां सब, छोड जाना है, न आवे साथ कुछ तेरा जगत.....०३

कुटुंब-परिवार-सुत-दारा, सुपन सम देख जग सारा,
नीकल जब हंस जावेगा, उसी दिन है सभी न्यारा जगत....०४

तरे संसार सागर को, जपे जो नाम जिनवर को,
कहे स्वांति वही प्राणी, हटावे कर्म जंजीर को जगत.....०५

❀ बेर बेर नहीं आवे ❀

बेर बेर नहीं आवे, अवसर बेर बेर नहीं आवे
ज्युं जाणे त्युं करले भलाई, जनम जनम सुख पावे अव ०१

तन-धन-जोबन सबही जूठो, प्राण पलकमें जावे अव ०२

जब तन छूटे धन कौन कामको, कायकुं कृपण कहावे अव ०३

जा के दिलमें साच बसत है, ताकु जुठ न भावे अव ०४

आनंदघन प्रभु चलत पंथमें, समर समर गुण गावे अव ०५

সন্ধ্যায়

❀ জগত হৈ স্বার্থ কা সাথী ❀

জগত হৈ স্বার্থকা সাথী, সমজ লে কৌন হৈ অপনা,
য়ে কায়া কাচকা কুম্ভা, নাহক তু দেখকে ফুলতা,
পলকমে ফুট জাবেগা, পত্তা জ্যু ডালসে গিরতা, জগত ..০১
মনুষ্যকী এসী জীন্দগানী, অভী তু চেত অভীমানী,
জীবনকা ক্যা ভরোসা হৈ? কহী লে ধর্মকী করণী, জগত .. ০২
খজানা, মালনে মিলকত, তুক্য কহেতা মেরা মেরা?
ঈহা সব, ছোড় জানা হৈ, ন আবে সাথ কুছ তেরা, জগত ০৩
কুটুম্ব-পরিবার-সুত-দারা, সুপন সম দেখ জগ সারা,
নীকল জব হন্স জাবেগা, উসী দিন হৈ সভী ন্যারা, জগত..০৪
তরে সন্সার সাগর কো, জপে জো নাম জিনবর কো,
কহে খান্তি বহী প্রাণী, হটাবে কর্ম জনজীর কো। জগত..... ০৫

❀ বের বের নহী আবে ❀

বের বের নহী আবে, অবসর বের বের নহী আবে,
জ্যু জানে ত্যু করলে ভলাঙ্গি, জনম জনম সুখ পাবে ...অব০১
তন-ধন-জোবন সবহী জুঠো, প্রাণ পলকমে জাবে ...অব০২
জব তন ছুটে ধন কৌন কামকো, কায়কু কৃপণ কহাবে...অব০৩
জা কে দিলমে সাচ বসত হৈ, তাকু জুঠ ন ভাবে ...অব০৪
আনন্দধন প্রভু চলত পন্থমে, সমর সমর গুণ গাবে...অব০৫

NOTES

जिनाला विरुद्ध कुछ भी लिखा गया
हो तो मिच्छामि दुक्कडं